इस्लामी शाबर तंत्र

नक्श-ए-इस्माईल जोगी

मौलवी लतीफ खान

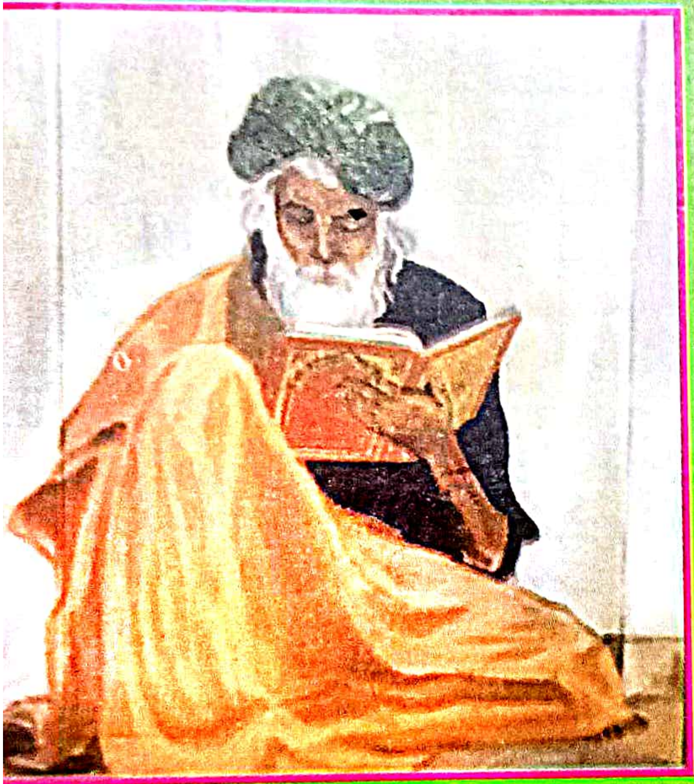

असली मीरास

इस्लामी तन्त्र टोटके व इस्लामिक अमल

इस्माईल जोगी का इस्लामी शाबर तन्त्र

अनेक वर्षों से इस्लाम धर्म के तंत्र स्वरूप से रूबरू होने के पश्चात् उसके अथाह सागर से कुछ मोती चुनकर इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये हैं। इसमें दिये गये एक-एक मन्त्र के एक-एक अलफाज़ में अनोखी ताकत भरी हुई है। इसमें कुरान-ए-पाक की आयत-ए-शरीफ और कलमें आदि भी दिये गये हैं। कुछ ऐसे इस्लामिक शाबर इसमें हैं जिनमें अनेक बीमारियों, बलाओं और आसेब (भूत-प्रेत) से छुटकारा पाने की अज़ीम ताकत है।

इन शाबर मन्त्र और अमल की सफलता के लिए जरूरी है मानसिक और शारीरिक शुद्धता। इस्माईल जोगी के इस तन्त्र से अनेक शक्तियों और सिद्धियों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। अनुभवी मौलवियों का कहना है जब सारी हिकमतें और दवायें नासाज हो जाती हैं, तब इन इस्लामी शाबर में की गई दुहाई ही कारसाज सिद्ध होती है। इन शाबर मन्त्रों को पढ़ने वाले की हिफाजत खुदा खुद करता है। यह इस्माईल जोगी की सौगात है। इस नेमत से अनगिनत पाठकों को फायदा हुआ है।

निवेदन (खास बात)

भारत के सूफी, फकीरों और मौलवियों के साथ अनेकों साल बिताकर ही इस इस्लामी शाबर तन्त्र के अमल को आप सब पाठकों हेतु यहाँ प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक के अनेकों प्रयोग मेरे द्वारा प्रयोग किये गये हैं और अनेक प्रयोग मेरे पीर के अनुभूत हैं, जो उनकी अनुमति से प्रकट किये गये हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य है कि जनमानस इस पुस्तक के द्वारा अपनी समस्याओं को दूर कर सके व मनोकामनायें पूरी करके रूहानी क्षेत्र में आगे बढ़ सके।

इस किताब का मकसद इस्लामी शाबर तन्त्र की जानकारी देना मात्र है, यदि आप पुस्तक में वर्णित किसी प्रयोग को करना चाहें तो अपने क्षेत्र के किसी अनुभवी आमिल या मौलवी के मार्गदर्शन में ही प्रयोग करें। केवल पुस्तक के आधार पर असावधानीवश कोई भूल या गलती होने पर उल्टा परिणाम भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार से लेखक, प्रकाशक या मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। इस पुस्तक में दिए गये अमल का अदब-ओ-अहतराम जरूरी है। हमारा मानना है कि अल्लाह की मर्जी के बिना एक पत्ता भी हिल नहीं सकता, अतः जो भी कार्य करें, अल्लाह का नाम लेकर ही करें। जब अल्लाह निगेहबान होगा तो हमारी सारी कोशिश जरूर कामयाब होगी।

किताब को साफ-सुथरा रखें। इसके लिए एक रेशमी काला कपड़ा लेकर उसकी थैली बनाकर उसमें रखने से इसके अमल-ओ-तरकीबें महफूज़ रहेंगी। अपनी किताब और किसी को न दें। किसी दूसरे को प्रयोग देखना व सीखना हो तो वह अपनी किताब अलग से लेकर इस्तेमाल करें।

— लेखक

इंतिबाह - इस किताब में दिये गये इस्माईल जोगी के अमल असली हैं। इस किताब के किसी भी हिस्से को कोई भी नाशिर, कातिब या मुसन्निफ़ नकल करने की कोशिश न करे। ऐसा करने पर अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहे। किताब की किसी भी तरह की नकल हमारे इदारा की तौहीन समझी जायेगी।

इस्माईल जोगी

का

इस्लामी शाबर तन्त्र

नक़्श-ए-इस्माईल जोगी

इस्लामी तन्त्र टोटके व इस्लामिक अमल

اسماعیل جوگی کا اسرار.
نقش اور اسلامی عمل

लेखक

मौलवी लतीफ खान

अंजुमन-ए-पुर-असरार

इस्लामिक हिंदवी इल्म-ए-नुजूम इदारा

मालदा (प०बं०)

इस्माईल जोगी का रूहानी पैगाम

अस्सलाम वालेकुम हाजरात!

रूहानी अमलियात में बंदिश के अमाल अपना मुख्तलिफ़ मुकाम रखते हैं। बाज मुकाम ऐसे हैं जहाँ बंदिश को बेहतरीन नेक मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाता है वरना ज्यादातर बंदिश के अमलियात किसी से बदला लेने या शर अंगेजी के लिये ही किये जाते हैं। जब तक आमिल को बंदिश की बुनियादी मालूमात न हो वह इन शाबर मंत्रों या टोटकों का सही इस्तेमाल या रहनुमाई नहीं कर सकता। इस पुस्तक में इस्लामी अमाल का सही तरीका आमिल के नजरिये से पेश किया गया है। सभी अमल को जायज जगह ही इस्तेमाल करें।

रूहानी अमलियात का इल्म एक ऐसा इल्म है, जिससे हम अपने बहुत सारे मामलात, परेशानियों और मुश्किलात के हल के लिये मदद लेते हैं। लेकिन बाज औकात ऐसा भी हो जाता है कि रूहानी अमलियात से बजाय हमारी बेहतरी के उल्टा नुकसान होने लगता है, इसे अमलियात की जुबान में रूज्जत कहते हैं। हर इल्म के, हर अमल की रूज्जत अलग-अलग होती है। काले इल्म और नूरी इल्म के अमलियात की रूज्जत के असरात अलग-अलग होते हैं। रूज्जत किसी खास वक्त के लिये नहीं होती बाज-ओ-कात इसके असरात ताजिंदगी रहते हैं। रूज्जत से निजात के ताकतवर अमल हम अपनी अगली किताब में देंगे। वह भी जल्दी ही नुमाया होगी।

-लतीफ खान

विषय सूची

- इस्माईल जोगी का तिलिस्म 15
- इस्लामिक अमल की हकीकत 18
- इस्माईल जोगी का पयाम 20
- हाजिर-ए-खिदमतःइस्लामी शाबर 23
- इस्लामी शाबर 27
- हजरत पैगम्बर अली की चौकी 28
- सुरक्षा मन्त्र 29
- गो जोगिन सिद्धि मन्त्र 31
- मुट्ठी पीर की सिद्धि मन्त्र 32
- हमजाद सिद्ध मन्त्र 33
- जिन्न उच्चाटन मन्त्र 33
- वीर मुहम्मद मन्त्र प्रयोग 34
- व्यापार वृद्धिकारक मन्त्र 35
- सर्ववशीकरण मन्त्र 36
- धन लाभ मन्त्र 38
- आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु 38
- वशीकरण मन्त्र 39
- सर्वकामना पूरक मन्त्र 40
- वशीकरण हेतु 41
- सकुशल यात्रा हेतु 41
- सुपारी वशीकरण मन्त्र 42
- स्त्री वशीकरण मन्त्र 43
- मुसीबत दूर करने हेतु संकट मोचक मन्त्र 44
- भूत प्रेतादि दोष नाशक गंडा 45
- भयनाशक अमल 46
- दुःख दर्द निवारक अमल 46
- गरीबी दूर करने हेतु 47
- इस्माईल जोगी का अघोर मन्त्र 48
- कर्ज की अदायगी 50
- लाइलाज मामलों का हल 50
- दुःखों से निजात पाना 50
- छोटे बच्चे की सुरक्षा हेतु 51
- मुकदमें में सफलता प्राप्ति हेतु 51
- दीवाना करने के लिए मन्त्र 52
- माशूका के लिए मन्त्र 52
- मिट्टी द्वारा वशीकरण 53
- पानी वशीकरण मन्त्र 54
- प्रेमिका के लिए मन्त्र 54
- वशीकरण का लाजवाब मन्त्र 55
- नमक वशीकरण मन्त्र 57
- मुसीबत टालने का मन्त्र 57
- किसी भी मन्त्र के लिए काट का मन्त्र 58
- रोजगार बाधा नाशक मन्त्र 59
- परियों का खलल दूर करने का मन्त्र 61
- भूत वगैरह का गंडा 63
- आफत दूर करने का (दिग्बंधन) मन्त्र 64

- कार्य साधना (1) 65
- पीर का कलमा 67
- शत्रुभय-नाशक 'हे' का मन्त्र 67
- बच्चों के लिए गंडा 68
- मनोभिलाषा-पूरक 'जीम' का मन्त्र 70
- मनुष्य को लौटाने वाला 'खे' का मन्त्र 71
- शुत्र नाशक तथा धनवृद्धि कारक 'दाल' का मन्त्र 72
- जाल का मन्त्र 73
- शत्रु भय नाशक 'जे' का मन्त्र 73
- गड़ा धन प्राप्त करने हेतु 'रे' का मन्त्र 74
- इच्छित अनुभव प्रदायक 'सीन' का मन्त्र 75
- हृदय दौर्बल्य नाशक तथा शत्रु जिह्वा स्तम्भक 'ज्वाद' का मन्त्र 75
- वशीकरण एवं कार्यसाधक 'तोय' का मन्त्र 76
- वशीकरण कारक 'एन' का मन्त्र 77
- शत्रु-भय नाशक 'रौन' का मन्त्र 77
- आकर्षण, वशीकरण तथा शत्रु-पीड़ा कारक 'फे' का मन्त्र 78
- विद्यावर्द्धक 'गाफ' का मन्त्र 79
- सर्वप्रियता-दायक 'लाम' का मन्त्र 79
- लोकप्रियता-दायक 'मीम' का मन्त्र 80
- श्रेष्ठ विद्यादायक एवं स्वप्न में उत्तरदायक 'नून' मन्त्र 80
- मनोरथ-पूर्तिदायक 'वाव' मन्त्र 81
- भवन सुरक्षा-कारक 'हे' मन्त्र 82
- गृह सुरक्षा कवच मन्त्र 83
- घर की रक्षा का मन्त्र 85
- आग कम करने का मन्त्र 86
- देह-रक्षक मुस्लिम मन्त्र 87
- पीर-पैगम्वर वुलाने का मन्त्र 88
- पान वशीकरण मन्त्र 89
- मनोकामना पूरक प्रयोग 90
- दरिद्रता-नाशक प्रयोग 91
- रोजी का प्रयोग 92
- रोजगार मिलने का प्रयोग 93
- मनोकामना पूर्ति मन्त्र 94
- सभा-मोहन मन्त्र 95
- राज्य कर्मचारी वशीकरण प्रयोग 96
- वशीकरण कारक काले कलवे का प्रयोग 97
- इस्माईल जोगी वशीकरण प्रयोग 98
- स्त्री मोहन : इस्माईल जोगी के प्रयोग 99
- वेदना निवारण मन्त्र 102
- कामिनी मनमोहन मन्त्र 103
- दुश्मनी के लिये 104
- शत्रुनाशक प्रयोग 105
- रोजी में तरक्की के लिये 106
- रोजी की तरक्की का उपाय 108

- बुखार से बचने के अमल 109
- दिल की घबराहट के लिये अमल 111
- मिर्गी चिकित्सा 112
- बुरी नजर का इलाज 112
- आँख दुखने का इलाज 113
- जिन्न-शैतान से मुक्ति 114
- भूत-प्रेत-चुड़ैल से मुक्ति 115
- माल-चोरी का उपाय 115
- जहरीले जानवर से बचने के लिए 117
- फुन्सी-फोड़ों से बचाव के लिये 117
- गैर मुस्लिम के लिए ताबीज 118
- ला ईलाज बीमारी के लिए 118
- शेर व कुत्ते के हमले से बचने के लिए 119
- हर मकसद में कामयाबी 119
- बीमारी से अच्छा होने के लिए 120

नक्श-ए-इस्माईल-जोगी

- मुहब्बत का काजल 123
- मुहब्बत का इत्र 124
- मुहब्बत की अंगूठी 125
- मुहब्बत का सुरमा 126
- वशीकरण नक़्श 128
- वशीकरण मंत्र 129
- वशीकरण मंत्र 130
- स्त्री वशीकरण का मंत्र 130
- प्रेमिका आकर्षण हेतु नक़्श 131
- समृद्धिकारक नक़्श 132
- शत्रु वशीकरण नक़्श 133
- धन लाभ का नक़्श 134
- आकर्षण का नक़्श 135
- वशीकरण नक़्श 135
- यात्रा में सफलता का नक़्श 136

भूत-प्रेतादि निवारक नक़्श

- भूत-प्रेतादि बाधा निवारक नक़्श 137
- भूत-प्रेत बाधा निवारक नक़्श 138
- भूत-प्रेत बाधा निवारक चार नक़्श 140

इस्माईल जोगी के अमल

- सफर में कामयाबी के लिए 143
- फ़तहमन्दी के लिए अमल 143
- घर की सुरक्षा हेतु अमल 143
- खेत की सुरक्षा हेतु अमल 144
- भूली हुई वस्तु याद आने का अमल 144
- अनाज में वृद्धि के लिए अमल 145
- मिरगी से बचाव हेतु अमल 145
- मुकदमे में सफलता प्राप्ति हेतु अमल 145
- कानों का बहरापन दूर करने का अमल 146
- बुखार-जाड़े से बचने के लिए अमल 146

- ऊपरी बाधा के निवारण हेतु अमल 147

बच्चों से सम्बन्धित नक़्श

- बुरी नज़र से सुरक्षा 148
- चौंकना, डरना व रोना बंद करने वाला नक़्श 152
- सूखा रोग से छुटकारा पाने का नक़्श 155
- सूखा रोग में अत्यंत प्रभावकारी नक़्श 158
- अकाल मौत से बचाव 161
- चलती पसली को रोकना 161
- स्मरण शक्ति बढ़ाना 162
- पीलिया का नाश 164

इस्माईल जोगी के करामाती अमल

- नींद कम आने का अमल 165
- सीधी राह पाने के लिए अमल 166
- जिन्नों को भगाने का अमल 166
- मिरगी रोग दूर करने का अमल 166
- आंधी के नुकसान से बचने हेतु अमल 167
- क्रोध समाप्ति का अमल 167
- बुरे स्वभाव से बचने का अमल 167
- चोरी का माल मिल जाने का अमल 167
- बिच्छू का जहर उतारने हेतु अमल 168
- आग बुझाने का अमल 168
- माल/संतान की सुरक्षा के लिए अमल 168
- जिन्न/आसेब से बचाव हेतु अमल 168
- हर बीमारी से निजात का अमल 169
- मनोकामना पूर्ति का अमल 169
- भूख व तंगहाली से बचाव का अमल 169
- दुख, परेशानी व कैद से छुटकारा पाने हेतु अमल 170
- कर्ज़ अदायगी हेतु अमल 170
- रोजी में वृद्धि हेतु अमल 170
- बुखार खत्म करने हेतु अमल 171
- दिमाग़ी कमजोरी दूर करने का अमल 172
- हर कार्य में सफलता हेतु अमल 173
- लाभ प्राप्ति के लिए अमल 173
- दौलत कमाने के लिए अमल 174
- बिगड़ी बात बनाने के लिए 175
- शत्रुता हेतु अमल 176
- सिरदर्द नाशक अमल 177
- भयनाशक अमल 178
- दुख-दर्द निवारक अमल 178
- धनवान बनने का अमल 179
- गरीबी दूर करने का अमल 179
- सूरः ताहा का अमल 180
- तिलिस्मी अंगूठी बनाना 181

- तिलिस्मी ताबीज बनाना 181
- सुलेमानी अंगूठी बनाना 182
- लाइलाज मामलों का हल 183
- कर्ज़ की अदायगी 183
- दुखो से निजात पाना 183
- छोटे बच्चों की सुरक्षा के लिए 183
- निन्यानवें मर्जों की दवा 184
- लोकप्रियता प्राप्ति के लिए अमल 184
- भूला हुआ रास्ता मालूम करने का अमल 185

इस्लामी तन्त्र और घरेलू टोटके

- भूत-प्रेतादि नाशक (टोटका) 189
- मृगी का टोटका 189
- पथरी रोग नाश तन्त्र 190
- वायु गोलानाशक तन्त्र 191
- तिल्ली, जिगर, प्लीहा नाश तन्त्र 191
- संग्रहणी व दस्तनाशक तन्त्र 191
- आधाशीशी 192
- दमा-श्वास रोगनाशक 192
- बाल रोगनाशक टोटका 192
- घरन रोगनाशक टोटका 194
- फील पाँव नाशक टोटका 194
- मोटापा नाशक टोटका 194
- पागलपन नाशक तन्त्र 195
- मासिकधर्म विकार टोटका 195
- बाँझपन नाशक तन्त्र 195
- गर्भ पीड़ानाशक टोटका 196
- सुख प्रसव कारक टोटका 197
- गर्भ न ठहरने का टोटका 199
- बवासीर नाशक टोटका 199
- ज्वरादि नाशक टोटका 199
- महाज्वर नाशक मन्त्र 200
- शीत ज्वर (जुड़ी) नाशक तन्त्र 200
- विषम ज्वरनाशक टोटका 201
- पारी बुखार मलेरिया नाशक तन्त्र 201
- जीर्ण-ज्वर तथा रात्रि-ज्वर नाशक टोटका 204
- भूत ज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक टोटका 204
- सर्प-बिच्छू विष नाशक टोटका 205
- रोगादि दोष-निवारण का टोटका 206
- वीर्य स्तम्भन टोटका 207
- स्त्री वशीकरण टोटका 207
- पति वशीकरण टोटका 210
- विदावणी-सिद्धिः मन्त्र 210
- बैताल सिद्धि 211
- योगिनी साधना 211
- डाकिनी-सिद्धिः मन्त्र 213
- भूत और प्रेत-सिद्धिः मन्त्र 213
- पिशाच-पिशाची-सिद्धि मन्त्र 214
- गुटिका सिद्धि गुटिका सिद्धि 214
- सर्वदोष निवारण मन्त्र 216
- भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र 216

- धन वृद्धि करने का मन्त्र 216
- चुड़ैल भगाने का मन्त्र 217
- भूत भय-नाशक मन्त्र 217
- डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र 218
- अकाल मृत्यु भय-निवारक मन्त्र 219
- अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र 219
- आत्म-रक्षा मन्त्र 219
- अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र 220
- विपत्ति-निवारण मन्त्र 220
- सर्वाङ्ग वेदना-हरण मन्त्र 221
- उदर वेदना-निवारण मन्त्र 221
- वन-दुर्गा मन्त्र 221
- तपेदिक (टीबी) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र 222
- अनाज की राशि उडाने का मन्त्र 223
- कार्य-साधना मन्त्र 224
- सर्प-विष मन्त्र 225
- झाड़ने की विधि 226
- पागल कुत्ते के काटने का मन्त्र 228
- अंगुलबेल, अंगुलबाड़ा छिलोरी मन्त्र 229
- ज्वर, मियादी, विषम ज्वर का मन्त्र 230
- निमोनिया का मन्त्र 231
- स्तन-प्रदाह का मन्त्र 231
- प्लीह वृद्धि मन्त्र 232
- भूत-प्रेतादि उतारने का मन्त्र 233
- चाँदनी बाँधने का मन्त्र 233
- गर्भस्राव, गर्भपात, अकालस्राव का मन्त्र 235
- रक्तस्राव, शरीर के किसी भाग से खून बहना, हेमरेज का मन्त्र 236
- रक्त बाँधने की विधि 236
- तन्त्र विद्या के कुछ प्रयोग 237
- मशक, मस्सा 239
- सूर्यवर्त, आधाशीशी, माइग्रेन 240
- गठिया, वातरक्त, गाउट 241
- सिरदर्द व शिरःशूल 241
- साँप के विष का उपाय 241
- बिच्छू का विष, वृश्चिक विष 242
- ज्वर, बुखार का ईलाज 242
- अतिसार-डायरिया 246
- संग्रहणी 246
- यकृत प्लीहा वृद्धि 246
- पथरी 247
- श्लीपद हाथीपाँव 247
- दन्तशूल (दाँतों में दर्द) 247
- घाव, क्षत, व्रण, जख्म 247
- बवासीर (अर्श) 248
- पागलपन, उन्माद 248
- मिर्गी अपस्मार 249
- वन्ध्यत्व, बाँझपन 250
- रक्त प्रदर 251
- गर्भनिरोध का टोटका 251
- मासिक विकार 252
- श्वेत प्रदर 253

- हिस्टीरिया 253
- सुख-प्रसवकारक टोटके 253
- गर्भपात 256
- गर्भपात, गर्भस्त्राव 257
- लड़का या लड़की होगी 257
- आँख आना 258
- मोटापा 259
- सेहुआ 259
- भूत-प्रेत निवारण 259
- बालापस्मार टोटका 260
- दाँत निकालने का टोटका 260
- खाँसी 261
- हिचकियाँ 261
- बालक का रोना 262
- जम्हुआ 262
- उदर व्याधि 262
- मसूड़े का दर्द व सूजन 262
- कुकास, काली खाँसी 263
- सूखा रोग 263
- मृतवत्सा 264
- दूसरे के चढ़ाये हुए विष की परीक्षा का मन्त्र 265
- भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र 265
- सर्प-विष मन्त्र 266
- नजर उतारने का मन्त्र 268
- आमरक्त-नाशक मन्त्र 268
- अतिसार-नाशक मन्त्र 269
- विविध भाँति के रोगो का उपाय 269
- उदर विकार निवारण 270
- नेत्ररंजनकरण 270
- सम्पूर्ण रोगों का निवारण 270
- कुत्ता-विष निर्विषीकरण 271
- विविध भाँति के जहरीले जन्तुओं का विषनाशक 272
- सर्पविष नाशक औषधि वर्णन 272
- अपने स्वर को गानविद्या में सुरीला बनाना 274
- नेत्ररोग निवारण तथा रक्षण 275
- दाँतों को सुदृढ़ बनाना 278
- रक्षा के उपाय 279
- भाग्यविहीनीकरण 281
- विवादकारक प्रयोग 281
- उत्पीड़क जावों का विनाशन 281
- रोम विनाशक योग 284
- नष्ट रजधर्म पुनः ठीक होना 286
- मासिककाल में अत्याधिक रजःस्त्राव का ठीक करना 287
- जन्मजात बांझ की चिकित्सा 288
- काकवन्ध्या चिकित्सा 290
- सरलतापूर्वक प्रसवोत्पादन 291
- बलवर्धक योग 293
- नींद लाना 295
- सोभाग्यशाली विधान 295
- शरीरांजन विधि 296
- मुख का सुवासीकरण 297
- मुखव्रणनाशक विधि 298

- केश को काला बनाने वाले योग 298
- जूँ नाशक प्रयोग 299
- इन्द्रलुप्तनाशक प्रयोग 299
- देहरंजन 300
- मुखरञ्जन 303
- केशरंजन 307
- स्नान द्रव्य 312
- जूँ आदि नाशक योग 312
- इन्द्रलुप्त के विशिष्ट प्रयोग 314
- वाजीकरण 316
- हैज की दुरुस्तगी के लिए 320
- हर किस्म के दर्द के लिए 320

इस्लामिक अमल

- दौलत कमाने के लिए 323
- काली बिल्ली के बालों द्वारा मुहब्बत में सफलता 323
- सिर का दर्द दूर करने के लिए 324
- लम्बे समय तक अपने महबूब को अपना कैदी बनाये रखना 325
- मुहब्बत का अमल 326
- मुहब्बत का तिलस्म 327
- बिगड़ी बात बनाने के लिए 327
- दुश्मनी के लिए 328
- हमजाद से मुहब्बत का अमल 329
- बेशर्मी को दूर करने के लिए 330
- खो गये रिश्तेदारों को मालूम करना 330
- मुहब्बत के लिए 331
- चूड़ियों द्वारा मुहब्बत 333
- गुलाब के फूल का अमल 333
- अजीबो गरीब अमल 334
- आँखों में चुम्बकीय चमक 334
- दोस्त बनाने के लिए 335
- जादुई अमल 337
- जिन्न का अमल 340
- जिन्न व आसेब को भगाना 340
- दफअ आसेब का अमल 342
- दफअ उम्मुसुबियान के लिए 342
- नाफ की तकलीफ के लिए 343
- भूत आदि भगाना 344
- बिच्छू आदि भगाना 345
- जान की हिफाजत के लिए 345
- सांप के जहर की शान्ति 346
- बिच्छू के काटे के लिए 347
- तिब्बी अमल 347
- आधाशीशी के दर्द के लिए 348
- पुराना कब्ज के लिए 349
- दूध की कमी के लिए 349
- मुँह से खून आने के लिए 349
- अफीम छोड़ने के लिए 350
- आखिरी पैगाम 351

अल्लाह का करम

पूछेगा जो खुदा तो ये कह देंगे हश्र में,
हां-हां गुनाह किये, तेरी रहमत के जोर पर।

इस्लामिक या मुस्लिम तन्त्र को अत्यन्त प्रबल माना जाता है। पूरी कुरान अपने आप में एक शक्तिशाली शाबर मन्त्र है क्योंकि इसमें पैगम्बर मुहम्मद और अल्लाह का वास्ता सच्चे दिल से दिया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक मुस्लिम संतों और फकीरों ने बहुत से शाबर मन्त्रों की रचना की है। इन शाबर मन्त्रों में उन्होंने अल्लाह की दुहाई दी है।

पैगम्बर मुहम्मद को इस्लाम धर्म का संस्थापक माना जाता है, ऐसा कहते है कि अल्लाह ने 700 वर्ष में बिस्मिल्लाह का निर्माण किया, इसलिए 'बिस्मिल्लाह' बोलने से मुख शुद्ध और पवित्र हो जाता है। इसी कारण अनेक शाबर मन्त्रों मे तीक्ष्ण प्रभाव हेतु इस पवित्र शब्द का उपयोग किया गया है। खुदा का नूर 30,000 साल में एक बार उनसे जुदा होता है और ऐसी मान्यता है कि खुदा ने अपना नूर अपने से अलग करके ही पैगम्बर मुहम्मद का निर्माण किया। उसी खुदा के नूर की प्रेरणा से इस पुस्तक का संकलन हुआ है। अनेक वर्षों से अल्लाह की इबादत का परिणाम ही है कि यह पुस्तक पाठकों के हाथों में है।

पंजाब के सूफी संतों का कहना है कि ''रसूल खुदा दे आप ने रब्ब, बाकी दुनिया ठग्गां दी ठग'' इसका मतलब यही है कि सारी दुनिया उस अल्लाह के नाम पर भोले और मासूम लोगों को

ठग रही है, केवल पैगम्बर मुहम्मद ही खुदा का असली रूप है। हमारी इस किताब का मकसद बिना किसी फरेब के सामान्य लोगों की मदद करना है। हम बिस्मिल्लाह के जपने वाले, चाहने वाले, मानने वाले और उसी का प्रचार करने वाले हैं। बिस्मिल्लाह के नाम का कमाल ही लोगों तक पहुँचाना इस किताब का मकसद है।

पंजाब के मशहूर कवि वारिस शाह ने हीर में लिखा है- ''अव्वल हमल खुदा दा विरध कीजे, इश्क कित्ता सो जग दा मूल मियां, पहला आप ही रब्ब ने इश्क कित्ता, ते महबूब ने नबी रसूल मियां''। उनका मानना था पैगम्बर मुहम्मद अल्लाह के महबूब हैं। जिस प्रकार हिन्दू धर्म में देव पंचायत होती है, ठीक उसी प्रकार इस्लाम में भी पंचायत होती है जिसे ''पंज तन पाक'' कहा जाता है। इस पंचायत में पैगम्बर मुहम्मद , शाह हजरत अली, बीबी फातिमा, हसन और हुसैन आते हैं। मेरे पीर ने अपनी साधना में इस पंचायत का दर्शन किया था। यदि पीर की मर्जी हुई तो इस पंचायत से मिले वरदान और कमाल का वर्णन भी अगली किताब में जरूर करूंगा। आखिर में बस इतना ही कहूंगा कि इस किताब में दिये गये शाबर, टोटके और अमल सच्चे मन से ही प्रयोग करें, यदि पैगम्बर मुहम्मद की कृपा मिल गई तो जिन्न-जिन्नात, पीर पैगम्बर औलिया सबकी रहमत की बरसात आप पर भरपूर होगी।

गुनाह गिन के मैं क्यूं अपने दिल को छोटा करूँ,
सुना है तेरे करम का कोई हिसाब नहीं।

—मौलवी लतीफ खान

इस्माईल जोगी का तिलिस्म

सहर के बाद शुमार-ए-नुजूम-ए शब होगा,
सफर के बाद सफर का हिसाब देखेंगे...

आज तक जितने भी प्रकार के शाबर मन्त्र उपलब्ध हैं, उनके जनक बाबा गोरखनाथ ही हैं। नाथ और दशनामी सम्प्रदाय के अनुयायी एक-दूसरे से अभिवादन के समय 'आदेश' का प्रयोग करते हैं। नाथ सम्प्रदाय की स्थापना आदिनाथ शिव द्वारा बताई जाती है। आदिनाथ शिव से मत्स्येन्द्रनाथ ने ज्ञान प्राप्त करके नाथ पंथ का विस्तार किया। मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गोरखनाथ के प्रचार से बारह पंथी नाथ सम्प्रदाय विख्यात हुआ। इस सम्प्रदाय के मानने वाले अपने नाम के साथ 'नाथ' शब्द को गर्वपूर्वक उच्चारित करते हैं। इन अनुयायियों को कान छिदवाने के कारण कनफटा, दर्शन कुण्डल धारण करने के कारण दर्शनी एवं गोरखनाथ के चेले होने के कारण गोरखपंथी भी कहा जाता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में मुस्लिम जोगियों के भी अनेक गांव हैं। इन गांवों में ऐसे मुस्लिम जोगी रहते हैं, जो नाथ पंथियों की तरह गेरुए वस्त्र धारण करते हैं और हाथ में सारंगी लिये रहते हैं। ये जोगी गांव-गांव गोपीचन्द और राजा भर्तृहरि के गोरखनाथ के प्रभाव से संन्यासी हो जाने की लोककथा अपनी विशिष्ट गायन शैली में गाते फिरते रहते हैं। ग्रामीण लोग इनके सम्मान में इन्हें अनाज और धनराशि सहर्ष देते हैं। गांव वाले इनके मुख से गोरखनाथ की महिमा बड़े चाव से सुनते हैं।

यहां हम यह समझेंगे कि ये मुस्लिम जोगी कौन हैं और

इनका नाथ सम्प्रदाय से क्या सम्बन्ध है। इस विषय में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। पहले ये मुस्लिम जोगी बहुतायत थे किन्तु अब इनकी संख्या तेजी से कम होती जा रही है। ये लोग जादुई करामात दिखाकर और हाथ देखकर भविष्यवाणी करके अपनी जीविका चलाते हैं। इनके पूर्वज असम के रहस्यपूर्ण क्षेत्र में रहने वाले इस्माईल जोगी थे। जोगियों का अधिकांश सम्प्रदाय सैकड़ों वर्ष पूर्व बिहार और बंगाल में फैला हुआ था। मुस्लिम जोगी वास्तव में नाथपंथ के योगी ही हैं। काल के प्रभाव से धीरे-धीरे इनकी संख्या अब काफी कम हो गई है। पश्चिम बंगाल में इन मुस्लिम जोगियों का आज भी काफी सम्मान हैं। लोग इन्हें गोरखनाथ की भूमि से आया हुआ जानकर बहुत सम्मान देते हैं।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व असम-बंगाल क्षेत्र में जन्में इस्माईल जोगी अन्य जोगियों की तरह सितार वाद्ययन्त्र लेकर गांव-गांव घूमकर राजा भर्तृहरि और गोरखनाथ की कथा सुनाया करते थे। पूरा भारत घूमने के बाद इन्होंने असम की एक घाटी में अपना स्थान नियत किया। गोरखनाथ की महिमा को जानकर इन्होंने गोरख का नाम जपकर लोगों की भलाई शुरू की। धीरे-धीरे इनकी ख्याति पूरे असम और बंगाल में फैल गई। गुरु कृपा से इन्होंने तंत्र विद्या का उपयोग करने के साथ-साथ उसका प्रचार व प्रसार भी किया। इन्होंने कभी धर्म, जाति का भेदभाव नहीं किया। गोरखनाथ की साधना से सिद्धि प्राप्त तन्त्र के माध्यम से इनका चमत्कार पूरे बंगाल में दिखने लगा। इस्माईल जोगी का जलवा ऐसा था कि ये अगर मिट्टी के खिलौने को हाथ

लगा देते, तो वह खुद ब खुद चलने लगता था। ऐसे अनेक तिलिस्म देखकर लाखों लोग उनके भक्त बन गये। गुरु की उन पर असीम कृपा थी। कहा जाता है कि वर्षों तक उन्होंने असम में रहकर माँ कामाख्या की भी साधना करके उनके दर्शन किये थे। आज भी अनेक शाबर मन्त्रों में 'इस्माईल जोगी की आन' या 'इस्माईल जोगी की दुहाई' का प्रयोग किया जाता है क्योंकि उनके नाम का ही तिलिस्म ऐसा था कि उनकी दुहाई देने मात्र से सम्बन्धित देवता बाध्य होकर साधक का कार्य सम्पन्न करने को तत्पर हो जाता था। आज भी असम व बंगाल के आदिवासी क्षेत्रों में लोग इस्माईल जोगी के नाम की अलख जगाते हैं। वशीकरण के कार्य में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनके सम्बन्ध में मशहूर है कि यह आजीवन लाखों लोगों की बिना किसी लालच के मदद करते रहे।

अनेक वर्षों तक असम, बंगाल के आदिवासी क्षेत्रों में भ्रमण करके तथा अनेक पुस्तकालयों में पुराने हस्तलिखित तंत्र-मंत्र शास्त्रों से खोजकर विभिन्न इस्लामी शाबर मन्त्रों का चयन इस पुस्तक में किया गया है। अधिकांश मन्त्र इस्माईल जोगी की देन हैं, अतः उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा रखकर व उनका नाम दिल में संजोकर ही इस पुस्तक के इस्लामी शाबर मन्त्रों व टोटकों का प्रयोग करें। इससे आपको उम्मीद से भी अधिक कामयाबी मिलेगी।

औरों की बुराई को न देखूँ वो नजर दे,
हाँ अपनी बुराई को परखने का हुनर दे।

—मौलवी लतीफ खान

इस्लामिक अमल की हकीकत

आता है दाग-ए-हसरत-ए-दिल का शुमार याद,
मुझसे मिरे गुनाह का हिसाब ऐ खुदा न मांग।

आज की दुनिया में दिनोंदिन की आपाधापी में इंसान इतना मशरूफ है कि वो अपनी जड़ों से कटता जा रहा है। अपनी पुरानी परम्परा से जुड़े रहने के लिए हमें अतीत के साहित्य का ध्यान भी रखना चाहिये। इसी प्रक्रिया में तरक्की की नई मंज़िलें तय करते वक्त हमें पुरानी बुनियादों का सहारा लेना ही पड़ेगा। बुनियादों की इस कड़ी में 'इस्माईल जोगी का इस्लामी शाबर तन्त्र' एक मशहूर मिसाल है। अतीत के इस बेशकीमती अदब और इल्म की उपेक्षा करके वर्तमान और भविष्य में अर्थपूर्ण अदबियात की रचना करना एक असहाय प्रक्रिया के समान है और ये तरीका रचनात्मकता के बजाय विनाशकारी रास्ता इख्तियार करने की पूरी संभावना रखता है। ऐसा पहले हुआ भी है जिसका खामियाजा कई लोगों ने उठाया है। इसलिये उसी जोखिम को कमतर करते हुये हमने प्राचीन, प्रमाणिक और अधिक भरोसेमन्द इस्लामी तन्त्र को आपके समक्ष उजागर किया है।

आज की युवा पीढ़ी जो अपनी परेशानियों का हल किसी ढोंगी या फरेबी के पास ढूंढ रही है, उनकी तलाश ऐसी ही है जैसे 'डोर को सुलझा रहे हैं, और सिरा मिलता नहीं'। असली इस्लामी इल्म ने हिंदुस्तान में कभी उत्थान देखा और कभी पतन। यइ इल्म कभी शक की नजर से देखा गया तो कभी पारखी नजरों ने इसका फायदा लोगों तक पहुंचाया, उन्हीं पारखी लोगों

में से एक थे इस्माईल जोगी, जिनकी नेमत को हमने इस किताब में संजोया है। यह इल्म बहुत सारी लानत-मलानत से भी गुजरा लेकिन जमाने की गर्दिश इसके रंग को फीका न कर सकी। यह आज भी अपनी चमक से लोगों के आकर्षण का केन्द्र है।

'इस्माईल जोगी का इस्लामी शाबर तन्त्र' इस्लामी इल्म की दुनिया के अकूत खजाने से चुने गये रत्नों का संग्रह है। हालांकि दुनिया और इसकी रफ्तार में काफी फर्क आ चुका है किंतु इस इल्म के जानने वालों के जरिए यह आज भी अपनी रंगत से इंसान को अचम्भित करने में सक्षम है।

इस किताब का मकसद नये और पुराने इस्लामिक अमल से आपको रुशनास करना और इल्म की तर्बियत करना है। उम्मीद है इस काम के लिए आप तहेदिल से हमारे इदारा की हौसला अफजाई करेंगे।

इस्माईल जोगी का पयाम (संदेश)

मैं उन सबमें इम्तियाज़ी निशाँ हूं,
फलक पर नुमायाँ हैं जितने सितारे,
बज्म-ए-अंजुम की मुझको मयस्सर
सदारत नहीं है तो फिर ये और क्या है।

इस खाकसार ने इस किताब की रचना और तहकीक में कई सालों तक आसाम, बंगाल और पूर्वोत्तर भारत की यात्रा की। इसमें जहाँ कहीं से भी कोई प्रमाणिक और प्राचीन इस्लामिक अमल का प्रयोग मिला, उसकी प्रमाणिकता की जाँच की और उसे इस किताब में शामिल किया। इस्माईल जोगी के अमल और शाबर की खोज में मैं बंगाल के गाँव-गाँव में घूमा हूँ। अनेक पुराने पुस्तकालयों से कई हस्तलिखित ग्रन्थों का भी इसमें सहयोग मिला। इसी कड़ी में मिदनापुर के एक छोटे से गाँव के एक बुजुर्ग मौलवी के यहाँ मुझे 100-150 साल पुरानी एक अधूरी किताब के कुछ पन्ने मिले, जिनमें इस्माईल जोगी का पैगाम उनके ही लफ़्जों में लिखा था। उसका ही एक अंश यहाँ उनके एतमाद करने वालों के लिए हूबहू पेश कर रहे हैं-

آپ سب انسانوں کی طرح میں بھی خدا کا بندہ ہوں۔ قرآن کا پہلا لفظ اقراء ہے جس کا مطلب پڑھنا ہے۔ سب سے پہلا لفظ جو حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم پر نازل ہوا وہ اقراء تھا، اس کا مطلب ہے کہ جہاں بھی آپ کو تعلیم حاصل کرنے اور علم جاننے کے لیے جانا ہو، آپ کو ضرور جانا ہے۔ لفظ اقراء کا مطلب کسی غلام یا اچھوت کے لیے پابندی نہیں ہے۔ مطلب یہ سب کے لیے ہے۔ اللہ کے فصل سے جو کچھ ملا، میں نے ساری زندگی میں تقسیم کیا۔ عوام کی خدمت سب سے بڑی دعا ہے۔ میں اللہ کا بندہ ہوں، اللہ مجھ میں رہتا ہے، میں اس کے حکم سے کام کرتا ہوں۔

میں نے جو اسلامی عمل اور علم اپنے گرو سے سیکھا ہے اس سے میں سب کا بھلا کرتا ہوں یہ اللہ کی زبان ہے اللہ کے بندوں کی خدمت کرنا میرا ایمان ہے۔ یہ اسلامی علم ایک حقیقی ورثہ ہے، اس ورثے کو بچانا آپ کا فرض ہے۔ میں اس کے لیے شکر گزار ہوں۔

''आप सब इंसानों की तरह मैं भी खुदा का बन्दा हूँ। कुरान का पहला लफ़्ज है इकरा मतलब पढ़। पहली बार मुहम्मद साहब पर जो पहला लफ़्ज उतरा वह यही इकरा (पढ़) था। इसका मतलब है पढ़ने और इल्म को पाने के लिए तुम्हें जहाँ भी जाना पड़े, जरूर जाओ। इकरा लफ़्ज किसी भी गुलाम या अछूत के लिए पाबन्दी के तौर पर नहीं है, मतलब यह सबके लिए है। मैंने खुदा की नेमत से जो पाया है, उसे ही अपनी पूरी हयात में बाँटा है। अवाम की खिदमत ही सबसे बड़ी बंदगी है। मैं अल्लाह का बंदा हूँ, अल्लाह मुझमें है, मैं उसी के हुकुम से काम करता हूँ। मेरे पीर से जो मैंने इस्लामिक अमल और इल्म सीखा है, उसी से मैं सबका भला करता हूँ। मेरे बताये लफ्ज़ों में जो 'इस्माईल जोगी की दुहाई' है वो असल में अल्लाह की ही दुहाई है, क्यूंकि मुझमें मेरा कुछ नहीं, मैं जो बोलता हूँ, वो अल्लाह की जबान है। अल्लाह के बन्दों की खिदमत करना ही मेरा ईमान है। ये इस्लामिक इल्म असल मीरास है, इस अमानत को संभाल कर रखना आप सबका फर्ज है। इसके लिए मैं निगूँसार हूँ।''

इस्माईल जोगी के लफ्ज़ों में लिखे गये इस पैगाम के बाद कुछ भी कहने को बाकी नहीं रहता। मैं नाचीज आप सबसे आखिर में इतनी ही इल्तिजा करता हूँ कि गश्ती-मुरसला आसूदा

जहाँ के तराश जज़ीरों में, इस इब्तिला महफिल के एक इबतिसाम अफ़्शार की मेहनत को यूं इत्लाफ न होने देना।

दुआओं में याद रखना –

मुख़्लिस

मौलवी लतीफ खान

आने वाली नई किताब

सामरी-फ़न

इस्माईल जोगी का तिलिस्म

(जिन्नात-ओ-आसेब के अमल)

इस किताब में सभी पिन्हाँ राज जाहिर किये गये हैं।

हाजिर-ए-खिदमत
इस्लामी शाबर तन्त्र

आज एक तरफ़ जहाँ हमें दुनिया अजीब-ओ-गरीब मालूम हो रही है, हर तरफ दहशत, डर, गरीबी छाई है, जिसमें हम जिन्दगी और मौत, हक-ओ-बातिल, फिरका-परस्ती और इन्सानियत, अदल-ओ-सदाकत, किज़्ब-ओ-मक्र जैसे मुतज़ाद अहसासात से लगातार जूझ रहे हैं और अपनी-अपनी चुनी हुई लाइनों में खड़े होकर जानिबदारी का ऐलान करना अपना शुरूआती फर्ज समझते हैं, ऐसे में जब हम इस्माईल जोगी के गुज़िश्ता इल्म पर नजर डालते हैं, तो हमें एहसास होता है कि ऐसे मुश्किल समय में भी इस जोगी का पैगाम हमें रोशनी की मौज दिखाता है।

आज के इंसान की हालत ये है कि ''जिंदगी की जरूरतों का यहाँ हसरतों में शुमार होता है।'' मौजूदा दौर् की इसी कशमकश से निकालने के लिए यह फालनामा आप सबकी जेर-ए-नजर है। ये दस्तूर-ए-अदब रहा है कि इल्म के शायकीन अपनी रवायत और तहज़ीब के मुआमले में आजाद होते हैं और इल्म के फरोग़ के लिए ये लाज़मी भी है। इसी ज़िम्न में इस 'इस्लामी शाबर तन्त्र' से आपकी यगानगत के लिए हम मम्नून हैं और आपकी राय के मुन्तजिर भी।

ये वाज़ेह कर देना यहाँ बेमहल न होगा कि जहाँ किसी इल्म और अदब पर उसके ख़ास और बहुत मोतबर अदीबों की

सरपरस्ती क़ाबिल-ए-एहतिराम होती है, वहीं उसका आम-फहम होना भी इसके फरोग़ के लिए लाजमी है। इस सदाक़त का हमने इस किताब में पूरा ख्याल रखा है। ये जुजूल-ए-किताब अहल-ए-इल्म के लिए एक शानदार इलमी दस्तावेज हो और इस्लामी इल्म के आम-फहम क़ारईन के लिए भी सब मुश्किलों का हल साबित हो, इसी उम्मीद से-

जिनके किरदार से आती हो सदाक़त की महक,
उनकी तदरीस से पत्थर भी पिघल सकते हैं।

इस्लामी शाबर तन्त्र

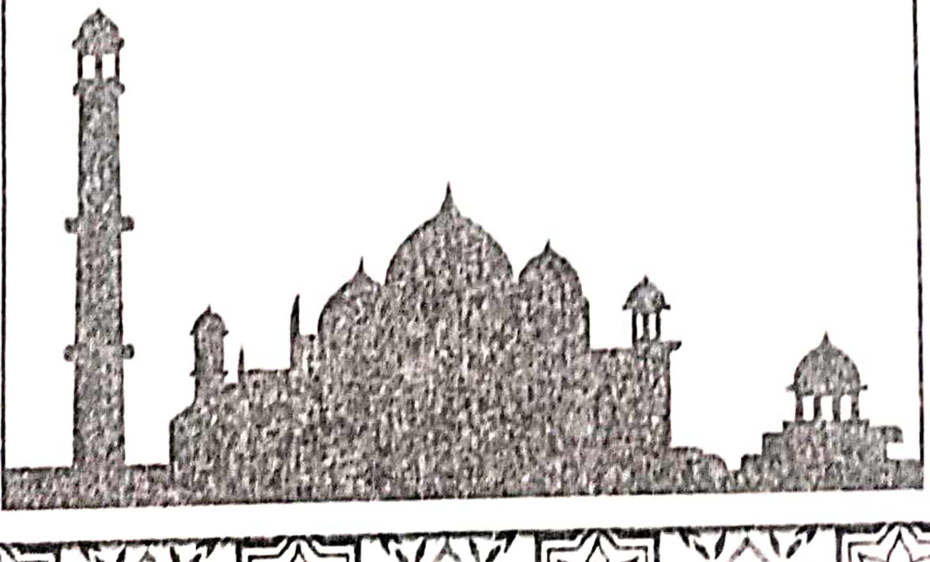

असली मीरास

इस्लामी मजहब में खुदा के केवल निराकार रूप की ही कल्पना की गई है, किन्तु जिन्न, परी और खईस आदि के अस्तित्व को नकारा भी नहीं गया है। इतना ही नहीं विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु सन्तों, फकीरों की मज़ारों पर चादर चढ़ाने तथा धूप-लोबान जलाने का भी विधान है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के नक्श, मन्त्र तथा तांत्रिक टोटकों का भी प्रयोग किया जाता है। इस इस्लामी शाबर तन्त्र में सैकड़ों ऐसे तन्त्र-मन्त्र संकलित किये गये हैं, जिन्हें इस्माईल जोगी का आशीर्वाद प्राप्त है।

इन सभी का प्रयोग समय-समय पर फकीरों तथा मुस्लिम तांत्रिकों द्वारा किया जाता है। अब तक इस पुस्तक के अनेक तन्त्र तथा नक्श उर्दू तथा फ़ारसी भाषा में ही उपलब्ध थे। अब पहली बार यह असली मीरास देवनागरी में प्रस्तुत की गई है।

बिस्मिल्लाह Bismillah (अरबी: بِسْمِ ٱللَّٰهِ इसका मतलब है "अल्लाह के नाम से" या "ईश्वर के नाम से" ("In the name of God"), इस्लाम धर्म में कोई भी काम शुरू करते समय "बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम" b-ismi-llāhi r-raḥmāni r-raḥīmi पढते हैं, जिस का मतलब है, "अल्लाह के नाम से जो दयालु और कृपाशील है"।

इस्लामी शाबर

किसी भी मन्त्र की काट करने का मन्त्र –

'तेली की खोपड़ी चाट चाट के मैदान,
ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान,
मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा,
फातिमा का बेटा,
सूअर खाय हलाल करे पै दें
पांव वज्र की कील काट तो
माता के दूध हराम कह।'

किसी भी शुभ समय अथवा जुमेरात (गुरुवार) की रात्रि को पूरी रातभर इस मन्त्र का जप करते रहने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यह मन्त्र इस्माईल जोगी का मशहूर शाबर मन्त्र है। इसके उपयोग से किसी भी घातक तन्त्र को काटा जा सकता है। इसमें गुरु की शक्ति निहित है।

❖❖❖

हजरत पैगम्बर अली की चौकी

'याही सार सार सार,
जिन्न देव पारी नवस्कंफार,
एक खाय दूसरे फार,
चहुं अमिया पसार,
मलायक अस चार,
दुहाई दस्तखे जिब्राइल,
बाई ये खैभि काइल,
दाईं दस्न दस्न,
हुसैन पीठ खदे खेई,
आमिल कलेजे राखे इज्राइल,
दुहाई मुहम्मद अलोलाह इलाह की,
कंगूर लिलह की खाई,
हजरत पैगम्बर अली की चौकी,
नख्त मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

जब कभी भी कोई अमल करना हो तो पहले इस मन्त्र को पढ़कर सात दफा ताली बजायें। किसी भी साधना से पूर्व इस मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने चारों ओर सुरक्षा रेखा खींची जा सकती है। इससे की गई रक्षा रेखा को कोई काट नहीं सकता, इसमें इस्माईल जोगी का वरदान है। रोग झाड़ने हेतु इसका झाड़ा सात बार दें।

❖❖❖

सुरक्षा मन्त्र

'छोटी-मोटी थमंत
वार को वार बांधे,
पार को पार बांधे,
मरघट मसान बांधे,
टोना और टंवर बांधे,
जादू वीर बांधे,
दीठ और मूठ बांधे,
बिच्छू और सांप बांधे,
भेड़िया-बाघ बांधे,
लखूरी सियार बांधे,
अस्सी अस्सी दोष बांधे,
कालिका लिलार बांधे,
योगनी संहार बांधे,
ताडिका कलेज बांधे,
उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम बांधे,
मरी मसानी बांधे,
और बांधे डायन भूत के गुण,

लाइल्लाह को कोट इल्लल्लाह की खाई,
मुहम्मद रसूल्लिलल्लाह की चौकी,
हजरत अली की दुहाई।'

ग्रहणकाल हो तो ग्रहण के प्रारम्भ काल से ग्रहण के अन्त तक निरन्तर जप करने से भी यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यदि ग्रहण का समय 10–15 मिनट हो तो भी यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

किसी भी प्रकार की साधना–सिद्धि अथवा तांत्रिक प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व इस मन्त्र को मात्र एक दफा पढ़ लेने से और दिल में इस्माईल जोगी को याद करने से ही साधक पूर्णतः सुरक्षित रहता है।

❖❖❖

गो जोगिन सिद्धि मन्त्र

'अगारी जो गुरु योगे जोगिन गुरु डंड बतियां
करियां बलईयां री जांगन
मुख अनरिता गायति रही
रतियां गो जोगिन इन अकेलियां
गो मारो हैह तालियां
गो जोगिन बांधऊं नजरियां
गो जोगिन आ पहियां
न आये तो दुहाई मईया बनिता की,
दुहाई सलिमा पैगम्बर की,
दुहाई इस्माईल जोगी की
दुहाई सलाई छू।'

शुभ तिथि–नक्षत्र में या जुम्मे के दिन में धूप–दीप आदि जला लेवें और चमेली के फूलों की माला समीप रखकर सावधानी पूर्वक रात्रिभर उक्त मन्त्र का जप करते रहे। गो जोगिन प्रकट होवे तो पुष्प माला तुरन्त ही उसे पहना दें, तो वह प्रसन्न होकर आलौकिक सिद्धि प्रदान कर देगी। तत्पश्चात् इस्माईल जोगी का शुक्रिया अदा करना न भूलें।

❖❖❖

मुट्ठी पीर की सिद्धि मन्त्र

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्।
साह चक्र की बावड़ी,
गले मोतियन का हार,
लंका सो समुद्र सी खाई,
जहाँ फिरे मुहम्मदा वीर की दुहाई,
कौन वीर आगे चले,
सुलेमान वीर चले,
दर्शनी वीर चले,
नादिरशाह वीर चले,
मुट्ठी पीर चले,
नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई,
शब्दा सांचा, पिण्ड कांचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस्माईल जोगी का यह यादगार शाबर मन्त्र मुट्ठी पीर की सिद्धि के लिये प्रसिद्ध है। इस मन्त्र को लगातार प्रतिदिन 21 बार जपकर 21 दिन में सिद्ध कर लें। मुट्ठी पीर की कृपा प्राप्त होनी शुरु हो जायेगी।

❖❖❖

हमजाद सिद्ध मन्त्र

'आगम निगम की खबर लगावे,
सोऽहं परब्रह्म को नमस्कार।'

इस मन्त्र को चालीस दिनों तक प्रतिदिन 250 दफा जप करने से हमजाद सिद्ध हो जाता है। साधक एक स्थान पर बैठे-बैठे दूर देशों तक का हाल पता कर सकता है।

❖❖❖

जिन्न उच्चाटन मन्त्र

'मां बादशाह सब बादशाहों के सफेद घोड़ा।
सफेद पाखर, जिस पर चढे जिन्नों के बादशाह,
बारह कोस अगाड़ी, बारह कोस पिछाड़ी,
जो कुछ काम कहूं बजा लावे,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

किसी भी शुभ समय पर इस मन्त्र को दस हजार दफा जप करके सिद्ध कर लेवें। फिर जिन्न बाधा के रोगी पर इस मन्त्र से अभिमंत्रित जल छिड़क देने से जिन्न भाग जाता है।

❖❖❖

वीर मुहम्मद मन्त्र प्रयोग

'अन्तरकुशी सत्य खुदाय
तिउंगा कटोरा लोहे के वज्र का ताला,
अल्लाह नबी बैठे रखवाला,
हाथ पांव की उरिया धुरिया,
तैंतीस कोस की बलाय जात रहे,
इस्माईल जोगी की आन है,
वीर मुहम्मदा तेरी आन है।'

इस मन्त्र का विधिवत् प्रयोग करने से मनुष्य के भूत-प्रेत-जिन्नादि समस्त दोषों का प्रभावी ढंग से निवारण किया जा सकता है। इस इस्माईल जोगी मन्त्र से अनेक जोगियों ने भूत-प्रेत उतारने में महारत हासिल की है।

❖❖❖

व्यापार वृद्धिकारक मन्त्र

'ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला
जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा
सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल
पूर्व को धाया देव दानवों को बांधि लाया
दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया
भूत-प्रेत को बांधि लाया
तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया
अयुत पितृ को बांधि लाया
चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया
डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया
चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें
छलाद्रि कोऊ रहन न पावें
रोग-दोष को दूर भगावें
शब्द सांचा, पिण्ड कांचा
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

कपडे के चार पुतले बनावें और इस मन्त्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूंककर उन्हें अभिमन्त्रित कर लेवें। तत्पश्चात् अपने व्यवसायिक स्थल के चारों कोनो में एक-एक पुतला उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए गाड़ दें।

❖❖❖

सर्ववशीकरण मन्त्र

'दुहाई बाबा हनुमान की दुहाई,
मरघट वाली की दुहाई,
चौगान वाली की दुहाई,
मुरदे खाने वाली की दुहाई,
पाँचों पीरों की दुहाई,
सैय्यद बादशाह की दुहाई,
ला इलाही लिल्लाह
मोहम्मद उर रसूल लिल्लहा,
दुहाई पवन की,
दुहाई बावरी की,
मीरा साहिबा की दुहाई,
कालका माई की दुहाई,
नगरकोट वाली की दुहाई,
बाबा बालकनाथ की दुहाई,
गुरु गोरखनाथ की दुहाई,
अलखिया बाबा की दुहाई,
मरघट वाली की दुहाई,
भैरों काली की दुहाई,

बंगाली बाबा की दुहाई,
इस्माईल जोगी की दुहाई,
पहलवान की दुहाई।'

किसी भी सूर्यग्रहण के अवसर पर सम्पूर्ण ग्रहण काल में उक्त मन्त्र को निरन्तर जप करके मन्त्र को सिद्ध कर लें। खाने की वस्तु (लौंग, सुपारी, इलायची, मिठाई, टॉफी, चॉकलेट, पान इत्यादि) पर उक्त मन्त्र को लगातार इक्कीस दफा पढ़कर अभिमन्त्रित कर लेवें और जिसे वश में करना हो, उसे वह वस्तु किसी भी तरह खिला देवें। कहते हैं कि इस्माईल जोगी लोगों की भलाई के लिये अनेक दुष्ट लोगों को इस प्रयोग द्वारा वश में करके मनमाफिक काम करा लेते थे।

❖❖❖

धन लाभ मन्त्र

'या मुसब्बिब वल असबाल'

इस मन्त्र को किसी सादे कागज पर ५०१ दफा लिखकर सिद्ध कर लें। तत्पश्चात् एक अन्य कागज पर इस मन्त्र को लिखकर घर में पूजा-स्थल पर रखने से घर में सुख-शान्ति में वृद्धि और धन लाभ होने लगता है।

❖❖❖

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

'बैठे चबूतरे पढ़े कुरान,
इस्माईल जोगी का ये फरमान,
हजार काम दुनिया का करे,
एक काम मेरा कर,
न करे तो तीन लाख तैतीस हजार
पैगम्बरों की दुहाई।'

किसी भी शुभमुहर्त में इस मन्त्र को ५१००० दफा जप करके सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् जरूरत के वक्त इसे पढ़ें।

❖❖❖

वशीकरण मन्त्र

'अल्लाह बीच हथेली,
मुहम्मद बीच कपार,
उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार।
मजे करे मार मार,
उसे मेरे बाएं कदम तेरे डार,
जो न माने मुहम्मद की आन,
उस पर पडे बज्र का बान,
बहक्के लाइल्लाह अल्लाह,
है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।'

किसी भी रविवार से आरम्भ करके शनिवार तक प्रतिदिन ११०१ की संख्या में उपरोक्त मन्त्र का जप एक निश्चित समय पर करें। लोबान की धूनी देवें, अगरबत्ती जलाकर रखें तथा अपने पास मिठाई रखें। किसी भी खाने की वस्तु पर सात दफा उपरोक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें और वह वस्तु जिसे भी खिलायेंगे, वह व्यक्ति वशीभूत होगा।

❖❖❖

सर्वकामना पूरक मन्त्र

'मखनी हाथी जर्द अम्बरी,
उस पर बैठी कमाल खां की सवारी,
कमालखां मुगल पठान,
बैठे चबूतरे पढ़े कुरान,
हजार काम दुनिया का करे,
एक काम मेरा कर,
न करे ता तीन लाख तैंतीस हजार
पैगम्बर की दुहाई,
तेरे पैगम्बरों की दुहाई।'

प्रतिदिन नियमपूर्वक अधिकाधिक संख्या में इसे जपने से अत्याधिक लाभ होता है। यह अम्बरी शाबर तन्त्र है। इसके जाप से चमत्कारी परिणाम मिलते हैं। इसका एक बार जपना ही एक हजार जप के समान है। अपने पीर को मन में याद करते हुये इसका जाप करें।

❖❖❖

वशीकरण हेतु

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आलमोसि हो वल्लाह।'

किसी भी जुम्मे (शुक्रवार) के दिन इसका जाप आरम्भ करके चालीस दिनों तक प्रतिदिन एक माला इस मन्त्र की जपने से ४० दिन पश्चात् यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। वशीकरण हेतु किसी भी खाने-पीने की वस्तु को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फूँक मारकर इच्छित स्त्री-पुरुष को खिला देने से वह वशीभूत हो जायेगा।

❖❖❖

सकुशल यात्रा हेतु

'शेख फरीद की कामरी अंधियारी निशा
तीन चीज बराय ओग नमो स्वाहा।'

सर्वप्रथम किसी भी शुभ समय में उक्त मन्त्र को ११००० दफा जप करके सिद्ध कर लें। तत्पश्चात् जब कभी यात्रा पर जायें तो जाने से पूर्व यह मन्त्र तीन दफा अवश्य पढ़कर ही यात्रा आरम्भ करें। पुराने समय में जोगी लोग यही मंत्र जपकर लम्बी यात्रा पर निकलते थे।

❖❖❖

सुपारी वशीकरण मन्त्र

'अमुक गुरु गुफतार जाग-जाग
अलाउद्दीन शैतान सात बार
अमुक के जिपा आन जो न माने तो
अम्मा की तलाक हमशीरा की तलाक।'

इस मन्त्र को किसी भी जुमेरात को ११४४ दफा पढ़कर सिद्ध कर लें। अब किसी साबुत सुपारी को ३१ दफा उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लें। इस सुपारी को जिसे भी खिला देंगे, वह वशीभूत होगा।

❖❖❖

स्त्री वशीकरण मन्त्र

'बड़ पीपल का था जहां बैठा
अजामील शैतान मेरी शबीह
मेरी सूरत बन 'अमुक' को जा रान
जो राने तो धोबी की नाद
चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े
जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं
अपने काज को मेरा काम न होगा
तो आनसी में तेरा दामनगीर रहूंगा।'

किसी भी माह के कृष्णपक्ष के शनिवार से आरम्भ करके ३१ दिनों तक अर्द्धरात्रि के वक्त २१ राई के दाने हाथ में लेकर प्रत्येक दाने को उक्त मन्त्र से २१ दफा अभिमन्त्रित करके साध्य स्त्री का नाम लेते हुए अग्नि में डालते जायें। इस प्रबल प्रयोग के प्रभाव से साध्य स्त्री अवश्य ही साधक के वशीभूत हो जायेगी।

❖❖❖

मुसीबत दूर करने हेतु संकट मोचक मन्त्र

इलाही बहुर्मत सईद मही अलदीन
इलाही बहुर्मत शेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गौस मही अलदीन
इलाही बहुर्मत ख्वाजा मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गरीब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मसकीन मही अलदीन
इलाही बहुर्मत लेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत कुतुब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मखदूम मही अलदीन
इलाही बहुर्मत दरवेश मही अलदीन
इलाही बहुर्मत वली मही अलदीन

इस मन्त्र के द्वारा समस्त परेशानियों से सरलता से छुटकारा पाया जा सकता है। किसी भी नौचन्दी जुमेरात से नियमित इस मन्त्र का जप आरम्भ कर दें और जब तक मुसीबतें/परेशानियाँ दूर न हो जायें, तब तक प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक इस मन्त्र का जप करते रहें।

❖❖❖

भूत प्रेतादि दोष नाशक गंडा

'ओम नमो आदेश गुरु को,
लड़गढ़ी सों मुहम्मद पढाण,
चढया, चढया श्वेत घोड़ा, पलाण,
भूत बांधि, चौंसठा जोगिनी बांधि,
अड़सठ स्थान बांधि, बांधि,
बांधि रे चोखी तुरकिनी का पूत,
बेगि बांधि, जो तू न बांधे
तो अपनी माता की शैय्या पर पांव धरे,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस प्रयोग को करते समय आमिल (तांत्रिक) को अपने पास दीपक जलाकर रखना चाहिए, लोबान की धूनी देवें तथा समीप में थोड़ी मिठाई अवश्य रखें। अब रोगी के सिर से लेकर पाँव तक की लम्बाई का सात रंग वाला डोरा नाप लेवें और उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए सूत के डोरे में ३१ गांठें लगाकर गण्डा तैयार कर लें। इस प्रकार से तैयार गण्डे को उस रोगी के गले में पहना देवें। गण्डे के प्रभाव से रोगी की समस्त ऊपरी बाधायें दूर हो जाती है।

❖❖❖

भयनाशक अमल

इसिबियल्लाहु व नेमल वकील।

यदि किसी जालिम द्वारा यातना पहुँचाने का डर हो तो प्रायः ये कलमें पढ़ने चाहिए। इनके जाप से किसी प्रकार की तकलीफ नहीं पहुँचेगी।

❖❖❖

दुःख दर्द निवारक अमल

जो आदमी बहुत अधिक दुःख-दर्द का शिकार हो या कोई ऐसी मुहिम उसके सामने हो, जिसका सुधार उसकी ताकत से बाहर हो तो उसे चाहिए की सुबह की नमाज पढ़कर एक सौ बार यह मन्त्र पढ़े-

ला हवला वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहित अलिय्यिल अजीमव्या हरयु या कय्यूम या फरदु या वितरा या अ-ह-दु-या-स-म-दु।

इंशाअल्लाह इस्माईल जोगी के तिलिस्म से वह पीड़ित व्यक्ति हर प्रकार के दुःखों से निजात पा जाएगा।

गरीबी दूर करने हेतु

जो आदमा अपनी गरीबी से तंग आ गया हो। उसे चाहिये कि अधिकांश समय में यह दुआ पढ़ते रहे। खुदा के हुक्म से उसकी तंगी आसानी में और उसकी गरीबी मालदारी में बदल जायेगी।

व मा काइमिल इज्ज वलगुल्का वल बका या जुल जलाली वल जवदि वल फजली वल अताया व जुल अर्शुल हुदा या फजलुललिमा युरीद।

❖❖❖

इस्माईल जोगी का अघोर मन्त्र

यह मन्त्र हमारे मुर्शिद ने हमें दिया था। इससे इस्माईल जोगी की कृपा प्राप्त होती है। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर दुनिया की कोई ताकत व्यक्ति को डरा नहीं सकती। इस मन्त्र के लिये धूना जलाकर देसी घी का चिराग जलाकर रखें। भगवे कपड़े पहनकर रखें। इस मन्त्र की पांच माला जप करें। जमीन पर सोयें, झूठ न बोलें। इस मन्त्र को काले हकीक की माला से जपें।

सत नमो आदेश,
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश
ॐ गुरु जी, लाल चौकी, पचरंगी पाया,
बंगाल से इस्माईल जोगी आया,
छीनी छीनी कंकरी, भीनी भीनी चाल,
लाल जूती पहने, होके काले घोड़े पर सवार,
माथे पर साफा, कानों में कुण्डल,
हाथ में तलवार
छप्पन सौ जादू तेरे आगे चले,
छप्पन सौ जादू तेरे पीछे,
तेरा सौ पानी भरे, नौ सौ योगिनी,

सरिया कुम्हारन,
कपूरी धोबन, लोना चमारी, गंगन
तेलिन, फूला मालिन,
लाल लुहारी तेरे साथ चले।
म्हारा सेवादार तेरे साथ चले।
तू क्यों मचले, चले रे चले
इस्माईल जोगी चले।
मेरे शब्द पे
सत्य, धर्म, पे, दुखिया की मदद पे न चले,
तो आद्यशक्ति मां कामाख्या की आन,
माता सहजा योगिनी की आन,
मछेन्द्रनाथ की आन,
शब्द सांचा पिंड कांचा,
फुरो मन्त्र गोरखनाथ वाचा, आदेश।
सत्य नाम आदेश।

❖❖❖

कर्ज की अदायगी

यदि कोई कर्ज से परेशान हो तो उसे चाहिए कि नीचे लिखी आयतें पढ़े, इसके असर से वह इन्शाअल्लाह कर्ज से निजात पा जाएगा।

अल्लाहुम्मा अकफिनी बिहलालिका अन हरामिका व अगनेनी बिफजलिका व अम्मन सवाका।

❖❖❖

लाइलाज मामलों का हल

एक रिवायत में आया है कि यदि लाइलाज मामले पेश आयें तो ये कलमें पढ़ना चाहिये-

हसबियल्लाहु नेमल मवला नेमल वकील।

❖❖❖

दु:खों से निजात पाना

जो आदमी हर सुबह-शाम ये कलमें सात-सात बार पढ़ेगा, अल्लाह उसे दुनियाँ व आखिरत के दु:खों से निजात देगा।

हसबियल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अलयहि तवक कलतुव हुवा रब्बूल आर्शिल अजीम

❖❖❖

छोटे बच्चे की सुरक्षा हेतु

बच्चों को हर बला व मुसीबत से सुरक्षित रखने के लिए और बुरी नजर से बचाने के लिए नीचे लिखे कलिमें लिखकर बच्चे के गले में डाल दें।

आऊजु बिकलिमातिल्लाहि मिन शर्रि कुल्ली शयतानिन व हागविन व मिन शर्रि कल्लि अयनिन लाम्पतिन।

❖❖❖

मुकदमे में सफलता प्राप्ति हेतु

यदि कोई मुकदमें में फँस जाये तो जुहर की नमाज के बाद तीन या सात आदमी वुजू करके बैठकर १२ हजार बार यह आयत पढ़ें।

व फवजा इशहदी इन्नल्लाहा बसीरून बिलाणिबाद।

शुय व बाद में ११-११ बार दरूद शरीफ पढ़ें। हर आदमी पढ़ते पढ़ते अगरबत्ती व लोबान की खुश्बू सुलगाता जाये। हर दिन पढ़ने के बाद कोई भी मीठी चीज पर सूरः फतिहा बाँट दिया करे। इन्शाहअल्लाह इससे मुकदमे से निजात हो जाएगी।

❖❖❖

दीवाना करने के लिए मन्त्र

'जल्द जल्द-जल्द कामसा बुवालीत स्वाहा।'

इस मन्त्र द्वारा किसी खुशबूदार चीज पर १००० बार पढ़कर फूँक मारें। अब जिस पर आशिक हो, उसे दें, वह आपके इश्क में दीवाना हो जायेगा।

❖❖❖

माशूका के लिए मन्त्र

'आओ उज्जैन हल स्वाहा।'

इस मन्त्र को सात बार किसी फूल पर पढ़कर माशूका पर मारें और उसे सूँघने को दें, तो वह वशीभूत हो जायेगी।

❖❖❖

मिट्टी द्वारा वशीकरण

'अल्लाहुम्मा या रब्बा जिबरील व
इसराफील व मीकाईल व इजराईल व
हमल कल अर्शि वल कुर्सिय्यि व
मिन्नासि मिन तजहदू मिन
इनि इन्नहु दलो यसरील्लजीना कलम
इज य खनाल अजाबा इन्नाल कुव्वता
ल्लाहा जमीआ व इन्ल्लाहा शदीदुल
शदीदुल अजाब फलां बिन फलां
अला हुब्बा फलां बिन्त फलां।'

यदि किसी को अपनी मुहब्बत में दीवाना करना चाहते हैं तो उसके दाँयें पाँव की मिट्टी लाकर उस पर सात बार उपरोक्त मन्त्र द्वारा फूँक मारें और आग में डाल दें। यह प्रयोग रविवार के दिन करें। इससे प्रेमिका दीवानी हो जायेगी।

❖❖❖

पानी वशीकरण मन्त्र

'हल हल जल जल अममसकी बस कर को'

अगर किसी संगदिल ने रातों की नींद हराम कर दी हो तो इस मन्त्र से पानी पर सात बार फूँक मारें और प्रेमिका को पिला दें। यह प्रयोग सात दिन लगातार करें। प्रेमिका आपके प्यार में बेकरार हो जायेगी।

❖❖❖

प्रेमिका के लिए मन्त्र

'युहिब्बू नहुम कहुबिल्लाहि
वललजीनाआमनू अशददा हुब्बल लिल्लाही।'

इस मन्त्र को १४ बार जुम्मे की रात में किसी मिठाई या मेवे या जो प्रेमिका को पसन्द हो, वह पढ़कर खिलायें। दूसरी तरकीब यह कि हर दिन ४० बार पढ़कर फूँक मारकर वह मीठा खिला दें।

❖❖❖

वशीकरण का लाजवाब मन्त्र

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्मा या
मुसख्खरनी मन फिस्सावाति वलअर्जा
सख्खरनी फलाना अल्लाहुम्मा सबत लहु
फजुल्लहुबी अल्लाहुम्मा इरहम वक बमहलती
अला अमान फी कलबी व अ-लहु
अला रिजकुजा मुहिब्बन अलल
महबूब हबा काना हब्बतन बिहक्क
या अल्लाहु या रहमान या रहीम
बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन'

प्रयोग - यदि रात में २१ बार किसी मीठी चीज के ऊपर यह मन्त्र पढ़कर महबूब को खिला दिया जाये तो वह दिलजान से आशिक हो जायेगा।

यदि शनिवार की रात को फूल के ऊपर ५० बार पढ़कर सुँघाया जाये, तो महबूबा बुलबुल की तरह दौड़ी चली आयेगी।

यदि रविवार की रात को पीपल के सात दानों पर सात बार पढ़कर आग में डाल दें, तो महबूबा परवाने की तरह चली आएगी।

यदि लौंग के ऊपर २५ बार पढ़कर लौंग महबूब को खिला दें, तो महबूब गुलाम बन जाये।

यदि पानी पर ४० बार इसे पढ़कर फूँक मारे और उस पानी से अपना मुँह धोकर महबूब के पास जायें तो वह अपना बन जाता है।

❖❖❖

दरूद शरीफ

आप की आसानी के लिए यहाँ पर हमने दरूद शरीफ का तर्जुमा हिंदी में बताया है, जिसे आप आसानी से पढ़ कर समझ लें। उम्मीद है आपको हमारी इस कोशिश से फायदा होगा।

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा़ स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि सय्येदिना मुहम्मदिन कमा स़ल्लेता़ अ़ला सय्यिदिना इब्राहिमा़ व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राहिमा़ इन्नका़ हमीदुम मजीद

अल्लाहुम्मा़ बारिक अ़ला सय्येदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक-ता़ अ़ला सय्यिदिना इब्राहिमा़ व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राहिमा़ इन्नका़ हमीदुम मजीद

"ए अल्लाह बरकत उतार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्सल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्सल्लम के घर वालों पर जैसे बरकतें की तूनें हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम पर और हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के घर वालों पर बेशक तू ही तारीफ़ के लायक बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।"

नमक वशीकरण मन्त्र

'अलम नशरह लका सदरका वाली सर:'

शाम के बाद प्रेमिका की दिल में कल्पना करते हुए इस मन्त्र को ७ बार पढें और नमक पर फूँक मारें। इस नमक को आग में डाल दें। अल्लाह के करम से कामयाबी मिलेगी।

❖❖❖

मुसीबत टालने का मन्त्र

शेख फरीद की कामरी और अँधियारी निसि।
तीनों चीज बराइये आग ओला-पानी बिस।।

विधि - यदि रास्ते में आग लग जाए या पानी बरसने लगे या ओले पड़े या किसी द्वारा जहर देने का भय हो तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर ताली बजाने से मुसीबत टल जाती है।

❖❖❖

किसी भी मन्त्र के लिए काट का मन्त्र

किसी भी जुमेरात (गुरुवार की रात) को पूरी रातभर इस मन्त्र का जाप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध करने के बाद किसी भी मन्त्र का काट करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग करने से, पूर्व में किसी के द्वारा किये गये मांत्रिक प्रयोग से छुटकारा मिल जायेगा। मन्त्र इस प्रकार है–

तेली की खोपड़ी चाट-चाट के मैदान,
ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान,
मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा,
फातिमा का बेटा,
सूअर खाय हलाल करें
पै दे पांव वज्र की कील तो
माता के दूध को हराम कह।

❖❖❖

रोजगार बाधानाशक मन्त्र

ॐ नमो सात समुद्र के बीच शिला
जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा
सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल
पूर्व को धाया, देव दानवों को बांधि लाया,
दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया
भूत-प्रेत को बांधि लाया
तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया
अपुत पितृ को बांधि लाया
चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया
डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया।
चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें
छल्लद्रि कोऊ रह न पावें
रोग-दोष को दूर भगावें
शब्द सांचा, पिण्ड कांचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरों वाचा।

यदि किसी का धन्धा ठप हो गया हो, दुकान चलती नहीं हो या व्यापार में बाधाएँ आने लगी हों तो इस शाबर मन्त्र का निम्नलिखित प्रकार से

विधिपूर्वक प्रयोग करें।

प्रयोग इस प्रकार है कि कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मन्त्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूँक मारकर उन्हें अभिमन्त्रित कर लें। फिर अपने व्यवसायिक स्थान पर चारों कोनों में एक एक पुतला उक्त मंत्र को पढ़ते हुए गाड़ दें। इसे दिन प्रतिदिन व्यापार स्थल पर जाने से पहले एक माला जप कर लें। इस प्रकार करने से दुकान या व्यापार की समस्त बाधाएँ नष्ट हो जायेंगी।

❖❖❖

परियों का खलल दूर करने का मन्त्र

'ओम् महकूब कूबमह विमलमह
बड़ी मढ़ी में चार देव
कौण-कौण अहंकार महंकार
मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊँ
ख्वाजे मुअय्युद्दीन तुम्हारी शुखबोई में
चढ़ी कमाण सुलैमान परी लंक परी
को हुकम कीजै कौन कौन परी
स्याही परी सबज परी हूर परी
अर्श कुर्स की जाऊली बीबी
फातमा कीली झीली आयना पाना
फल आय लेना सवा सेर शर्बत का
प्याला आप ले आप हाजिर होना
मीर मुहीमुद्दीन मखदूम जहानी या
शेख सरफ अहिया पठाण आप
हाजिर न हो तो रोज
कयामत के दानगीर हूँगा।'

विधि - प्रयोग करने की जगह को अच्छी

तरह से झाड़कर वहाँ आटे का चौमुखा दीपक जलाएँ तथा आठ पान का बीड़ा लेकर तथा शर्बत का कच्चा प्याला भरकर जिस रोगी पर परियों का खलल हो, उसे चौराहे पर खड़ा करके मन्त्र से १५ बार झाड़ दे, फिर सब वस्तुओं को कुएँ की मेड़ पर रख आएँ तो परियों का खलल दूर हो जाता है। इस प्रयोग को करने के लिए आते-जाते समय बोलना नहीं चाहिए।

❖❖❖

भूत वगैरह का गण्डा

'ओम् नमो आदेश गुरु को
लड़गढ़ी सों मुहम्मद चढ्या
श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भूत बांधि
प्रेत बांधि काचिया मसाण बांधि,
चौंसठ जोगिनी बांधि,
अड़सठ स्थान बांधि, बांधि,
बांधि रे चोखी तुरकिनी का पूत,
बेगि बांधि, जो तू न बांधे
तो अपनी माता की शैय्या पर पांव धरे,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

विधि - पांच पैसे की (अब सवा रुपये की) मिठाई तथा दीपक को सामने रखकर लोबान की धूनी दें तथा रोगी की चोटी से लेकर ऐड़ी तक एक सतलड़ा डोरा को नापकर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उसमें २१ गांठें लगायें। फिर उसे रोगी के गले में बाँध दें। इस गण्डे को धारण करने से भूत-प्रेतादि का दोष दूर हो जाता है।

❖❖❖

आफत दूर करने का (दिग्बन्धन) मन्त्र

'याहि सार सार जिन्न देव
परी जबर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द
पसार गिर्द बगिर्द मलायक
असवार दायें दस्त रखे जिब्राईल,
बायें दस्त रखे मीकाईल,
पीठ रखे इस्राफील, पेट रखे इज्राईल,
दस्त चपटसन दस्त दस्त हुसैन
पेशवा मुहम्मद गिर्द बगिर्द अली
ला इलाह कोट इल्लिल्लाह की खाई
हजरत अली की चौकी बैठी
मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।'

विधि- इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर चारों ओर हाथ फिराकर चुटकी बजाने से दिशा-बन्धन होता है अर्थात् सब ओर से आफतें दूर होती हैं। इस मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर लकीर खींचकर उसके घेरे में बैठने अथवा घेरे के अन्दर रहने से देह-रक्षा होती है। मसानादि का प्रकोप होने पर इस मन्त्र का उच्चारण करने से संकट दूर हो जाता है।

❖❖❖

कार्य साधना (1)

'ओम् नमो सात समुद्र के बीच शिला
जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा,
सुलेमान पैगम्बर के चारों दिक चार
मुवक्किल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया,
एक मुवक्किल पूरब को धाया,
देव दानवों को बांधि लाया,
दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया,
भूत-प्रेत को बांधि लाया,
तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया
अऊत पित को बांधि लाया,
चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया
डाकिनी शाकिनी को पकड़ लाया।
चार चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें
छल छिद्र कोऊ रह न पावें,
रोग-दोष को दूर भगावें
शब्द सांचा, पिण्ड कांचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरों वाचा।

विधि - कपड़े के चार पुतले बनाकर आधी रात के समय चारों कोनों में गाढ़ दें, फिर धूप-दीप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र को जपें तो इच्छित-कार्य सिद्ध होता है। पहले इस मन्त्र को ग्रहण, दीवाली या होली की रात में एक लाख की संख्या में जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। यह मन्त्र प्राचीन मुस्लिम जोगियों का सिद्ध मन्त्र है।

❖❖❖

पीर का कलमा

'या जरव्वाजखिज्र मैं तेरा इलियास लिल्लामकादिल चित्त मेरे पास।'

विधि - कुएँ के ठाणे (जगत) पर रात्रि के समय एकान्त-स्थान में लोबान की धूप देते हुए इस मन्त्र की उल्टी माला १०८ बार पढ़ने से २१ दिन के भीतर पीर प्रत्यक्ष होकर प्रश्न का उत्तर देता है। इस मन्त्र की साधना में शुद्धता का ध्यान रखें।

❖❖❖

शत्रुभय-नाशक 'हे' का मन्त्र

'या तनकाफिल बहक्क या है या हमीदो।'

विधि - इस मन्त्र को ४१ दिनों तक नित्य ६२ बार जप करने से शत्रु का भय दूर हो जाता है। इस मन्त्र के साथ भी 'बिस्मिललाह' और दरूद पढ़ने का नियम पूर्ववत् ही समझना चाहिए।

❖❖❖

बच्चों के लिए गंडा

'बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध,
कीड़े और मकोड़े का बंध,
ताप और तिजारी का बंध,
जूड़ी और बुखार का बंध,
नजर और गुजर का बंध,
दीप और मूठ का बंध,
कीये और कराये का बंध,
भेजे और भिजाये का बंध,
नावत पर हाथन का बंधन बंध,
तो बांध मौला मुर्त्तजा अली का बंध,
राह और बाट का बंध,
जमीन और आसमान का बंध,
घर और बाहर का बंध,
पवन और पानी का बंध,
कूवा और पनिहारी का बंध,
लौह और कलम का बंध,
बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध।'

विधि - रोगी को एड़ी से चोटी तक डोरे से नापकर इस मन्त्र द्वारा उसमें ७ गाँठ लगायें तथा सवा किलो मिठाई मँगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बालको में बाँट दें। फिर गण्डे को लोबान की धूनी देकर रोगी के गले में बाँध दें। प्रत्येक गण्डे को इसी विधि से बाँधना चाहिए। यह मुर्त्तजा अली का जबरदस्त शाबर प्रयोग है।

❖❖❖

मनोभिलाषा-पूरक 'जीम' का मन्त्र

'या किलकाईल बहक्क या जीम जा जव्वादी।'

विधि - उक्त मन्त्र को ७ रात तक नित्य ३००० की संख्या में जपने से ख्वाब (स्वप्न) में पैगम्बर साहब के दर्शन होते हैं। यदि मन्त्र को १००० की संख्या में काँसे की थाली पर लिखकर उसे मीठे पानी से धोएँ और वह पानी किसी नामर्द आदमी को पिला दिया जाये, तो उसे मर्दाना ताकत हासिल होती है। काँसे की थाली पर 'जीम' अक्षर फारसी लिपि में ही लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ भी 'बिस्मिल्लाह' और दरूद पढ़ने का नियम पूर्ववत् ही समझना चाहिए।

❖❖❖

मनुष्य को लौटाने वाला 'खे' का मन्त्र

'या महकाईल बहक्क या खे या खलिको।'

विधि - १. इस मन्त्र को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में आकाश के नीचे खड़े होकर १००० की संख्या में जपने तथा जो घर से चला गया हो, उसके मिलने के उद्देश्य से आकाश की ओर फूँक मारने से, वह गया हुआ व्यक्ति शीघ्र घर लौट आता है।

२. 'खे' को फारसी अक्षरों में ६०० की संख्या मे लिखकर तकिया के नीचे रखकर सोए तथा उक्त मन्त्र का १००० की संख्या में जप करने से ख्वाब (स्वप्न) में गये हुए मनुष्य के बारे में सब हाल-चाल मालूम हो जाता है।

❖❖❖

शत्रु नाशक तथा धनवृद्धि कारक 'दाल' का मन्त्र

'या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो।'

विधि - सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पढ़ने से धन की वृद्धि होती है। धन वृद्धि के लिए इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करते रहना आवश्यक है।

सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को ७० बार पढ़कर शत्रु के घर की ओर फूँक मारने से उसका नाश हो जाता है। यह क्रिया ३० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करना चाहिए। इसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' और दरूद पढ़ने का नियम है।

❖❖❖

जाल का मन्त्र

'या जुहराईल बहक्क या जाल या जुल जलाल बलइक्राम।'

विधि - हाकिम की मेहरबानी प्राप्त करने अथवा धन वृद्धि के लिए इस मन्त्र का एक मास (३० दिन) तक नित्य प्रातःकाल ११०० की संख्या में जप करना चाहिए। यदि किसी को वश में करना हो तो इस मन्त्र द्वारा मिठाई को ७०० बार अभिमन्त्रित करके साध्य-स्त्री-पुरुष को खिला देने में वह वशीभूत हो जाता है। इसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' और दरूद पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

शत्रु भय नाशक 'जे' का मन्त्र

'या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियो।'

विधि - इस मन्त्र को एक मास तक नित्य ५०० की संख्या में जपें। नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

गड़ा धन प्राप्त करने हेतु 'रे' का मन्त्र

'या असवा कील बहक्क या रे रहीम।'

विधि - इस मन्त्र को ३० दिनों तक नित्य प्रातःकाल १००० की संख्या मे जपें। अन्तिम दिन एक सफेद रंग के मुर्गे के कान में 'रे' इस मन्त्र को ८०० बार पढ़कर उसे छोड़ दें, तदुपरान्त वह जिस स्थान पर जाकर रुके और जिस जगह अपनी चोंच मारे, वहीं पर धन गड़ा हुआ है, यह समझ लेना चाहिए।

२. फारसी लिपि में 'रे' को किसी मिट्टी की रकाबी पर ६०० की संख्या में लिखने के बाद उसके ऊपर इतना नमक बिछा दें कि अक्षर दिखाई न दें, तदुपरान्त रात के समय उस रकाबी (तश्तरी या प्लेट) को अपने सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में गड़े हुए धन वाला स्थान दिखाई देता है।

❖❖❖

इच्छित अनुभव प्रदायक 'सीन' का मन्त्र

'या हमवाकील बहक्क या सीन या सीमाओ।'

विधि - इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जपने से इच्छित अनुभव प्राप्त होता है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

हृदय दौर्बल्य नाशक तथा शत्रु जिह्वा स्तम्भक 'ज्वाद' का मन्त्र

'या इतराईल बहक्क या ज्वाद या जारो।'

विधि - इस मन्त्र को नित्य १००० बार जपने से दिल की कमजोरी (हृदय दुर्बलता) दूर हो जाती है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

वशीकरण एवं कार्यसाधक 'तोय' का मन्त्र

'या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो।'

विधि - १. किसी कार्य की सिद्धि के लिये कागज के टुकड़ों पर फारसी लिपि में अलग-अलग 'तोय' अक्षर लिखकर उन्हें आटे की गोलियों में दबाकर दरिया (नदी) के पानी में बहा दें, तो ७ दिन के भीतर इच्छित-कार्य सिद्ध हो जाता है।

२. वशीकरण के लिये एक कागज के ऊपर ७०० का संख्या में फारसी लिपि में 'तोय' लिखकर उनके नीचे - **'या इस्माईल फलाने की फलाने के बस में करो बहक्क या तोय या ताहिरो।'**

उक्त वाक्य को लिखकर उस कागज का पलीता बनाकर सुगन्धित तेल में जलायें तथा इत्र, फूल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धूनी दें। इस तरह सात दिनों तक नित्य यही प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है। मन्त्र का जप करते समय जिसे वश में करना हो, दीपक का मुँह उसके घर की ओर रखना चाहिए।

❖❖❖

वशीकरण कारक 'एन' का मन्त्र

'या लौमाईल बहक्क या एन या अजीमो।'

विधि - सफेद कागज के ऊपर कस्तूरी तथा केसर से फारसी लिपि में ७ बार एन लिखकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा ७०० बार फूँक मारें, तत्पश्चात् उसे मिठाई में मिलाकर अथवा पानी में घोलकर जिसे खिला-पिला दिया जायेगा, वही वशीभूत हो जायेगा। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

शत्रु-भय नाशक 'रौन' का मन्त्र

'या लौरबाईल बहक्क या रौन या गुफुरो।'

विधि - महुए के पत्ते पर सफेद कागज पर फारसी लिपि मे ७० बार 'रौन' अक्षर लिखकर उसके ऊपर मन्त्र को १२८६ बार पढ़-पढ़ कर फूँक मारे फिर उस पत्ते या कागज को शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का घर गिर जाता है तथा उसका नाम भी मिट जाता है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

आकर्षण, वशीकरण तथा शत्रु-पीड़ा कारक 'फे' का मन्त्र

'या सरहमा कील बहक्क या फे या फत्ता हो।'

विधि - किसी सफेद कागज पर फारसी लिपि में १००० की संख्या में 'फे' लिखकर उसके नीचे जिस व्यक्ति को आकर्षित या वशीभूत करना हो, उसका तथा उसकी माँ का नाम एवं अपना तथा अपनी माँ का नाम नीचे लिखे अनुसार लिखना चाहिए।

'या सरहमाकील फलानी का बेटा फलाना मुझ फलानी के बेटे फलाने के बस में हो बहक्क या फे या फत्ता हो।'

पिछले वाक्य मे जहाँ फलानी का बेटा आया है, वहाँ जिसे वश में करना हो, उसका तथा उसकी माँ का नाम लिखना चाहिए और जहाँ मुझ फलानी के बेटे फलाने आया है, वहाँ अपना तथा अपनी माँ का नाम लिखना चाहिए।

विद्यावर्द्धक 'गाफ' का मन्त्र

'या हुतजाइल बहक्क या गाफ या गाफियो।'

विधि - सफेद कागज पर फारसी लिपि में २०० की संख्या में 'गाफ' लिखकर उस कागज पर पूर्वोक्त मन्त्र 'या हुतजाइल.....' को ४०० बार पढ़-पढ़ कर फूँक मारे फिर उस कागज को लोबान की धूनी देकर जिस व्यक्ति की दाईं भुजा में बांध दिया जायेगा, उसे बहुत विद्या आयेगी। यह प्रयोग विद्या की वृद्धि करने वाला है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

सर्वप्रियता-दायक 'लाम' का मन्त्र

'या त्वात्वाईल बहक्क या लाम या लतीफो।'

विधि - इस मन्त्र को प्रतिदिन १००० बार पढ़कर अपने ऊपर फूँक मारने वाला व्यक्ति अन्य सभी लोगों का प्रिय बन जाता है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

लोकप्रियता-दायक 'मीम' का मन्त्र

'या रोमाईल बहक्क या मीम महमनो।'

विधि - सफेद कागज पर फारसी लिपि में ९०० बार 'मीम' लिखकर उस पर उक्त मन्त्र को १००० बार पढ़कर फूँक मारें, तदुपरान्त उसे किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें।इस प्रयोग को करने वाला व्यक्ति लोकप्रिय हो जाता है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम भी पालन करें।

❖❖❖

श्रेष्ठ विद्यादायक एवं स्वप्न में उत्तरदायक 'नून' मन्त्र

'या लोलाईल या नून या नूरो।'

विधि - शुक्रवार अथवा बृहस्पतिवार की रात्रि को यह मन्त्र २०० बार पढ़कर सो जाने से इच्छित प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिलता है।

❖❖❖

मनोरथ-पूर्तिदायक 'वाव' मन्त्र

'या रफ्तामाईल बहक्क या वाव या बहावों।'

विधि - इस मन्त्र को पढ़ते हुए कहीं भी जाने से मनोरथ पूरा होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि रास्ते में कोई रोक-टोक न हो। यदि कोई रोक-टोक हो तो उसके सामने ७० बार मन्त्र पढ़ कर फूँक मार देनी चाहिये, तदुपरान्त आगे बढ़ना चाहिए। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम भी पालन करें।

❖❖❖

भवन सुरक्षा-कारक 'हे' मन्त्र

'या दौराईल बहक्क या हे या हादिया।'

विधि - ईंट के ऊपर फारसी लिपि में ७० बार 'हे' अक्षर लिखकर तथा उसके ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र या दौराईल को ७० बार पढ़कर उस ईंट को नींव में गाड़ दें। इससे वह मकान वर्षों तक सुरक्षित व सुदृढ़ रहेगा। ईंट के स्थान पर चार ठीकरियों पर 'हे' अक्षर लिखकर उन्हें भी इसी विधि से नींव में गाड़ा जा सकता है। इस मन्त्र के साथ ही 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

❖❖❖

गृह सुरक्षा कवच मन्त्र

घर बान्धम दोर मान्धम उटन बन्धन आर।
बन्धन करीनू आमी नामे ते अल्लार।
जिब्राईल, मीकाईल, ईस्राईल, आर।
इज़्राईल अल्लार गोलाम हुकुम बर्दार।
बाड़िर चारि कोने ईहादेर राखिया मौजूद।
अल्लाह वो नबीर नामे भेजिया दरूद।
बन्धन करीनूं आमी (फलानार) बड़ी।
मेर करिवे अल्ला आपे पाक बारी।
एई बाड़ीर ऊपर ते भूत-प्रेत डाईने योगिनी,
देव दैत्य यदि थाके केहो।
मारिया गुर्जर बाढ़ी दूर करके देहो।
या अलाहो, माबूद, करीम, रहीम, साबूद,
बहक इल्लल्लाहा मोहम्मदुर रसूलल्लाह।

किसी भी शनिवार या मंगलवार को चार कीलें, मिट्टी के घड़े लाकर उनमें सात गाँवों की मिट्टी लाकर रखें। शनिवार या मंगलवार को ही किसी लोहार के यहाँ से चार लोहे की कांटी बनवायें और सात घाट का पानी तथा बिना फूले सीमल

गाघ की जड़ लाकर इन समस्त वस्तुओं के चार हिस्से करके चारों घड़ों में रखकर प्रत्येक घड़े में तीन-तीन बार उक्त मन्त्र पढ़कर उनका मुँह ढक्कन से अच्छी तरह बन्द करके थोड़ा सा सरसों का तेल घड़ों के ऊपर लगा देवें। अब चारों घड़ों को घर के चारों कोनों में अजान देते हुए एक-एक घड़ा, एक-एक कोने में गाड़ देवें। इस प्रकार यह प्रयोग पूर्णतः गोपनीयता के साथ करें। ऐसा करने से वह घर ताजिन्दगी सभी आफतों से महफूज बना रहेगा।

❖❖❖

घर की रक्षा का मन्त्र

या अल्लाह पाक,
इस आंगन को मैं आज करता हूं बन्द,
हजरत सुलेमानी की बरकत से बन्द,
हजरत मूसा की आज्ञा से बन्द,
हजरत अली की शमेशर से बन्द,
अजरत अहमद के कलाम से बन्द,
या रहमान की रहमत से बन्द,
या करीम से बन्द,
या खालिक की बरकत से बन्द
या मालिक की रहमत से बन्द,
या अल्लाह पाक मालिक रब्बुल गफूर,
हमारे इस दोआ को तू करले कबूल,
बहक्के हक ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदूरसूलल्लाह।

घर की अस्थायी रक्षा करने के लिए यह एक आसान किन्तु शीघ्र प्रभावशाली और विशेष चमत्कारी प्रयोग है। रात्रि में सोने से पूर्व वुजू (हाथ, पाँव, मुँह धोकर) करके ताली बजायें, ताली की आवाज घर के जितने हिस्से तक पहुँच जायेगी, घर का

उतना ही भाग पूर्णतः रक्षित रहेगा। इस प्रयोग को रात्रि में नियमपूर्वक करते रहने से किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होगी।

❖❖❖

आग कम करने का मन्त्र

रहमकुन अए इलाही पाक बारी,
इस घर के ऊपर अपने फजल से
कर तू रहमत-जारी।
जैसी रहमत की थी तूने खलील पर,
वैसी रहमत कर तू ए परवरदिगार।
बहके इकला इलाहा इल्लाल्लाहा
मुहम्मदुर रसूलल्लाह।

यदि आचानक किसी के घर में आग लग जाये, तो उसे चाहिए कि तुरन्त वुजू (हाथ, पाँव, धोकर) तथा पाक-साफ होकर थोड़ी-सी-साफ-सुथरी मिट्टी अपने हाथों में लेवें और इक्कीस बार उक्त मन्त्र को पढ़कर मिट्टी पर फूँक मार दें, तो आश्चर्यजनक रूप से उस घर में लगी हुई आग में कमी आ जाएगी।

❖❖❖

देह-रक्षक मुस्लिम मन्त्र

दोआ आयतल कुर्सी बन्दन कोरान,
बाहिरे-भीतरे सुब्हान, लोहे की कोठरी,
ताम्बे का किवाड़,
सामने की छड़ी पैगम्बर बाड़ी,
अमुकेर शरीर दिनेर चारि पहर,
रातिर चारि पहन किन्छू नाहिं देखी खाली,
बहके हक लाएलाहा इल्लल्लाह
मुहम्मदुर रसूलल्लाह।

एक बुजुर्ग मौलवी ने इस मन्त्र के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक अत्यन्त ही सरल एवं हानिरहित होने के साथ-साथ शीघ्र प्रभावशाली रक्षक मन्त्र है। उस मौलवी के कथनानुसार प्रतिदिन नमाज के पूर्व इस मन्त्र को जप करके अपने दोनों हाथ पूरे शरीर पर फेर लेने से साधक का शरीर तमाम तरह की भौतिक तथा पारलौकिक बाधाओं से पूर्णतः महफूज हो जाता है। फिर उसे किसी भी प्रकार की मानसिक, शारीरिक और आत्मिक परेशानी उत्पन्न नहीं होती है।

❖❖❖

पीर-पैगम्बर बुलाने का मन्त्र

ॐ बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम, या जिब्राईल,
या तत काफलया, अज्राईल,
या मेखाईल बहक, या बन्धु हयन-छ्वयन,
ईस्मन-ईस्मन, बहक लाइल्लाहो इल्ला हो,
मोहम्मद रसूलल्लाहों खतुमां सलेमान
बिंदाउद अले सलाम हजरकाब्द, हजरकाब्द।

यह एक अत्यन्त चमत्कारी मन्त्र प्रयोग है। प्रतिदिन रात्रि में सोते समय धूप-लोबान करके चालीस दिनों तक नित्य प्रति रात्रि में १०८ दफा इस मन्त्र का पाठ करते रहें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् पीर-पैगम्बर अथवा कोई पवित्र रूह सफेद वस्त्र धारण किये हुए साधक के समक्ष प्रकट होकर उसे मुँह माँगा वरदान देने को कहेगी। साधक को ऐसे में चाहिए कि वह तुरन्त ही कोई अच्छी मुराद माँग ले यदि उसने कोई वरदान नहीं माँगा तो वह रूह साधक पर नाराज होकर उसका अनिष्ट भी कर सकती है। इस प्रयोग का विशेष सावधानी के साथ किसी आमिल के निर्देशन में ही करना चाहिए।

❖❖❖

पान वशीकरण मन्त्र

ॐ श्री रामनागरबेली अकनकबीरी,
सुनिये नारी बात हमारी,
एक पान रंग मंगाय,
एक पान से जसो लावै,
एक पान मुख बुलावै,
हमको छोड़ि और को देखें,
तो तेरा कलेजा मोहम्मदा पीर छक्खै।

इस मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित पान जिस किसी भी स्त्री को खिलाया जाएगा तो निश्चित ही वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

इस प्रयोग के तहत तीन नागरबेल के पान लेकर उक्त मन्त्र को इक्कीस दफा पढ़कर उन पानों को दम करके उनमे से एक पान अथवा तीनों ही पान जिस किसी स्त्री को खिलावें तो वह वशीभूत हो जायेगी। ध्यान रखें कि इस साधना का दुरुपयोग न करें; अन्यथा हानि भी हो सकती है। इस यन्त्र को पानी में घोलकर रोगी-व्यक्ति को पिलाने से उसका रोग दूर हो जाता है।

❖❖❖

मनोकामना पूरक प्रयोग

सर्वप्रथम उड़द के सवा पाव आटे में खमीर उठाकर तथा उसकी रोटी बनाकर उसे दो तह वाले एक सफेद रूमाल में रक्खें। फिर उसमें से चौथाई रोटी की जंगली झरबेरी के बराबर की १०१ गोलियाँ बनाकर प्रत्येक गोली निम्नांकित मन्त्र से ग्यारह-ग्यारह बार अभिमन्त्रित करें, तदुपरान्त शेष रोटी सहित सभी गोलियों को नदी में मछलियों को खाने के लिए डाल दें। इस प्रकार ४० दिन तक यह प्रयोग करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है तथा रोजी भी प्राप्त होती है।

'या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो।'

उक्त मन्त्र के आरम्भ में एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा आदि और अन्त में ७-७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

❖❖❖

दरिद्रता-नाशक प्रयोग

प्रातःकाल किसी से बातचीत करने से पूर्व हाथ, मुँह धोकर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बाद निम्नलिखित मन्त्र का १२०० बार जप करें-

'या ककीयो या गनीयो या मलीयो या बकीयो।

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में २१-२१ बार 'दरूद' का पाठ भी अवश्य करना चाहिये। इस प्रयोग को निरन्तर ४० दिनों तक करते रहने से दरिद्रता दूर होती है। यदि इस प्रयोग को प्रतिदिन किया जाये, तो दरिद्रता से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

❖❖❖

रोजी का प्रयोग

रोजी मिलने के लिए सर्वप्रथम पहले एक बार एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को ७ दिनों तक, नित्य १००० की संख्या में जपना चाहिए। मन्त्र जप के आरम्भ तथा अन्त में तीन-तीन बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

'या वुद्दूह या या हयियो या कयियूमो या अल्लाहों या फरदो या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहदो या लमयलिदो बहम युलद बलमयकुन लुहू कुफवन अहद।'

उक्त मन्त्र के प्रयोग से रोजी प्राप्त होती है। जब रोजी मिलना आरम्भ हो जाये, तब नित्य १०८ बार इस मन्त्र का जप करते रहना आवश्यक है।

❖❖❖

रोजगार मिलने का प्रयोग

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो अल्ला हुस्नसल्ला मुहम्मद नव धारक नसल्लम।

विधि - शुक्रवार या बृहस्पतिवार से इस प्रयोग को आरम्भ करना चाहिये। सर्वप्रथम सवा पाव आटे की दो रोटियाँ हाथ से बनाकर उन्हें एक सफेद रूमाल में रक्खें फिर उन रोटियों से झरबेर के बराबर की १०१ गोलियाँ बनायें तथा उनमें से प्रत्येक गोली को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। तदुपरान्त उन गोलियों तथा शेष बची हुई रोटी को रूमाल में रखकर किसी नदी के किनारे पहुँचे और गोलियों को नदी की धारा में फेंककर शेष रोटी को टुकड़े-टुकड़े करके पक्षियों को खिला दें। उक्त प्रयोग को ४० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करते रहने पर रोजगार की प्राप्त होती है। मन्त्र के आरम्भ में पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा आदि और अन्त में ७-७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

❖❖❖

मनोकामना पूर्ति मन्त्र

पहले एक पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ७ बार पढ़ने के बाद दोनों हथेलियों को अपने मुँह पर फेरकर जिस राजसभा में पहुँचा जायेगा, वहीं सफलता प्राप्त होगी तथा सब लोग मोहित (प्रसन्न) हो जायेंगे। मन्त्र इस प्रकार है–

सलामुन कौलुनमिनरर्विहीम तनजीकुल अजीजुर्रहीम।

इस मन्त्र के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

❖❖❖

सभा-मोहन मन्त्र

कालूँ मुँह घोई करूँ सलाम मेरी आँखों में सुरमा बसे जो देखे सो पाँथन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्तगीर की छूः छूः छूः।

विधि - शुक्रवार के दिन सवा लाख गेहूँ के दाने लेकर एक-एक दाने पर एक-एक मन्त्र पढ़ें। फिर उनमें से आधे दानों को पिसवाकर उस आटे में घी, शक्कर मिलाकर हलुवा तैयार करें और गौसुल आदम दस्तगीर को नियाज देकर उसे स्वयं खायें। फिर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर अपनी आँखों मे सुरमा लगाकर जिस सभा में भी पहुँचेंगे, वहाँ के सब लोग मोहित हो जायेंगे।

❖❖❖

राज्य कर्मचारी वशीकरण प्रयोग

'बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख्त तुम हो जाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना।'

उक्त मन्त्र में जहाँ फलाना शब्द आया है, वहाँ जिस राज्य-कर्मचारी को वश मे करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग विधि - एकतालीस बिनौले लाकर आधी रात के समय उनमें से एक-एक बिनौले को एकतालीस-एकतालीस बार अभिमन्त्रित करके अग्नि में डालता जाये। इस क्रिया को निरन्तर तीन दिनों तक करते रहने से इच्छित राज्य-कर्मचारी वशीभूत हो जाता है।

साधना विधि - कार्य साधना से पूर्व २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को २१ बिनौलों पर २१-२१ पढ़कर अग्नि में आहुति देने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

❖❖❖

वशीकरण कारक काले कलवे का प्रयोग

काला कलवा चौसठ बीर
मेरा कलवा गंगा तोर जहाँ को भेजूँ
वहाँ को जाइ,
मास मच्छी को छुवन न जाय,
अपना मारा आपहि खाय,
चलत बाण मारूँ मार
उलट मूँठ मारूं मार
कलवा तेरी आस चार
चौमुखा दीया न बाती जा मारूँ
वाही की छाती इतना काम मेरा न करे
तो मुझे अपनी माँ का दूध पिय़ा हराम है।

साधना विधि - घी का दीपक जलाकर गूगल की धूनी दें तथा एक जोड़ा फूल और मिठाई रख कर २१ दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में उपरोक्त मन्त्र जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

❖❖❖

इस्माईल जोगी वशीकरण प्रयोग

लाइलाह इल्लिलल्लाह धरती से आसमान तक
लाइलाह इल्लल्लाह अर्श से कुर्सी तक
लाइलाह इल्लल्लाह लोह से कलम तक
लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह
फलानी बेटे के बेटे को
फलाने को मेरे बस में कर।

इस अद्‌भुत इस्माईल जोगी के वशीकरण मन्त्र के लिए सर्वप्रथम उपरोक्त मन्त्र का २१ दिनों तक नित्य १४४ बार जप करें। मन्त्र जप से पूर्व एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा आदि और अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है। उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलानी' के बेटे 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ पर जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसकी माँ के नाम के साथ उसका नाम का उच्चारण करना चाहिए। उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाये, तब इसी मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित पानी या मिठाई को जिस अभिलाषित व्यक्ति को खिला-पिला दिया जायेगा, वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

❖❖❖

स्त्री मोहन हेतु इस्माईल जोगी के प्रयोग

1. अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार। मुझे करे मार मार उसे बाँधे कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर ब्रज का बान, बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद तेरा रसूलिल्लाह।

विधि - किसी भी शनिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक प्रतिदिन १०१ बार इस मन्त्र का जप करें। जप करते समय घी का दीपक तथा मिठाई अपने सामने रक्खें तथा लोबान की धूनी दें। इस प्रकार आठ दिन तक साधना (जप) करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

2. कामरूदेस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी ने दिया पान का बीड़ा, पहला बीड़ा आती जाती, दूजा बीड़ा दिखावें छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाई, फलानी खाय पास चली आई, दुहाई श्री गुरू गोरखनाथ की।

विधि - दीपावली की रात में यह मन्त्र १४४ बार पढ़ने से सिद्ध हो जाता है। फिर आवश्यकता

के समय बिना कटे पान के बीड़े को इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिस स्त्री को खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी। इस मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ अभिलाषित स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

3. **कामरूप देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माईल जोगी, इस्माईल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल तोड़े लोना चमारी, जो इस फूल की सूँघे बास, तिस का मन रहे हमारे पास, महल छोड़े, घर छोड़े, आँगन छोड़े, लोककुटुम्ब की लाज छोड़े, दुहाई लोना चमारी की धनन्तरि की दुहाई फिरै।**

विधि - शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक नित्य १४४ बार इस मन्त्र का जप करें तथा धूप-दीप और मदिरा रखकर पूजन करें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर किसी फूल को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके साध्य स्त्री को दे दें, तो वह उस फूल को सूँघते ही वशीभूत हो जायेगी। यह लूना चमारी का प्रसिद्ध मन्त्र है।

4. **बड़ पीपल की थान, जहाँ बैठा अजाजील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन फलानी को जा रान,**

जो राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े तो राजा चाहे राजा का, मैं चाहूँ अपने काज को, मेरा काम को, मेरा काम न होगा तो आनसी मैं तेरा दामनगीर रहूँगा।

विधि - किसी भी शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक, आधी रात के समय नंगा होकर ११ राई के दानें हाथ में लेकर, प्रत्येक दाने के ऊपर उक्त मन्त्र को ग्यारह-ग्यारह बार पढ़कर, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। उक्त क्रिया को नित्य नियमित रूप से करते रहने पर वांछित-स्त्री वशीभूत हो कर स्वयं सामने उपस्थित होती है।

❖❖❖

वेदना निवारण मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी बड़ी अदरख पतली पतली रेश बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का वचन जाय खाली पिया पञ्च मुण्ड के बाद पर ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै।

प्रयोग विधि - अदरक को तीन बार पढ़कर रोगिणी को खिलाने से ऋतुमती (माहवारी) की वेदना शान्त होती है।

❖❖❖

कामिनी मनमोहन मन्त्र

अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार। उसका नाम मोहिनी जगत् मोहे संसार। मोह करे जो मार मार उसे मेरे बायें पोत बार डार। जो न माने मुहम्मद पैगम्बर की आन, उस पर मुहम्मद तेरा रसूलिल्लाह।

यह मन्त्र भी एक इस्लामी चमत्कार है। इसको भी शनिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक नित्य धूप, दीप, लोहबान सुलगाकर एक बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो, तब स्त्री के पैरों तले की मिट्टी उठाकर उस मिट्टी पर सात बार मन्त्र पढ़कर जिस कामिनी (महिला) के भी शीश पर डालेंगे, वह मोहित हो जायेगी।

❖❖❖

दुश्मनी के लिये

तरकीब - साबुत नमक की सात कंकरियाँ लेकर दोनों आदमियों के नाम उनकी माँओं के नाम के साथ यह आयत पढ़कर हर कंकरी पर सात पर दम करें और आग में डाल दें, दोनों के बीच दुश्मनी हो जायेगी। यह अमल शनिवार या मंगलवार को करना चाहिये।

'व ज अलना मिम्बयनी अयदीहिम सददव्व मिन खलफिहिम सददन फ-अगशयना हुम फहुम ला युबसिरून'

विशेष तरकीब - यदि दो लोगों के बीच अलहदगी कराना हो तो इस सूरः मुबारक (सूरः अलकारिआ पारा अस्म) को एक कच्ची ईंट पर सियाही से लिखें और दरिया में डालें। यह अमल सात दिन तक बराबर करें। इन्शा अल्लाह उसी हफ्ते में कामयाबी हासिल होगी। सूरः मुबारक पूरी लिखने के बाद उसके नीचे यह इबारत लिखें-

अजबुगज वन निफाकु वल अदावतु बयना फलां बिन फलां।

❖❖❖

शत्रुनाशक प्रयोग

'ला इलाहा अन्हस-इल्लल्लाहु मनहस या मुहम्मद रसूलिल्लाहि हस फलां आदमी को मेरे पास लाओ हस'

इशा की नमाज के बाद ४ काली मिर्च पर ११-११ बार इसे पढ़कर हर एक मिर्च पर दम करें और आग में डाले। इस अमल को ११ दिन तक लगातार करें। यह आजमाया हुआ है।

सुम्मन बुकसम अुमयुन फलुम ला यरजिऊन
दुश्मन की हार व पराजय के लिये दिन के बारह बजे इस अमल को ११० बार पढ़े और हर दहाई पर दुश्मन की कल्पना करके ३-३ चोटें मारते जायें और हर दहाई पर चोटें जो नमाज पर मारनी चाहिये लेकिन आखिरी दहाई पर दुश्मन के चेहरे की कल्पना करके जमीन पर चोटे मारें और हाथ को जमीन पर बार बार मलें। शुरू व अन्त में ११-११ बार यह दरूद शरीफ पढ़े।

'अल्ला हुम्मा सल्ली अला मुहम्मद्दिन सय्यिदिल काहिरीना अला आदाई रबिबल आलमीन०'

❖❖❖

रोजी में तरक्की के लिये

तरकीब - जिस आदमी का रोजगार न हो या व्यवसाय धीमा हो तो यह अमल बड़ा काम करता है। सुबह नमाज के बाद या इशा की नमाज के बाद इसे पढ़ा जायेगा। तादाद एक सौ एक बार। इसके शुरू व अन्त में ११-११ बार दारूद शरीफ पढ़ा जाये। चालीस दिन पूरे भी न होंगे कि इन्शा-अल्लाह गैब से कोई सामान या नौकरी या काम जरूर मिल जायेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० या मुसब्बिबल असबाब व या मुफत्तिहल अबवाब व या मुकल्लिबल कुलूब व या दलीलिल मुतहाय्यिरीन अरशिदनी व या गयासल मुसतगसीना अगिस्नी तवक्कलतु अलयका या रब्बि उफव्विजु अमरि इलयका। ला हवला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लहित अलिय्यिल अजीम० बिहकिक इय्याका नाअबुदू वइय्याका नसतअीन०

तरकीब - यदि इस मामूली तरीके से (रोजाना पढ़ना है) पढ़ना है तो इसकी तरकीब यह है कि फज्र की नमाज के बाद पहले या लतीफ १२९ बार पढ़कर बिस्मिल्लाह के साथ 'अल्लाहु लतीफफुम **बिइबावादिहि यरजुकु मरूयशाउ० वहुवल कविरूयुल**

अजीज' एक बार पढ़ें। इसके बाद इस दुआ को ११ बार पढ़कर दुआ करें और यदि किसी मामले या जबरदस्त काम के लिए इसे पढ़ना है तो इस दुआ को ३३०३ बार एक ही बैठक में (अर्थात् जिस पहलू से बैठें उसी पहलू पर बैठे रहें) पढ़ें इन्शा अल्लाह मुराद पूरी होगी।

'अल्लाहुम्मा या मुस ख्खरसमा वातिरसबअी वल अर्जय नस्सीबअी व मन फीहिन्ना व मन अलयहिन्ना साख्खिर ली कुल्ला शयईनमिन इबदिका मिम्मा फी बर्रिका व बहर्रिका हत्ता ला यकून शयइन फिल कवमि काना मुतहर्रिकन अव बातिनन इल्ला सख्खरतहु ली बिबरकति इस्मिल्लती फिल मकयूनि या अल्लाहु या हरूयु या कय्यूम इन्नामा अमरुहु इजा अरादा शयअन अय्यकूला लहु कुन फ-यकून०फसुबहानल्लजी म-ल-कूतु कुल्लिशयइन व इलयहि तुरजऊन'।

इस अमल को नौचन्दी जुमेरात से शुरू करना चाहिये। महीने के शुरू में। यह एक आजमाया हुआ जबरदस्त अमल है, जिससे हमारे उस्ताद ने अनेक लोगों का भला किया है।

❖❖❖

रोजी की तरक्की का उपाय

तरकीब – 'या वहहाबु' अगर कोई चाहे कि मोहताजी दूर हो जाये और इंसान मालदार हो जाये तो इस नाम को हर दिन बेनागा चालिस रोज तक बराबर चार हजार चार सौ चवालीस बार पढ़े खुदा के फज्ल से एक ही हफ्ते में रिज्क की तरक्की हो जायेगी।

यह दुआ हजरत सुलेमान अलैहि० की है। शुरु व अन्त में दस-दस बार दरूद शरीफ पढ़े। इससे व्यक्ति बहुत मालदार हो जायेगा और पढ़ने के वक्त मुवक्किल को कसर दे दे और शुरू व अन्त में इस राविश को शुरू करे।

या रफतामाइला व अकसमतु अलयकुम व अगिसनि अलयकुम बिहविक या बहहाबु०

❖❖❖

बुखार से बचने के अमल

तरकीब - इन आयतों को लिखकर बुखार वाले रोगी के गले में डाल दें। अल्लाह ने चाहा तो बुखार जाता रहेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० बरा अतुम मिनउल्लाहिल अजीजिल हकीमि बफुलान बिन फलां (इसकी जगह रोगी व उसकी माँ का नाम लिखे) मिन कुल्ली मा यऊजु बिइनिल्लाहि तआला अव कल्लजी मर्राअला करयतिव वहिया खवियतुन अला उरूशिहा काला अन्ना युहयि हाजिहिल्लाहु बाअदा मवतिहा फअमातहुल्लाहु आमिन फनजुर इला तआमिका वशरबिका लम य-त-सन्नह वन्जुर इलाहिमारिका व लिनज अलका आयतल लिन्नसि वन्जुर इलल इजमि कयफा नुनशिजुहा सुम्मा नकसूहा अहमा० फलम्मा०

तबययना लहु-काला आलुम अन्ना अल्लाहु अला कुल्ली शयइन कदीरुन कुलना या नारुकनि बरदव व सलमान अला इब्राहिमा व आरादूबिहि कयदन फ न ज- अल नाहुमुल अखसरीना०

तरकीब - जिसे बुखार आता हो तो वह रोगी इस तावीज को लिखकर गले में डाले या पाक

धज्जी में लपेट कर मर्द अपने दाँयें बाजू पर और औरत अपने बाँयें बाजू पर बाँधें। तावीज में रोगी का नाम और उसकी माँ का नाम अवश्य लिखें इन्शाअल्लाह बुखार जाता रहेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम० बरा नारुकूनी बरदव वसलामा अला इब्राहिमा व आरादू बिहिकयदन फज- अलनाहुमुल अखसरीना०

❖❖❖

दिल की घबराहट के लिये अमल

तरकीब - जिसका दिल घबराता हो या दिल में अधिक धड़कन हो उसके लिये इस इबारत को तीन तश्तरियों पर लिखकर दिन में तीन बार सुबह-दोपहर-शाम रोगी को पिलाये। दूसरी तरकीब यह है कि ताम्बे की तख्ती बनवाकर उस पर इबारत खुदवाये और उसमें कुंडे लगवाकर गले में डाल दे या तावीज को कपड़े में सीकर गले में डाले इस तरह कि वह दिल के नजदीक पड़ा रहे। वह इबारत है-

'नादि अलिय्यन या मजहरल अजाइबि तजिदहु अवना लका फिन्नावाइबि मिनकुल्ली हम्मिन व गम्मिन सयनजली बिअजमतिका या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु बिनुबुव्वतिका या मुहम्मद या मुहम्मद या मुहम्मद बिवलायतिका या अली या अली या अली हुवश्शाफी हुवल काफी मआफी०

❖❖❖

मिर्गी चिकित्सा

तरकीब - यदि किसी को मिर्गी के दौरे पड़ते हों तो इसके लिये हजरत गौसुल आजम शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहिम० का यह अमल बड़ा लाभकारी है जो इस तरह है कि जब कोई मिर्गी वाला रोगी आपके पास आता है या लाया जाता है तो आप रोगी के दाँये कान में सूरः फतिहा पूरी पढ़कर दम करते थे और एक बार बाँयें कान में पढ़कर दम करते थे और फिर बाँयें कान में यह शेअर ऊँची आवाज से पढ़ते थे-

रूहिवल कलबु मुहिब्बुकुमफिल
किदामि कबली वुजूदी खलकिहिया
मिन अदमि यहमिलु बाबि इरफा निकुम
अन्कुला अन तरकि हवाकम क-द-मि।

बुरी नजर का इलाज

तरकीब - जिस बड़े या बच्चे को बुरी नजर लग गयी हो तो उसे चाहिये कि इन आयतों को लिखकर मोमजामा करके बच्चे के गले में डाल दें। यदि रोगी बड़ा हो तो वह अपने बाजू पर बाँध ले, अल्लाह ने चाहा तो बुरी नजर का असर जाता रहेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमानिर्रहीम०

आऊजुबिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन शर्रि कुल्ली शयतानिव वहाम्मतिव व अयनिल लाम्मतिन तहस्सन्तु बिहिस्नी अलफ अल्फ ला हवला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहित अलिय्यिल अजीम०

आँख दुखने का इलाज

तरकीब – जिस आदमी की आँखें दुख रही हों तो उसे चाहिये कि इन आयतों को मुश्क व जाफरान से चीनी की तश्तरी पर लिखकर धोकर पिये या कागज पर लिखकर बिना मोमजामा किये पाक धज्जी में लपेट कर सर में बाँधे इस तरह कि तावीज दोनों आँखों के बीच पेशानी पर रहे। यह बड़ा जाँचा परखा हुआ इलाज है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इजहबू बिकमीसी हाजा फअलकूहु

अला वजहि अबी याति बसीरा०

फकशफना इन्का गिताअका

फब-सरुका अलयवमा हदीदुन०

जिन्न-शैतान से मुक्ति

तरकीब - जिस मकान में जिन्न व शैतान का असर हो उसके लिये पहले गुस्ल को फिर दो रकअत तहय्यतुल कुशु की नीयत से नाफिल अदा करके और फिर वहीं बैठे-बैठे इस आयत को सात बार कागज पर लिखे और इस कागज को किसी गत्ते पर चिपका कर मकान में लटका दें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्नहु मिन सुलयमाना व इन्नहु

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमी अल्ला

ताअलू अलय्या वातूनी मुस्लिमीना०

तरकीब - जिस मकान में जिन्न व शैतान या आसेब का असर हो तो चाहिये कि असहाबे कहफ के नामों को लिखकर मकान की दीवारों और दोनों मुख्य दरवाजों पर चिपका दे। कम से कम तीन चार कागजों पर लिखकर तीन चार जगह गत्तों पर ही चिपका दे और लटका दें। अल्लाह ने चाहा तो किसी प्रकार का भी बुरा असर उस मकान में नहीं रहेगा।

इलाही बिहुरमति यमुलियुखा

मकसलमीना कशफू तत अ-जर कतयूनुस

कशा फतयूनुस कस्दुस्सबीलि व
मिन्हा जा-इरुन०

भूत-प्रेत-चुड़ैल से मुक्ति

तरकीब - जिस मकान में भूत-प्रेत-चुड़ैलों का डर हो तो लोहे की चार कीलें टोपीदार लेकर उनमें से हर कील पर २५-२५ बार यह आयत पढ़कर दम करे और एक कील चारों कोनों में गाड़ दे। हर प्रकार की खराबी व असर खतम हो जायेगा। आयत यह है —

इन्नहुमा यकीदूना कयदव व
अकीदू कयदा फलमहिलिल
काफिरीना अमहिलहुम रुवयदा०

माल चोरी का उपाय

तरकीब - यदि किसी का माल चोरी हो गया हो और पता न लगता हो तो उसे चाहिये कि जितने लोगों पर उसे संदेह है, उतने तरंज के पत्ते पर यह आयत लिखे और इस आयत के नीचे हर आदमी का नाम लिखता जाये जिस पर संदेह हो और फिर इन पत्तों में से एक-एक पत्ता आग में डालता जाये। इन्शा अल्लाह चार के पेट

में अवश्य दर्द होगा। वह आयत यह है-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
अस्सारिकु वस्सारिकु वस्सारिकतु
फकतऊ अयदीयहुमा जजाअम बिमा
क-स-बा नकलम मिनल्लाहि०

❖❖❖

जहरीले जानवर से बचने के लिए

तरकीब – जो आदमी चाहे कि कोई जहरीला जानवर उसे न काटे या साँप बिच्छू से महफूज रहना चाहे तो उसे चाहिये कि इस आयत को सात बार सुबह और सात बार शाम रोजाना पढ़ लिया करे।

सलामुन अला नूहिन फिलआलमीना०

❖❖❖

फुन्सी फोड़ों से बचाव के लिए

तरकीब – इस दुआ को सात बार पढ़कर पिंडोल मिट्टी पर दम करे और इस मिट्टी को बारीक पीस कर हथेली पर रखकर उंगली पर थूक लगाकर इस मिट्टी को फुन्सी फोड़े पर लगा दें इसी तरह कई दिन तक लगाये। इन्शाअल्लाह ठीक हो जायेगा।

बिस्मिल्लाहि तुरबति अरजिना बिरीकति बाअजिना यशफा सकीमिना बिइजनि रब्बिना०

❖❖❖

गैर मुस्लिम के लिए ताबीज

तरकीब - चाहे हिन्दू हो या ईसाई या यहूदी या आग पूजने वाले, सभी के लिए इसमें समाधान है।

अल इस्लामु हक्कुन वलकुफरु बातिल अलइस्लामु नूरुन वलकुफरु जुलमतुन०

❖❖❖

ला इलाज बीमारी के लिए

तरकीब - जो किसी तरह की रहस्यमय बीमारी का शिकार है और इलाज कराते-कराते निराश हो गया हो अर्थात् किसी तरह आराम न होता हो तो उसे चाहिये कि इस इबारत को तशतरी पर लिखकर पानी से धोकर निहार मुँह रोगी को २१ दिन तक या ७० दिन तक लगातार पिलाओ मिशतरी जोहरा की घड़ी में लिखो अल्लाह ने चाहा तो रोगी को आराम हो जायेगा। यह मशहूर अमल है, इबारत इस प्रकार है-

'या हय्युहीना दयमूमति मुल्किहि वबकाइहि या हय्यु'

❖❖❖

शेर व कुत्ते के हमले से बचने के लिए

तरकीब - जिस आदमी को रास्ते में किसी जगह यह डर हो कि कुत्ता या शेर हमला करने की कोशिश करेगा तो उसे चाहिये कि तुरन्त इस आयत को पढ़ना शुरू कर दे तो कुत्ता या शेर शोर मचाने और हमला करने से बाज रहेगा। अल्लाह ने चाहा तो बचा रहेगा। वह आयत यह है-

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कलबुहुम बासितुन जिरा अयहि'

❖❖❖

हर मकसद में कामयाबी

तरकीब - यदि कोई आदमी इस दुआ को सात दिन तक हर दिन कागज पर लिखे और दरिया में डाल दिया करे तो वह जो नीयत करेगा वह पूरी होगी। वह दुआ यह है-

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या हुन्नानु या मन्नानु या सलतानु या बदी अस्समावाति वल अर्जि या जल जलालि व ल इकरामि बिरमतिका या अरहमर्राहिमीन०

❖❖❖

बीमारी से अच्छा होने के लिए

तरकीब - यदि कोई बीमार हो उस पर यह दुआ सात बार पढ़कर दम करे। वह बीमार जल्दी ही अच्छा हो जायेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० वला तजलिक् रुऊसकुम हत्ता यबुलुग अलदयुमहिल्लु फमन काना मिन्कुम मरीजन अब बिहि अजन मिन रासिहि फफिदयतुन मिन सियामिन अव स-द-क-तिन अव नुसुकिन०

❖❖❖

नक़्श-ए-इस्माईल जोगी

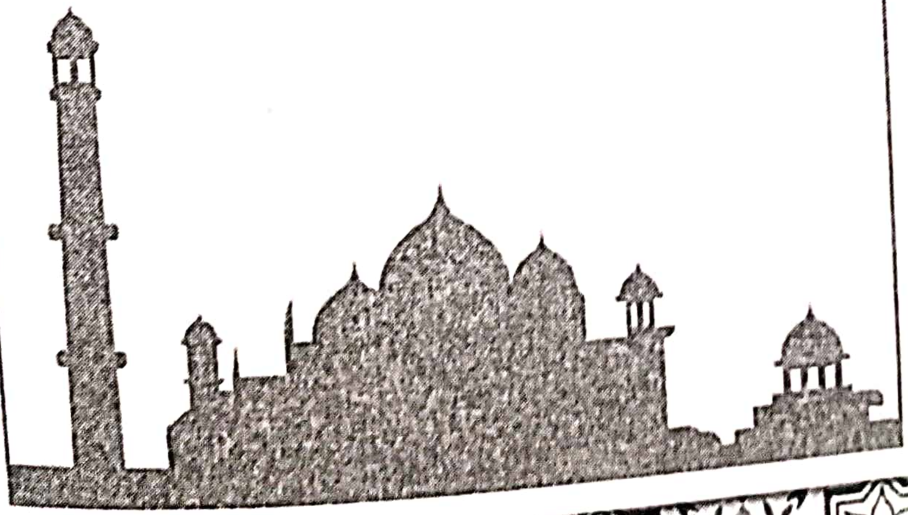

इस दुनिया के हर हिस्से में टोने-टोटके का इस्तेमाल अपनी-अपनी भाषा में किया जाता है। जिस प्रकार हिंदू धर्म में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु अनेक मन्त्र और यन्त्र उपयोग किये जाते हैं, उसी प्रकार मुस्लिम धर्म में भी अनगिनत मन्त्र और नक्श हैं। अनेक मुस्लिम नक्श में कुरान-ए-पाक की आयतें लिखी जाती हैं।

जिस तरह हिंदू धर्म शास्त्रों में 'ॐ' या 'श्रीं' का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह इस्लाम में 786 की संख्या को अल्लाह का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि प्राचीन योगी इस्माईल जोगी इन नक्श का इस्तेमाल करके तत्कालीन रोगियों का भला किया करते थे। अतः इन नक्श को बनाते समय आयतों व अंकों की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिये। अपना मन साफ रखकर और अल्लाह को याद करते हुए इन सभी नक्श का उपयोग करना चाहिए।

गम की बारिश ने भी तेरे नक्श को धोया नहीं,

तूने मुझको खो दिया मैंने तुझे खोया नहीं।

मुहब्बत का काजल

मुहब्बत का काजल वशीकरण हेतु तैयार किया जाता है। यह काजल साधारण न होकर अति विशिष्ट और प्रभावशाली होता है। इस काजल को सिर्फ वशीकरण अथवा सम्मोहन हेतु ही प्रयोग में लाया जा सकता है। सामान्य प्रयोगों हेतु इस काजल का उपयोग पूर्णतः वर्जित है। मुहब्बत का काजल बनाने की विधि निम्नांकित है-

सर्वप्रथम कहीं से भी ढूँढकर काले रंग की एक ऐसी बिल्ली लाएँ जिसके शरीर पर सफेद बाल न हों। ऐसी बिल्ली मिलते ही तुरंत उसकी मूँछों के समस्त बाल काटकर अपने पास सुरक्षित रख लें। इन बालों को रूई की बत्ती में लपेटकर फलीता तैयार करके इस फलीते को घी से भरे हुए एक चिराग में डाल दें। अर्द्धरात्रि के पश्चात किसी एकांत कोठरी में इस चिराग को ले जाकर प्रेमी/प्रेमिका के घर की ओर मुँह करके रख दें और फलीते में आग लगा दें। इस चिराग की रोशनी के ऊपर कोई बड़ा बर्तन अथवा काँच रखकर काजल तैयार कर लें। जब तक चिराग जलता रहे, तब तक निम्न मंत्र का सस्वर जाप करते रहें-

काली काली महाकाली, काली चले आधी रात,

काली बसे आधी रात, काली लावे महाकाली, उसे मेरी मुहब्बत में दीवाना बनाए।

इस विधि से तैयार काजल को अपनी आँखों में लगाकर अपने महबूब के सामने जाएँ तो वह तुम्हारे वश में होकर तुम्हें बेइंतहा मुहब्बत करने लगेगा।

मुहब्बत का इत्र

मुहब्बत के काजल की भांति ही मुहब्बत का इत्र भी किसी को भी वश में करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। यह इत्र भी एक उत्तम वशीकरण साधन है।

मुहब्बत का इत्र बनाने हेतु चमेली, गुलाब, मोगरा इत्यादि किसी भी खुशबूदार फूल का असली इत्र ही काम में लाया जाना चाहिए।

सूरः मुज्मिल शरीफ का ग्यारह दफा सस्वर उच्चारण करें। तत्पश्चात ग्यारह दफा ही दरूद शरीफ को सस्वर जाप करके इत्र पर दम करें। इस प्रकार से मुहब्बत का इत्र बनकर तैयार हो जाता है।

इस इत्र को जो कोई भी सूँघ लेगा, वही आपके वश में होकर आपसे मुहब्बत करने लग जाएगा।

मुहब्बत की अँगूठी

यदि आपको किसी से अत्याधिक प्रेम हो गया हो और आप उसे दिलोजान से सच्चा प्यार करते हैं, परंतु आपका महबूब लाख प्रयत्न के बावजूद भी आपकी ओर तवज्जो नहीं देता हो तो आपको परेशान होने की कतई भी जरूरत नहीं है। इस प्रकार के लोगों के लिए इस्लामी वशीकरण तंत्र में एक ऐसी वशीकरण अँगूठी बनाने का प्रयोग वर्णित है, जिसे कि 'मुहब्बत की अँगूठी' भी कहते हैं।

इस 'मुहब्बत की अँगूठी' को विधिपूर्वक बनाकर, इसको प्रयोग में लाया जाए तो प्रेम में आपकी सफलता सुनिश्चित है। इस चमत्कारी अँगूठी की सहायता से न सिर्फ आपका महबूब आपकी ओर आकर्षित ही होगा, अपितु वह जीवनपर्यन्त सिर्फ आपकी मुहब्बत में ही दीवाना बनकर रह जाएगा। आइए देखें कि अँगूठी कैसे तैयार करें–

अपने महबूब के हाथ की किसी भी (अथवा अनामिका) उंगली की नाप का सामान्य नाप लेकर चांदी की एक शुद्ध अँगूठी तैयार करवा लें। इस अँगूठी में नगीने वाली जगह मोम में सिंदूर मिलाकर उसकी गोली बनाकर फिट कर दें।

अब इस अँगूठी पर प्रतिदिन चालीस दफा 'कुलहुअल्लाह शरीफ' तथा चालीस दफा ही 'आयतुल

कुर्सी' पढ़कर दम करें। इस प्रकार से यह प्रयोग बिना नागा लगातार इक्कीस दिनों तक करते रहें।

इक्कीस दिनों के पश्चात इस अँगूठी को किसी भी प्रकार से प्रयत्न करके अपने महबूब के हाथ में पहना दें। अब इस अज़ीबोग़रीब अँगूठी का चमत्कार देखने को तैयार हो जाएं। इस चमत्कारी अँगूठी के प्रभाव से आपका महबूब आपके वश में हो जाएगा और आपकी मुहब्बत में बेकरार होकर तड़पने लगेगा। वह आपसे मिलने को बेचैन हो उठेगा और आपको दिलोजान से मुहब्बत करने लगेगा। यह एक अत्यंत प्रभावशाली एवं अनुभूत वशीकरण अमल है।

मुहब्बत का सुरमा

इस्लामी वशीकरण तंत्र में 'मुहब्बत का सुरमा' एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, बल्कि इसे यूं कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यह सुरमा 'वशीकरण हेतु ब्रह्मास्त्र' है अर्थात अकाट्य शस्त्र है जो कभी निष्फल नहीं होता। इस्लामी तंत्र में वशीकरण हेतु यह सुरमा अत्यंत प्रभावशाली और कामयाब अमल है। इस सुरमे का प्रयोग करके हजारों-हजार निराश प्रेमियों ने नवजीवन प्राप्त करके पुनः प्रयास द्वारा अपने प्रेम में सफलता पाई है।

अगर आप भी अपने महबूब की ओर से पूर्णतः निराश हो चुके हैं और अपने समस्त प्रेमास्त्रों को छोड़ निराश हो चुके हैं तो मुहब्बत के इस 'ब्रह्मास्त्र' का उपयोग कीजिए और अपनी मुहब्बत को पाइए। मुहब्बत का सुरमा बनाने की विधि निम्नलिखित है–

सर्वप्रथम किसी भी प्रकार से अपने महबूब द्वारा इस्तेमाल किया गया कोई भी कपड़े का एक टुकड़ा प्राप्त कर लें। अब खालिस काला सुरमा लेकर उसे उस कपड़े में लपेट लें। तत्पश्चात कनेर के पुष्प लेकर उन्हें इमाम-दस्ते में कूट लें और उसमें कपड़े से लिपटा हुआ सुरमा रखकर एक गोला-सा बना लें। इस गोले को छाया में सुखा लें। इसके बाद दस सेर गोबर के उपले (कंडे) लेकर उन्हें जला लें और इस अग्नि में उस गोले को पका लें। ठंडा होने पर गोले को निकाल लें और सप्ताह-भर तक इस गोले को खरल में कूट-पीसकर एकदम बारीक सुरमा तैयार कर लें। इस प्रकार से 'मुहब्बत का सुरमा' बनकर तैयार हो जाता है।

प्रातःकाल स्नान के पश्चात दोनों आँखों में सलाई से वह सुरमा लगाकर अपने महबूब के सामने जाएँ तो वह आपसे सम्मोहित होकर आपके

कदमों में गिर जाएगा और आपकी मुहब्बत में दीवाना हो जाएगा।

(ध्यान रखें कि जिस वक्त सुरमा लगाकर महबूब के पास जा रहे हों तो रास्ते में न तो किसी से नजरें मिलाएँ और न ही किसी से बात करें, वरना जिससे भी आपकी नजर मिल जाएगी, वही आपका दीवाना होकर पीछे-पीछे चला आएगा।)

वशीकरण नक्श

786

3521	3518	3515
3516	प्रेमिका का नाम प्रेमिका की मां का नाम	3520
3519	3514	3517

इस नक्श को किसी सफेद कागज पर सरकंडे की कलम द्वारा काली स्याही से लिखकर उसका फलीता बनाएं। फिर उस फलीते को लोबान की धूप देकर, सुगंधित चमेली का तेल भरकर एक दीपक में उस फलीते को जलाएं तो वह स्त्री आपके प्रेम में वशीभूत हो जाएगी। यंत्र के मध्य प्रेमिका तथा उसकी मां का नाम अवश्य लिखें।

वशीकरण मंत्र

> अल्लाह बीत हथेली से, मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी, मोहे जग संसार, मुझे करे मार मार, उसे मेरे बाये कदम तले डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर वज्र की बाण, बिहक़्क़ि लाइलाहा इल्लल्ला है मुहम्मद मेरा रसूल्लिाह०

प्रबल वशीकरण हेतु यह एक अत्यंत ही विश्वसनीय और अति प्रभावशाली प्रयोग है। इस प्रयोग को विधिपूर्वक नियमानुसार किया जाए तो मनोवांछित फल की प्राप्ति अवश्य होती है।

किसी भी शनिवार के दिन देशी घी का एक दीपक जलाकर उस दीपक के समक्ष चार-पांच लाल गुलाब के पुष्प तथा पाँच नग मिठाई के रखकर लोबान की धूनी दें तथा दो सो सोलह दफा उपरोक्त मंत्र को पढ़ें। फिर अगले शनिवार को उस स्त्री के पाँव के नीचे की धूल लेकर उस पर इक्यावन दफा इस मंत्र को पढ़कर वह मिट्टी उस स्त्री के ही ऊपर डाल दें, वह वश में हो जाएगी।

वशीकरण मंत्र

> या आमीन या फ़ामीन हमारे दिल से 'अमुकी' का दिल मिला दे०

किसी भी गुरुवार तथा शुक्रवार दोनों की रात्रियों में उक्त मंत्र को ग्यारह हजार की संख्या में जप करके सिद्ध कर लें। तत्पश्चात जिस किसी को भी अपने वश में करना हो, कोई भी खाद्य वस्तु लेकर उसे इस मंत्र से अभिमंत्रित करके खिला देने से वह व्यक्ति आपके वश में हो जाएगा।

स्त्री वशीकरण का मंत्र

> ध्यान
>
> नमो नमः जल की जोगिनी पाताल नाम जिस पर भेजूं जिसके लाग,
> सोने न पावे सुख से बैठने न पावै, मुख से घूम फिर-फिर ताके मेरा मुख,
> जो बांधी छूटे तो बाबा नरसिंह की जटा टूटे०

सर्वप्रथम इस ध्यान को करें। तत्पश्चात मंत्र को दस हजार की संख्या में जप करें। मंत्र जप के समय उस स्त्री का ध्यान भी करें जिसे कि आप वश में करना चाहते हैं।

मंत्र
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या अल्लाहु ख़ैरून हाफ़िजन व हुवा अर्हमुर्राहिमीन। फ़ता बारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन, व अस्तुद अल्लाह दीनक व मालिका व ज़ोजिका

मंत्र जप के पश्चात जप का दशांश अर्थात एक हजार की संख्या में लाल पुष्पों (यथा–कनेर, गुलाब के पुष्प इत्यादि) से हवन करें। ध्यान रहे कि इस प्रयोग में समस्त कार्य सिर्फ बाएँ हाथ से ही सम्पन्न किए जाएंगे। इस प्रकार से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात साध्य स्त्री का ध्यान करते हुए एक सौ आठ दफा पुनः उपरोक्त मंत्र का जाप करें तो वह स्त्री वश में हो जाती है।

प्रेमिका आकर्षण हेतु नक़्श

नक़्श नं 1	
5	12
18	13
16	19
23	18
20	23

नक़्श नं 2		
13	8	9
6	10	14
11	12	7

नक़्श नं 3	
7	1
2	8
6	3
4	5
3	8

यदि कोई स्त्री मन को बहुत भा गई हो और अनेक प्रयत्न करने के बावजूद भी कोई तवज्जो नहीं दे रही हो तो निम्नांकित प्रयोग को करने से अवश्य लाभ होगा।

सर्वप्रथम एक सफेद कागज लेकर उस पर उपरोक्त तीनों नक़्श लिख दें और फिर अलग-अलग काटकर रख लें। इनमें से नंबर 1 वाला नक़्श प्रेमिका के घर के मुख्य द्वार के पास ही गाड़ दें। नंबर 2 वाला नक़्श किसी भी पेय पदार्थ में घोलकर किसी भी प्रकार से प्रेमिका को पिला दें और नंबर 3 वाले नक़्श को ताबीज बनाकर गले में पहन लें। शीघ्र ही परिणाम आपके सामने आ जाएगा। इंशा अल्लाह उस स्त्री को आपसे प्रेम हो जाएगा।

समृद्धिकारक नक़्श

18	48	6
12	24	36
42	या बासितु	30

इस नक़्श को अनार की कलम से ग्यारह बार लिखकर किसी भी नमाज के पश्चात एक निर्धारित समय पर आटे की गोलियाँ बनाकर उनमें रखकर उन गोलियों को किसी नदी–तालाब अथवा कुएं में डाल दें। ध्यान रहे कि सूर्यास्त से पूर्व इन आटे की गोलियों को डालना आवश्यक है। लगातार चालीस दिनों तक यह अमल करने से व्यापार–व्यवसाय में वृद्धि होगी, साथ ही अमल करने वाला दिन-ब-दिन समृद्धिशाली होता चला जाएगा। रिज़्क में बढोतरी के लिए यह प्रभावशाली अमल है।

शत्रु वशीकरण नक़्श

786

	अल्लाहु	अल्लाहु	अल्लाहु	
अल्लाहु	1005	1010	1003	अल्लाहु
अल्लाहु	1004	1006	1008	अल्लाहु
अल्लाहु	1009	1002	1007	अल्लाहु
	अल्लाहु	अल्लाहु	अल्लाहु	

अगर कोई व्यक्ति अपने किसी विरोधी/आलोचक

अथवा शत्रु को अपने वश में करना चाहे तो इस ताबीज को एक सफेद कोरे कागज पर लिखकर मोमजामा करके पुरुष अपनी दाहिनी भुजा पर तथा स्त्री अपनी बाईं भुजा पर बांधे तो इंशा अल्लाह उसके समस्त विरोधी अथवा शत्रु वश में हो जाएंगे। यह एक अत्यंत चमत्कारी नक़्श है।

धन लाभ का नक़्श

786

512	215	217	326	465
509	786	940	561	771
795	313	983	730	200
513	231	500	311	102

चांदनी रात से यह नक़्श लिखना प्रारंभ करके चांद की चौदहवीं रात तक प्रतिदिन ग्यारह की संख्या में लिखें। इस प्रकार से कुल दो सौ नक़्श लिखें। प्रतिदिन इन नक्शों को लिखने के पश्चात किसी खेत में गाढ़ दिया करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात आश्चर्यजनक रूप से धन लाभ प्रारंभ हो जाएगा।

आकर्षण का नक़्श

786

या अबुबक्र	अलहुब	या हसन	या अली
786	या मुहम्मद	या मुहम्मद	या नजिमा
या हुसैन	या मुहम्मद	या मुहम्मद	786
या उमर	786	या मौला	या उस्मान

इस नक़्श को किसी कोरे सफेद कागज पर जाफरान की स्याही से लिखकर धूप-दीप देकर अभिमंत्रित करें। फिर इसे मोमजामा करके गले में पहन लें। इस नक़्श को देखने वाले अवश्य ही सम्मोहित हुए बिना नहीं रहेंगे।

वशीकरण नक़्श

786

191	196	189
190	192	194
195	188	193
अमुक बिन अमुकी		

इस नक़्श को किसी रेशमी कपड़े पर लिखकर

गले में बाँधें तो देखने वाले सभी लोग वश में हो जाते हैं।

इस नीचे बताये नक़्श को लिखकर तथा शरबत में घोलकर पिला देने से पीने वाला वश में हो जाता है।

786

9	12	15	2
14	3	8	13
4	17	10	7
11	6	5	16
अमुक बिन अमुकी			

यात्रा में सफलता का नक़्श

786

मुक़्तदिर	क़विय्यु	क़ायम	क़ादिर
क़ायम	क़ादिर	मुक़्तदिर	क़विय्यु
क़ादिर	क़ायम	क़विय्यु	मुक़्तदिर
क़विय्यु	मुक़्तदिर	क़ादिर	क़ायम

यदि कोई व्यक्ति यात्रा के समय इस नक़्श को लिखकर अपने पास रखे तो उसकी यात्रा निर्विघ्न रूप से तथा सफलतापूर्वक सम्पन्न होती है।

भूत-प्रेतादि निवारक नक़्श

भूत-प्रेतादि बाधा निवारक नक़्श

1.

बिहक़्क़ जिबराईल या बद्दहु

या बद्दहु					या बद्दहु
	8	6	4	2	
	4	2	8	6	
	2	4	6	8	
	6	8	2	4	

या बद्दहु

इस नक़्श को लिखकर तथा मोमजामा करके किसी भूत-प्रेत अथवा आसेब बाधा से ग्रस्त व्यक्ति के गले में पहना देने से वह ऊपरी बाधाओं से पूर्णतः सुरक्षित रहेगा।

2.

786

11	8	1	14
2	13	12	7
16	3	6	9
5	10	15	4

जिस किसी घर में प्रेतबाधा इत्यादि का प्रकोप हो और जहाँ पर घर में किसी अज्ञात शक्तियों द्वारा पत्थर-कंकड आदि फेंकने की घटनाएं होती हों, उस मकान की दीवार पर इस नक़्श को किसी कागज पर लिखकर चिपका दें तो पत्थर फेंकने की घटनाएँ फिर कभी नहीं होंगी।

भूत-प्रेत बाधा निवारक नक़्श

1.

या करमाईल	2	या जिबराईल
3	10	7
या दरदाईल	8	या तनकफ़ाईल

इस नक़्श को सादे कागज पर सरकंडे की कलम द्वारा काली स्याही से लिखकर लोबान की धूप दें, तत्पश्चात इसे ताबीज में भरकर बाधाग्रस्त बालक के गले में पहना दें तो उसकी समस्त बाधाएँ स्वतः ही दूर हो जाएँगी।

2.

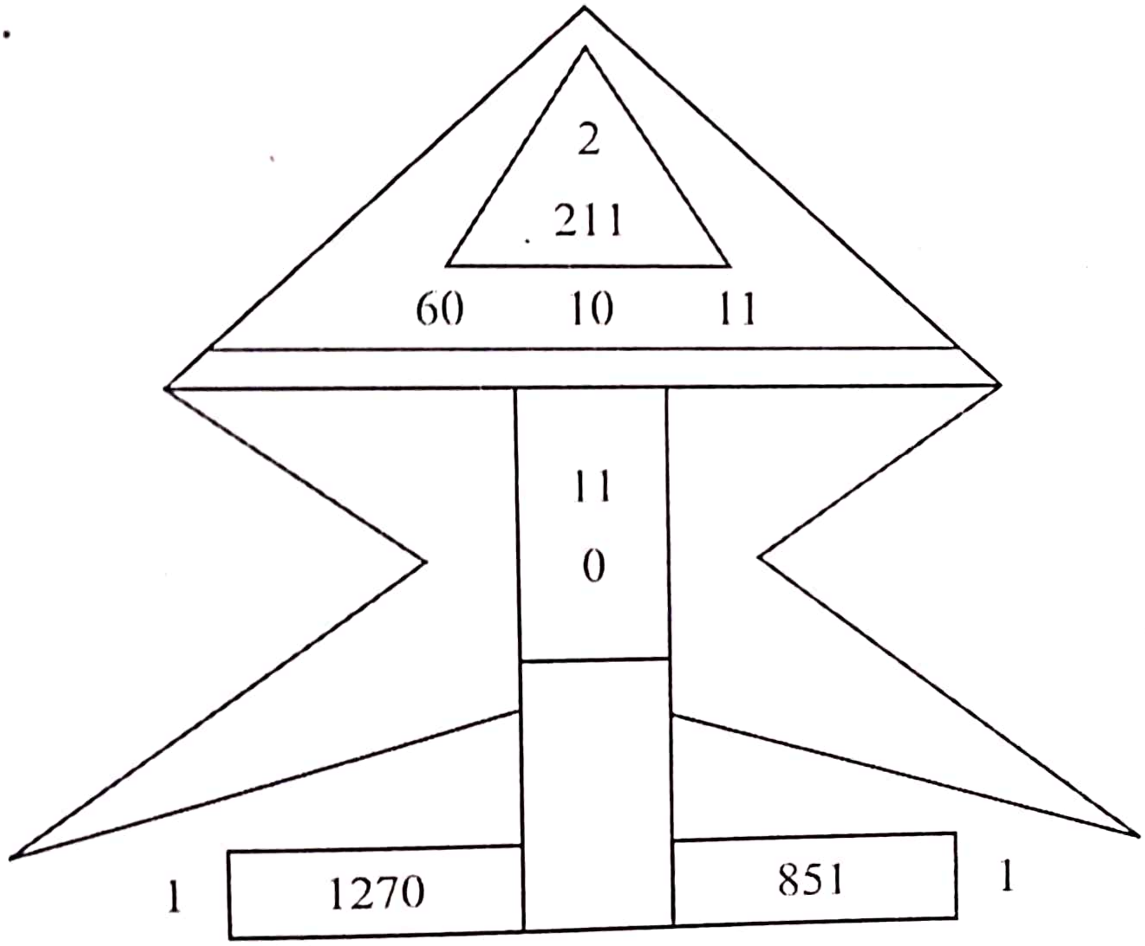

इस नक्श को किसी सफेद कागज पर जाफरान की स्याही से निर्मित करके फलीता बना लें। तत्पश्चात इस फलीते को दीपक में रखकर ऊपरी बाधाग्रस्त व्यक्ति के समक्ष जलाएं तो समस्त ऊपरी बाधाएं दूर हो जाती हैं।

भूत-प्रेत बाधा निवारक चार नक़्श

1.

बिहक़्क़ जिबराईल या बद्दहु			
8	6	4	2
4	2	8	6
2	4	6	8
6	8	2	4

इस नक़्श को एक सफेद कागज पर लिखकर सदैव अपने पास रखें तो कभी भी भूत–प्रेत–आसेब आदि की बाधा नहीं होगी।

ऊपरी बाधाओं से सुरक्षा के लिए यह एक अत्यंत प्रभावशाली नक़्श है।

2.

6	7	2
1	5	9
8	3	4

इस यंत्र का फलीता बनाकर रुई से लपेटकर फिर एक मिट्टी के सकोरे में कड़वा तेल भरकर उस फलीते को इसमें जला दें तथा शिरनी पर

हजरत की फातिहा दें तो ऊपरी बाधा दूर हो जाएगी।

3.

39011	3904	3909
3906	3908	3910
3907	39012	3905

यह नक़्श चहल काफ का है। इस नक़्श को एक सादे कागज पर लिखकर ऊपरी बाधा से ग्रस्त व्यक्ति के पास रखवा दें तो वह सर्व प्रकार से सुरक्षित रहेगा।

4.

786

11	8	1	14
2	13	12	7
16	3	6	9
5	10	15	4

इस नक़्श को किसी सादे कागज पर लिखकर मकान की दीवार पर चिपका दें तो वह मकान हर प्रकार की ऊपरी बाधाओं से सदैव सुरक्षित रहेगा।

इस्माईल जोगी के अमल

इस्माईल जोगी के अमल इस्लामी तंत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये अमल वो आसान टोटके हैं, जिनकी प्रयोग विधि कठिन न होकर सरल होते हुए भी सर्व कार्यसिद्धि हेतु अत्यंत उपयोगी है।

किसी भी प्रकार की परेशानियों से मुक्ति हेतु अथवा किसी भी मनोकामना की सिद्धि हेतु जहाँ दुसाध्य तंत्र प्रयोग अथवा साधनाएं निष्फल हो जाती हैं। वहीं कभी-कभी उनके स्थान पर ये आसान तथा छोटे-छोटे चमत्कारी अमल आश्चर्यजनक फल प्रदान कर जाते हैं।

इन रहस्यमई अमल को आजमाने से पूर्व यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि श्रद्धा तथा विश्वास के अभाव में इन अमलात को प्रयोग में लाने का कोई औचित्य नहीं है।

सफर में कामयाबी के लिए अमल

सफ़र में जाने से पहले वुजू करके इस्मे आज़म या हफीजु नौ सौ अठानवें बार पढ़कर सफ़र के लिए जाएँ। शुरू व अंत में दो-दो बार दरूद शरीफ पढ़ें। अल्लाह के हुक्म से आराम व इत्मीनान से सफ़र खत्म होगा और जिस मकसद के लिए सफ़र को जा रहे हैं उसमें कामयावी मिलेगी।

फ़तहमन्दी के लिए अमल

किसी अभियान पर जाते समय सूरः फातिहा बिस्मिल्लाह सहित इस तरह पढ़ें कि हर बार इहदिनस्सिरातल मुस्तकीम तक ही की तकरीर करे। इसके बाद आगे को पढ़कर खत्म करें। इसे पढ़ने के बाद घर से उस काम का इरादा करके निकल जाएँ, इंशा अल्लाह उस काम में फ़तह होगी।

घर की सुरक्षा हेतु अमल

रात को सोने से पहले तीन-तीन बार आयतल कुर्सी बिस्मिल्लाह सहित पढ़कर तीन बार जोर से ताली बजाएं कि ताली की आवाज पूरे मकान में गूंज जाए। इंशाअल्लाह वह मकान चोरों व डाकुओं के प्रकोप से बचा रहेगा। बहुत-से लोगों का इस

अमल पर विश्वास है। अल्लाह के पाक फरिश्ते ऐसे घर की देख-भाल करते हैं।

खेत की सुरक्षा हेतु अमल

यदि किसी खेत को जानवर खाते हों या खेत को खराब कर जाते हों तो दरिया की पाक रेत पर वुजू करके चार बार आयतल कुर्सी पढ़कर यह रेत थोड़ी-सी खेत के चारों कोनों में डाल दें। अल्लाह के हुक्म से खेती पूरी तरह महफूज रहेगी, लेकिन इसके लिए विश्वास और भरोसा होना शर्त है। इस अमल के बाद आपकी खेती को न तो जंगली जानवर और न दुश्मन ही किसी प्रकार का नुकसान पहुंचा सकेंगे।

भूली हुई वस्तु याद आने का अमल

यदि कोई चीज किसी जगह पर रखकर भूल गए हैं और वह याद न आ रही हो तो इसके लिए आयत इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊन पढ़ना शुरू कर दें। इसके पढ़ने की कोई संख्या नहीं है, जब तक भूली हुई चीज याद न आए तब तक पढ़ते ही रहें। इंशाअल्लाह वह चीज याद आ जाएगी और आपको मिल भी जाएगी। इस अमल से चोरी हुई चीज भी कभी-कभी मिल जाती है।

अनाज में वृद्धि के लिए अमल

किसान जब खेत से अनाज लाकर दूसरी जगह रखे तो पहले यह अमल करें कि इस अनाज में से मुट्ठी-भर अनाज लेकर उस पर सात बार आयतुल कुर्सी पढ़कर दम करें और फिर उस अनाज को जिस पर मुट्ठी में लेकर अमल पढ़ा है, पहली बार उस जगह डाल दें, जहाँ अनाज जमा होता है और फिर अनाज लाकर वहाँ जमा करते जाए। अल्लाह के हुक्म से इस अनाज में बरकत होगी। यदि अनाज दस-बीस मन होता है तो वह 25 या 30 मन से भी अधिक हो जाएगा।

मिरगी से बचाव हेतु अमल

जिसे मिरगी की बीमारी हो, दौरे पड़ते हों और वह बेहोश हो जाता है तो उसे बेहोशी की हालत में उसके सीधे कान में अज़ान और उल्टे कान में इकामत देनी चाहिए। इसी प्रकार सात या ग्यारह बार करने पर रोग खत्म हो जाता है, वरना मर्ज में कमी तो अवश्य ही हो जाती है।

मुकदमे में सफलता प्राप्ति हेतु अमल

यदि कोई मुकदमे में फँस जाए तो जुहर की नमाज के बाद तीन या सात आदमी वुज़ू करके

बैठकर 12 हजार बार यह आयत पढ़ें-

व फ़वज़ा इहदी इलल्लाह इन्नल्लाह बसीरूम बिलाइबाद।

शुरू व बाद में 11-12 बार दरुद शरीफ पढ़ें। हर आदमी पढ़ते-पढ़ते अगरबत्ती व लोबान की खुश्बू सुलगाता जाए। हर दिन खत्म होने के बाद कोई भी मीठी चीज पर सूरः फातिहा पढ़कर बाँट दिया करें। इंशा अल्लाह उस मुकदमे से निजात हो जाएगी।

कानों का बहरापन दूर करने का अमल

यदि किसी को ऊँचा सुनाई देता हो तो रोगन बादाम लेकर वुजू करके पांच सौ बार या समीउन पढ़कर दम करें। बिस्मिल्लाह शरीफ पहली बार ही शुरू में पढ़ें। फिर यह तेल सोते समय एक-एक बूंद कानों में डालें। इंशा अल्लाह कानों से ठीक सुनाई देने लगेगा।

बुखार-जाड़े से बचने के लिए अमल

यदि कोई बुखार-जाड़े के कारण परेशान हो तो उसे चाहिए कि सात तार नीले डोरे के लेकर उनको बट ले, फिर सुबह की नमाज पढ़ें। नमाज के बाद सूरः अलम नसरह पढे और जिस स्थान पर 'क' आए, डोरे में एक गिरह लगा दें। इस

सूरः में आठ 'क' आए हैं। इस प्रकार आठ गिरह होंगी। जिसे बुखार आता हो, उस रोगी की उल्टी कलाई में बांधें। बुखार व जाड़ा चला जाएगा। यदि सिर व कमर में दर्द हो या किसी और जगह पर दर्द हो तो यह गंडा उस जगह पर बांध दें, दर्द जाता रहेगा।

ऊपरी बाधा के निवारण हेतु अमल

यदि किसी मकान में जिन्न या खबीस आत्माओं का खतरा हो और घर के लोग इनके कारण प्रायः बीमार या भयभीत रहते हों तो पांच कोरी ठीकरियां लेकर अस्र की नमाज के बाद हर ठीकरी पर पांच-पांच बार सूरः वल अस्र पढ़कर चार ठीकरियां मकान के चारों कोनों में और एक ठीकरी सेहन में दफन कर दें। अल्लाह ने चाहा तो वह मकान हर प्रकार की बलाओं से, जिन्न, भूत, आसेब, चुड़ैल और जादू-टोने से भी सुरक्षित रहेगा। इस घर में किसी अन्य प्रकार की बीमारी या परेशानी भी नहीं आएगी।

बच्चों से सम्बन्धित नक़्श

यदि बच्चा बेवजह रोता हो, स्वप्न में चौंककर जाग पड़ता हो, किसी की बुरी नज़र का शिकार हो गया हो, उसे चेचक, ज्वर, पीलिया या सूखा रोग हो गया हो तो नीचे दिये गये नक़्श के द्वारा उसे रोगों और परेशानियों से मुक्ति दिलाई जा सकती है। ये इस्माईल जोगी के नक़्श अत्यंत प्रभावी हैं।

बुरी नज़र से सुरक्षा

या मअशरल जिन्नि वल इन्सि इनिस्ततअतुम अन तन्फ़ुजु मिन अक़्तारिस्समावाति वल अर्ज़ फ़न्फ़ुजु ला तन्फ़ुजुना इल्ला बिसुलतान फ़बिअय्ये आलाये रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान आऊजो बिक-लिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि कुल्ली शयतानिंव वहाम्मतिंव व अयनिल लाम्मतिन

उपरोक्त आयत लिखकर, नक़्श (ताबीज) बनाकर

मोमजामा करें और निम्नलिखित आयत को पढ़ें।

> बिस्मल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ मिनशर्रि मा-ख़लक़० व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब व मिन शर्रिन्नफ़्फ़ासति फ़िल उक़द० व मिनशर्रि हासिदिन इज़ा हसद० बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास० मलिकिन नास० इलाहिन नास० मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास. अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास० मिनल जिन्नति वन्नास.

तत्पश्चात् नक़्श को तीन बार दम करें और बच्चे के गले में डाल दें। कैसी भी बुरी नज़र लगी हो, हवा हो जायेगी।

दूसरा नक़्श

786

4466	4469	4472	4459
4471	4460	4465	4470
4461	4474	4467	4464
4468	4463	4462	4473

यदि कोई बच्चा कुदृष्टि का शिकार हो गया हो अर्थात उसे किसी की बुरी नज़र लगी हो और उसकी हालत बहुत खराब हो गई हो तो उपरोक्त

नक़्श को लिखकर मोमजामा कर बच्चे के गले में बाँध दें। यदि इस नक़्श से फौरन हालत न सुधरे तो इसी नक़्श को दोबारा लिखकर, बत्ती बनाकर मग़रिब की नमाज के बाद गाय के घी में बच्चे के सिरहाने, चिराग़ में डालकर जलाएँ। जब तक नक़्श जलता रहे, बच्चा चारपाई पर ही लेटा रहे।

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। जिस चिराग़ में यह नक़्श जलाया जाए, बाद में उसे घर से दूर ले जाकर, जमीन में दबा दें। इस क्रिया से बुरी-से-बुरी नज़र का प्रभाव भी नष्ट हो जाएगा।

तीसरा नक़्श

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! आऊजु बिकलिमातिल्लहित्ताम्मति मिन शर्रि कुल्ली शयतानिंव वहाम्मतिंव व अय-निल लाम्मतिन तहस्सन्तु बिहिस्नी अल्फ़ा अल्फ़ा ला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम०

उपरोक्त नक़्श को लिखकर और मोमजामा करके, काले डोरे की सहायता से बच्चे के गले में पहना दें। बुरी नज़र का कुप्रभाव इस नक़्श के प्रयोग

से समाप्त हो जाता है तथा बच्चे को स्वस्थ होने में देर नहीं लगती।

चौथा नक़्श

786

79	06	79	09	79	12	79	99
79	11	79	00	79	05	79	10
79	01	79	14	79	07	79	04
79	08	79	03	79	02	79	13

जिस बच्चे को नजर लग गई हो, उपरोक्त नक़्श को ज़ाफ़रान और मुश्क से लिखकर, उसके गले या बाजू में पहना दें। बच्चे पर से नज़र का कुप्रभाव शीघ्र समाप्त हो जाएगा।

पाँचवां नक़्श

786

16639	16642	16645	16632
16644	16633	16638	16643
16634	16647	16640	16637
16641	16636	16635	16646

यदि किसी बच्चे को नज़र लग जाए तो इस

नक़्श को मुश्क और जाफ़रान से लिखकर उसके गले में डाल दें। नज़र का प्रभाव तो समाप्त हो ही जाएगा, आगे भी कभी नज़र नहीं लगेगी।

छठा नक़्श

तृ	2	8
9	3	ला

यदि नज़र लग जाने के कारण बच्चा रोता रहे तो उपरोक्त नक़्श को केसर और गुलाब से लिखकर, बत्ती बनाकर जलाएँ तथा उसकी धूनी बच्चे को दें। बुरी नज़र का असर खत्म होकर बच्चे का रोना बंद हो जाएगा।

चौंकना, डरना व रोना बंद करने वाला नक़्श

पहला नक़्श

786

6	19	22	1
21	2	7	20
3	अमुक	17	6
18	5	4	23

यदि नज़र लगने के कारण बच्चा अस्वस्थ हो गया हो और रात-दिन रोता रहता हो, तो उपरोक्त नक़्श को मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर, मोमजामा कर बच्चे के गले में डाल दें। बच्चा स्वस्थ हो जाएगा। यदि वह स्वप्न में डरता और चौंकता होगा, तो वह भी बंद हो जाएगा। नक़्श में 'अमुक' की जगह बच्चे का नाम लिखें।

दूसरा नक़्श

786

ज़ा	रू	ज़ा	ज़ा
36	132	या	रू
61	89	62	39
89	13	61	53

यदि बच्चा रोता हो (वह चाहे लड़का हो या लड़की), स्वप्न में डरकर चौंक जाता हो तो, उपरोक्त नक़्श को केसर की स्याही से लिखकर बच्चे के गले में डाल दें। उसका रोना, डरना और चौंकना बंद हो जाएगा।

तीसरा नक़्श

यदि बच्चा बेवजह रोता रहता हो और सारे

ए	आ	ल	स
व	17	17	13
अ	7	16	13
15	24	2	1

घर को उसने परेशान कर रखा हो, तो उपरोक्त नक़्श को लिखकर बच्चे के तकिए में बंद कर दें तथा उसी को बच्चे के सिर के नीचे लगाएँ। बेवजह का रोना बंद हो जाएगा।

यदि उपरोक्त नक़्श से कोई लाभ होता न दिखाई दे तो निम्न आयत को लिखकर नक़्श बनाकर बच्चे के गले में डाल दें।

> वुजूहुंय यवमइज़िम मुसाफ़िरातुन ज़ाहिकातुम
> मुस्तवशिरातुन अ-फ़-मिन हाज़लहदीसे
> तअजबूना व-तज़ हकूना वलाजब-
> कूना व अन्तुम सामिदून.

चौथा नक़्श

अगर बच्चा सोते-जागते डरता हो, सोते में डरावने स्वप्न देखता हो और जागकर रोने लग जाता हो तो आगे दिए गए नक़्श को मुश्क, ज़ाफ़रान व

786

7	18	13	8
12	9	6	19
10	15	16	5
17	4	11	14

गुलाब के अर्क से लिखकर, मोमजामा कर, बच्चे के गले में बांध दें। उसे सब आफ़तों से निजात मिल जाएगी।

सूखा रोग से छुटकारा पाने का नक़्श

पहला नक़्श

786

8	11	6247	1
6246	2	7	12
3	6249	9	6
10	5	4	6248

सूखा रोग वाले बच्चे सूखकर कांटा हो जाते हैं। ऐसे में यदि उनका उचित उपचार न कराया जाए तो यह रोग बच्चे की जान ले लेता है, अतः उचित उपचार के साथ-साथ यदि उपरोक्त नक़्श

को केसर की स्याही से लिखकर बच्चे के गले में डाल दिया जाए तो वह बहुत शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करता है।

दूसरा नक़्श

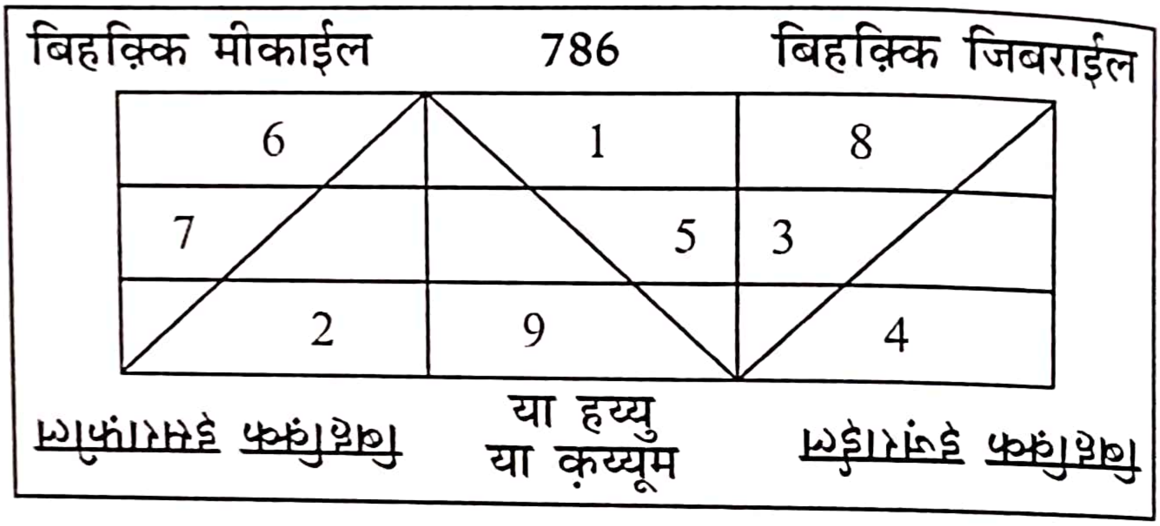

यदि बच्चे के ऊपर अभी सूखा रोग का प्रभाव ही हो तो उपरोक्त नक़्श को ज़ाफ़रान आदि से लिखकर बच्चे के गले में डाल दें और औषधि-सेवन भी कराते रहें। रोग आगे नहीं बढ़ेगा तथा शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा।

तीसरा नक़्श

आगे दिए गए नक़्श को किसी भी रविवार के दिन श्वेत-देशी मुर्गे के रक्त से लिखकर, कपड़े के कवच में सिलकर, काले डोरे की सहायता से रोगी बच्चे के गले में डाल दें। उसका सूखा रोग ठीक हो जायेगा।

786

141	144	147	134
146	135	140	145
136	149	142	139
143	138	137	148

चौथा नक़्श

786

31	26	33
32	30	28
27	34	29

उपरोक्त नक़्श को केसर या ज़ाफ़रान से लिखकर और लोबान की धूनी देकर रोगी बच्चे के गले में बांध दें। उसका सूखा रोग ठीक हो जाएगा।

पाँचवा नक़्श

अगले पृष्ठ पर दी गई तहरीर को लिखकर नक़्श तैयार करें और धातु के किसी कवच (या कपड़े की धज्जी) में भरकर बच्चे के गले में बांध दें। सूखा रोग से पीड़ित बच्चे के लिए यह बहुत लाभकारी नक़्श है।

आऊजु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! या बुद्दुहू
या ग़फ़ुरु इन्नहु मिन सुलयमाना बिन
दाऊदा अलयहिस्सलामु अहिय्यन अश-
राहिय्यन फ़िस्स फ़रि ख़ालिदीन
अव मुख़लिदीन अव बिस्मिहि
द-र-कातिन बिअवनिल्लाहि तअला फ़ी
कुल्ली शिफ़ा इंव व अलयहिम या
हाफ़िजु या अल्लाहु या अल्लाहु या
अल्लाहु बिरहमतिका या अर्रहमर्राहिमीन.

सूखा रोग में अत्यंत प्रभावकारी नक़्श

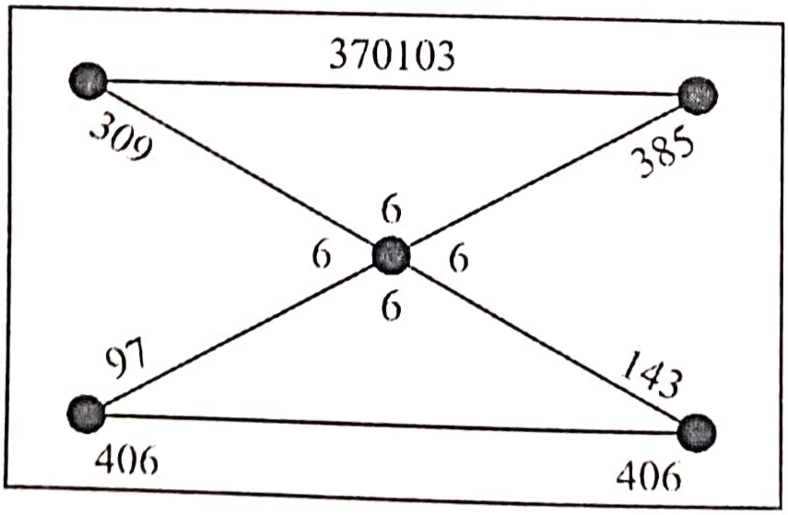

सूखा रोग से पीड़ित बच्चे के लिए मुश्क व ज़ाफ़रान से उपरोक्त नक़्श को लिखकर, कपड़े की पट्टी में लपेटकर एवं गिरह लगाकर बच्चे की दाईं

कलाई में बांध दें। अगले दिन फिर नया नक़्श लिखकर पहले वाले के स्थान पर बांध दें और पहले वाले को अग्नि में जलाकर नाली में बहा दें। साथ ही इस बात का ध्यान रखें कि जलते नक़्श का धुआं प्रयोगकर्ता को न लगे। अच्छा तो यही है कि नक़्श को अग्नि के हवाले करते ही प्रयोगकर्ता वहाँ से हट जाए। एक ही समय पर, एक ही व्यक्ति द्वारा बिना नागा इस प्रयोग को पूरे चालीस दिनों तक करना चाहिए। इसके साथ ही निम्न नक़्श को प्रातः एवं सायं पानी में घोलकर रोगी को पिलाएं। दोनों नक़्श का प्रयोग नित्य किया जाना चाहिए। पिलाने वाले नक़्श को फेंके नहीं। चालीस नक़्श एकत्र हो जाने पर, उन्हें आटे की गोलियों में भरकर मछलियों को डाल दें। पिलाने वाला नक़्श निम्न है-

6	1	8
7	5	3
2	9	4

उपरोक्त प्रक्रिया के बाद दो नक़्श और तैयार करें। एक नक़्श (ठीक 41 वें दिन) रोगी बच्चे के बाँधने के लिए तथा दूसरा नक़्श धूनी देने के लिए होगा।

या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु या मुहम्मद (सल.) या हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) या हज़रत उमर (रज़ि.) या हज़रत उसमान (रज़ि.) या हज़रत अली या अली या अली
हय[1] हय[2] हय[3] हय[4] हय[5] हय[6] हय[7] हय[8] हय[9] हय[10] हय[11] हय[12] हय[13] हय[14] दोला[1] दोला[2] दोला[3] दोला[4] दोला[5] दोला[6] दोला[7] दोला[8] हई[1] हई[2] हई[3] हई[4] हई[5] हई[6] हई[7] अवहु[1] अवहु[2] अवहु[3] अवहु[4] अवहु[5] अवहु[6] अवहु[7] अहयन शराहियन ऊहियन

अब धूनी देने वाला निम्न नक़्श तैयार करें–

64	67	70	57
69	58	63	68
59	72	65	62
66	61	60	71

उपरोक्त नक़्श को बत्ती बनाकर जलाएं और रोगी बच्चे को धूनी दें। जब धूनी दे चुकें तो बांधने वाले नक़्श को तुरंत उसके गले में बाँध

दें। इसके बाद फ़ातिहा देकर कुछ मीठा बच्चों में वितरित कर दें। पुराने-से-पुराना घातक सूखा रोग जाता रहेगा और बच्चा स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट हो जाएगा।

अकाल मौत से बचाव

786 क मा मनाह
अलख़ उख़रजी या हय्यु 33
12 11 11 म ह ह् य स

यदि किसी स्त्री को सूखा रोग की शिकायत हो और इस कारण उसके बच्चे बाल्यावस्था में ही सूख-सूखकर मर जाते हों तो उपरोक्त नक़्श को लिखकर, मोमजामा कर, बच्चे के जन्म लेते ही उसके गले में डाल दें। इससे बच्चा रोगी नहीं होगा और जीवित भी रहेगा।

चलती पसली को रोकना

या हावी या अल्लाहु
या हावी या अल्लाहु
या हावी या अल्लाहु
या फ़त्ताहु या फ़त्ताहु

यदि किसी बच्चे को पसली चलने का रोग हो तो उपरोक्त नक़्श को ज़ाफ़रान से लिखकर, मोमजामा कर, काले डोरे की मदद से बच्चे के गले में इस प्रकार डालें की वह नक़्श उसकी कौड़ी पर पड़ा रहे। बच्चे को शीघ्र लाभ होगा।

दूसरा नक़्श

उपरोक्त नक़्श के स्थान पर निम्न नक़्श का प्रयोग भी किया जा सकता है–

बिस्मिल्लाहि यशफ़िका
वइज़ा क़तलतुम नफ़सन फ़द्दारातुम
बिस्मिल्लाही कुल्ली दाइन
बिस्मिल्लाहि यूज़िका.

इस नक़्श को पूर्वोक्त ढंग से लिखकर और मोमजामा करके बच्चे के गले में डाल दें। नक़्श का डोरा इतना लंबा हो कि वो पसलियों तक इधर-उधर डोलता रहे। इससे पसलियों के चलने तथा पसलियों की हर पीड़ा में तुरंत लाभ होता दिखाई देगा।

स्मरण शक्ति बढ़ाना

अगर बच्चे की स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण हो,

उसे पढ़ा-लिखा कुछ भी न याद रहता हो, जरूरी बात को भी वह जल्दी से भूल जाता हो तो बृहस्पतिवार या शुक्रवार के दिन पहली घड़ी में पूर्वोक्त आयत को लिखकर नक़्श तैयार करें और बच्चे के गले में डाल दें। इसके प्रभाव से उसकी स्मरण शक्ति बढ़ जाएगी। चौदह-पन्द्रह साल तक के लड़कों पर इस नक़्श का प्रयोग किया जा सकता है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! हुनालिका
दआ ज़करिय्या रब्बह. क़ाला रब्बा
हबली मिंल लदुनका ज़ुर्रिय्यतन तय्यिबतन.
इन्नका समीउद दुआई फ़ना दतहुल
मलाइकतहू वहुवा क़ाइमुंय युसल्ली
फ़िल मेहराबी अन्नल्लाहा युबशशिरुका
बियहया मुसददिक़म बिकलिमतिंम मिन-
ल्लाहिंव व सय्यिदंव व हसूरंव व नबि-
य्यम मिनस्सालिहीन. क़ाला रब्बि
अन्ना यकूनू लिगुलामुंव व क़द ब-ल-ग़नी-
यलकिबरु वमरआति आक़िरुन क़ाला
कज़ालिकल्लाहु यफ़अलु मा यशाऊ.

पीलिया का नाश

5	16	2	11
10	3	13	8
15	6	12	1
4	9	7	14

अगर कोई बालक या व्यक्ति पीलिया रोग से पीड़ित हो तो उपरोक्त नक़्श को लिखकर और पानी में धोकर, उस पानी से रोगी का मुँह धुलवा दें। इस प्रयोग से उसका पीलिया घटना शुरू हो जाएगा। रोगी को जब तक पूरा लाभ न हो जाए, इस प्रयोग को नित्य करते रहें।

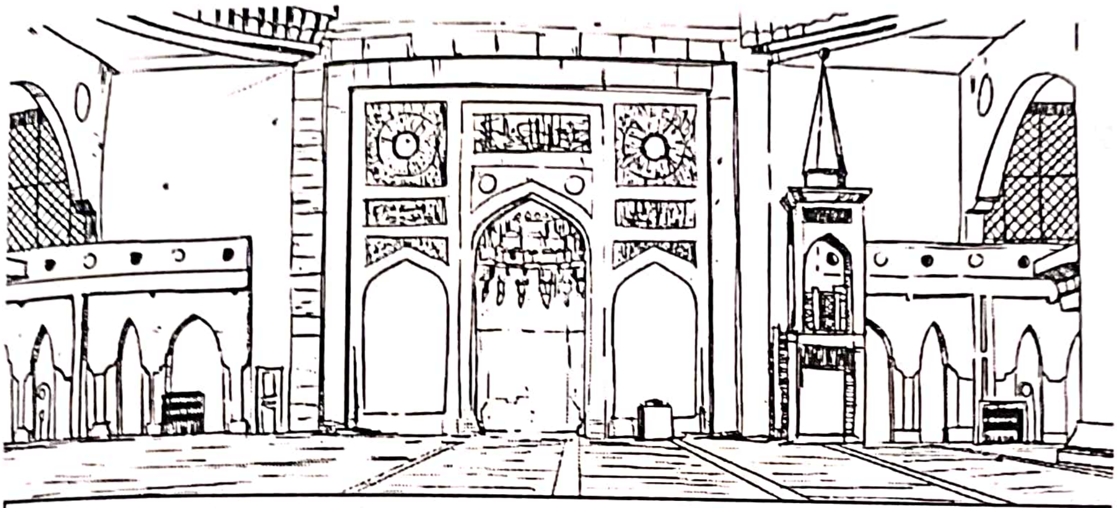

इस्माईल जोगी के करामाती अमल

'अमल' शब्द का शाब्दिक अर्थ है कार्य, पुण्य कर्म, लोकाचार आदि। जिस प्रकार से हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्र में तंत्र-मंत्र की सहायता से मनोकामनाओं की पूर्ति की जाती है, ठीक उसी प्रकार से अच्छे अमल, गंडे-तावीज-नक्श-फलीते तथा कुरआन की आयतों के द्वारा मनोकामना सिद्धि के अतिरिक्त कष्टों का निवारण भी किया जाता है। अग्रांकित वर्णित विशिष्ट अमलों का प्रयोग श्रद्धा के साथ करके अभीष्ट की सिद्धि संभव है।

नींद कम आने का अमल

सोते समय यह आयत पढ़ें, यदि नींद कम आती है तो अधिक आने लगेगी।

इन्नल्लाहि व मलाइकतिहि युसल्लुना अलन्नबिय्यि,

या अय्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलयहि व सल्लिमू तस्लीमा।

सीधी राह पाने के लिए अमल

जब आदमी अपनी राह भूल जाता है तो उसे चाहिए कि अज़ान पढ़े, फिर अल्लाह का नाम लेकर किसी एक दिशा की ओर चलने लगे। इंशा अल्लाह वही उसकी सीधी राह होगी।

जिन्नों को भगाने का अमल

जिस स्थान पर मकान या इमारत में जिन्न हों और उनसे लोगों को परेशानी हो तो उस स्थान पर जोर-जोर से अज़ान दें। जिन्न वहाँ से भाग जाएगें।

मिरगी रोग दूर करने का अमल

पाक-साफ पानी पर सूरः फातिहा व आयतल कुर्सी और पांच आयतें पहले कुल ऊहिया पढ़कर उसके मुँह पर मारें। अल्लाह के हुक्म से आराम होगा। यदि वह पानी घर में छिड़क देगा तो आसेब घर से निकलकर भाग जाएगा और फिर न आएगा।

आंधी के नुकसान से बचने हेतु अमल

जब आंधी जोर से चले और किसी प्रकार के नुकसान का खतरा हो तो उस समय सूरः इख्लास व सूरः नास तीन-तीन बार पढ़ना चाहिए।

क्रोध समाप्ति का अमल

यदि कोई व्यक्ति क्रोध और गुस्से से भरा हो तो उसे चाहिए कि—

आऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम.

उपरोक्त अमल को पढ़ने से इंशा अल्लाह गुस्सा दूर हो जाएगा और शैतानी फरेबों से भी निज़ात मिलेगी।

बुरे स्वभाव से बचने का अमल

यदि कोई आदमी बुरे स्वाभाव का हो या तेज कलाम हो तो उसे चाहिए कि अधिकता से इस्तग़फार पढ़ा करे अर्थात यूं पढ़े—

अस्तग़फिरुल्लाहा रब्बी मिनकुल्ली ज़म्बिंव वअतूबु अलयहि.

चोरी का माल मिल जाने का अमल

चोरी के माल मिलने के लिए नबी करीम सल्ल.

पर दरूद भेजकर यह पढ़ें—

लाहवला क्ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल
अलिय्यिल अज़ीम.

बिच्छू का जहर उतारने हेतु अमल

यदि किसी के बिच्छू काटे तो सूरः फातिहा पढ़कर काटी हुई जगह पर दम करो। बिच्छू का जहर खत्म हो जाएगा।

आग बुझाने का अमल

जब कोई आग लगी हुई देखे तो वह अल्लाहु अकबर बार-बार कहे। आग बुझ जायेगी। उलेमा ने इसे बड़ा कामयाब अमल बताया है।

माल/संतान की सुरक्षा के लिए अमल

जो आदमी आयतुल कुर्सी को अपने माल या अपनी औलाद पर पढ़कर दम करे या लिखकर गले में लटका दे तो वे शैतानी हमलों से बचे रहेंगे।

जिन्न/आसेब से बचाव हेतु अमल

यदि आयतुल कुर्सी को लिखकर घर में दाखिल होने वाले दरवाजे पर लटका दी जाए या हर दिन

तीन बार पढ़कर घर में फूँक दें तो जिन्न व भूत उस घर में कभी भी दाखिल न हो सकेंगे।

हर बीमारी से निज़ात का अमल

सूरः फातिहा हर बीमारी की दवा है। फज्र की नमाज के फर्ज व सुन्नतों के बीच 41 बार पढ़कर रोगी के ऊपर दम कर दें। हर बीमारी दूर हो जाएगी।

मनोकामना पूर्ति का अमल

इशा की नमाज के बाद चार रकाअत नमाज और पढ़े जिसकी पहली रकाअत में सूरः फातिहा के बाद आयतल कुर्सी तीन बार और बाकी तीन रकाअतों में सूरः फातिहा के बाद सूरः इख्लास और सूरःफलक और सूरः नास एक-एक बार पढ़ें और सलाम के बाद दुआ मांगे तो आपकी दिली मुराद अल्ला पूरी कर देगा।

भूख व तंगहाली से बचाव का अमल

जो व्यक्ति भूख व तंगी दूर करने के लिए 'ला हवलावला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम.' पढ़ेगा, थोड़े ही दिनों में मालामाल हो जाएगा।

दुख, परेशानी व कैद से छुटकारा पाने हेतु अमल

हर प्रकार की बीमारी, दुख, परेशानी ओर कैद से नजात हासिल करने के लिए नीचे लिखी आयते करीमा को दिल की गहराई के साथ पढ़ें। यह आयत हर रोग के लिए बड़अकसीर है।

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन

कर्ज़ अदायगी हेतु अमल

यदि कोई आदमी क़र्ज़दार हो और कर्ज वाला उसे परेशान कर रहा हो। आए दिन तंग करता हो तो ऐसी सूरत में उसे शहर या घर छोड़कर भागने की कोई ज़रूरत नहीं, बल्कि उसे इरादा कर लेना चाहिए कि वह सारा हिसाब बहुत जल्द साफ कर सकता है। वह अपनी परेशानी दूर करने के लिए हर रात को 12 बजे उठकर सूरः फातिहा पढ़ें और 55 दिन तक लगातार इसे पढ़ता रहे। इंशा अल्लाह ग़ैब से मदद होगी और समस्त परेशानियाँ भी जल्द दूर होंगी।

रोजी में वृद्धि हेतु अमल

यदि कोई आदमी अपनी रोजी की ओर से

परेशान हो और रोज मुश्किल से गुजरे तो उसे चाहिए कि सुबह की नमाज के बाद मुसल्ले पर खामोश बैठा रहे। जब सूरज की किरण निकलने लगे तो पहले व बाद में 11–11 बार दरूद शरीफ पढ़कर—

फ़-स-यकफ़ीकहुमुल्लाहु व हुवस्समीउल अलीम.

396 बार पढ़कर खुदा से दुआ करें कि मेरे तमाम अगले पिछले गुनाह माफ फरमाए और उम्मते मुहम्मदी को बख्श दें। खुद के वास्ते कोई दुआ सांसारिक उद्देश्य के लिए न करें।

सूरः फातिहा अपने आप पर दम करें। उसी से रोजी हासिल करें। जिस दिन से अमल शुरू किया जाएगा, उसी दिन से आमदनी बढ़ना शुरू हो जाएगी।

यदि पांचों वक्त की नमाजों में यही अमल करते रहे तो जल्द ही तंगी दूर हो जाएगी। जिक्र करने वाले को चाहिए कि पाकी, वुज़ू, तकवा और परहेज़गारी अपनाए रखें और हर तरह से शरीअत की पाबंदी करता रहें।

बुखार खत्म करने हेतु अमल

बुखार कोई व्यक्ति बुखार के जोर से परेशान हो और किसी भी दवा से बुखार न उतर रहा हो

तो उसे हर इलाज व दवा को त्यागकर अमल व रूहानी इलाज की ओर ध्यान देना चाहिए।

हज़रत इमाम जाफर सादिक रजि. ने फरमाया कि सूरः फातिहा चालीस बार पानी के प्याले पर पढ़कर बुखार वाले रोगी के मुँह पर छींटा मारने से सेहत ठीक हो जाती है ओर पुराने-से-पुराने बुखार का भी जोर टूट जाता है।

दिमाग़ी कमज़ोरी दूर करने का अमल

कुछ लोग घरेलू हालात, आर्थिक स्थिति और बच्चों के कारण मानसिक परेशानी को शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोगों के मस्तिष्क में सख्त टेंशन होता है, उन्हें इस कारण हरेक, पर गुस्सा आ जाता है। कभी-कभी ऐसे रोगियों की दिमागी रग फट जाने से मौत भी हो जाती है।

ऐसे दिमागी रोगियों को अपनी यह बीमारी खत्म करने के लिए अपने खाने में नमक की मात्रा कम कर देनी चाहिए। इलाज के लिए किसी मोमी काग़ज के एक टुकड़े पर जाफरान और गुलाब के अर्क से—

'अर्रजा अत अमा नवील'

लिखकर एक सेर शहद में डाल दें। यह शहद एक-एक चम्मच तीन बार रोजाना खाएँ। जब तक

सेहत पूरी तरह ठीक न हो जाए, इस इलाज को न छोड़ें।

हर कार्य में सफलता हेतु अमल

यदि कोई आदमी यह चाहे कि उसकी सारी-की-सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाएँ तो उसको चाहिए कि वह पाँच साल तक बिना किसी नाग़ा इस अमल को पढ़ें और जब तक अमल खत्म न हो जाए, एक दिन की भी नागा न करे, वरना सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।

अमल यह है—

'अल्लाहु हू हू हू'

इस इस्म मुबारक को एक हजार बार दरिया में अपने पावं लटकाकर पढ़ता रहे। इस बीच में यदि कोई डरावनी शक्ल नजर आए तो किसी हाल में भी डरना नहीं चाहिए और किसी डर व आतंक को दिल में जगह न दें।

लाभ प्राप्ति के लिए अमल

यदि देखा जाए कि किसी कारण अनाज का भाव कम हो गया है और बराबर नुकसान होता जा रहा है तो परेशान होने की जरूरत नहीं और न अपने अनाज को सस्ते दामों मे बेचने की

जरूरत है, बल्कि खुदा पर भरोसा करते हुए इस अमल को शुरू कर दें। यदि खुदा ने चाहा तो गैब से अनाज की बहुत अधिक मांग पैदा होगी जिससे आपको लाभ-ही-लाभ होता चला जाएगा। इस अमल को पांच दिन तक बराबर पढ़ना होगा।

'अंजर फ़ी या रहीम या करीम या ग़फ़ूर या सखी'

रोजाना ग्यारह सौ बार पढ़ें। एक दिन की भी नागा नहीं होनी चाहिए। अपना ध्यान एक ही ओर लगाए रखें और दिल से इस अमल को करते रहें, फिर देखिए अनाज की मांग किस प्रकार बढ़ती है और दाम दिन-ब-दिन बढ़ना शुरू होते हैं।

दौलत कमाने के लिए अमल

यदि कोई गरीब आदमी हो और वह यह चाहे कि मैं मालदार बन जाऊं तो उसे सब्र और हिम्मत से काम लेकर अल्लाह की मदद का इंतजार करना चाहिए।

यह सच है कि तिजारत से लाभ-हानि दोनों ही होते हैं, लेकिन तिजारत के साथ यदि आप इस वजीफे को भी पढ़ना शुरू कर दें तो देखते-ही-देखते उन्नति होने लगेगी और लोग यही समझेंगे कि सारा लाभ तिजारत ही के जरिए हो रहा है।

लेकिन असल में यह इतना ढेर–सारा लाभ तो आपको इस्माईल जोगी के इस अमल द्वारा होगा, उसी की बरकत से आमिल बहुत जल्द अमीर और दौलतमंद बन जाएगा। अमल यह है–

उ अतीतू ग़नी या मौला या मौली उ अतीतू ग़नी.

हर दिन तिजारत का काम शुरू करने से पहले 777 बार इस अमल को पढ़ लिया करें। इसके बाद अपना काम शुरू कर दें। इस अमल का कोई समय निर्धारित नहीं है।

जब तक इस अमल को करते रहोगे, इंशा अल्लाह उस समय तक लगातार लाभ उठाते रहोगे और दिन–प्रतिदिन तरक्की करके दौलत जमा करते रहोगे।

बिगड़ी बात बनाने के लिए अमल

यदि किसी आदमी की बात या काम बिगड़ जाए तो उसे हिम्मत व बहादुरी से काम लेना चाहिए। यदि हिम्मत व बहादुरी से काम न चले तो ऐसी सूरत में इस अमल का जरूर लाभ उठाना चाहिए। यदि कोई जरूरी बात सर पर आ पड़ी हो तो इस अमल से काम लिया जा सकता है। इस अमल को मामूली कामों में नहीं आजमाना चाहिए।

अपने मकसद व अपनी आरजू को दिल में

जगह देकर इस अमल को दोपहर के समय एकांत में पढ़ना शुरू कर दें और इसे उस समय तक पढ़ते रहना चाहिए, जब तक 555 की संख्या पूरी न कर लो। तब आप इंशा अल्लाह अपने मकसद में अवश्य क़ामयाब होंगे।

वह अमल, जो पढ़ना है इस प्रकार है–

'ला हवला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम.'

शत्रुता हेतु अमल

यदि आपकी किसी से दुश्मनी हो गई है और दुश्मनी भी ऐसी कि दोनों एक–दूसरे के खून के प्यासे हों।

यदि आप ऐसे दुश्मन से बदला लेना चाहें तो आप कागजी नींबू हासिल करें और सेही जानवर का कांटा, जो काले रंग का नोंकदार होता है, उस पर काली सफेद धारियाँ होती हैं इन दोनों चीजों को लेकर ऐसे गड्ढे या कुएँ पर चले जाओ जो शहर से बाहर हो।

वहां जाकर उस कुएँ पर या गड्ढे में अपने पांव लटकाकर बैठ जाओ। इसी के साथ आसमान की ओर मुँह करके यह मंत्र पढ़ते जाओ–

दुहाई हिन्दू मत पीर की।
दुहाई राजा जयपाल की।

जब कोई तारा आसमान की ओर से टूटे तो तुरंत ही इस कांटे को उस नीबू में अपने दुश्मन का नाम लेकर दाखिल कर दो और ऐसे ही लेकर वापस आ जाओ। जब वापस आओगे तो कुएँ से आवाजें आने लगेंगी। आप मुड़कर हरगिज न देखें, वरना जान का खतरा रहेगा। जब तक आप उस कांटे को नीबू से बाहर न निकालेंगे, उस समय तक आपका दुश्मन तरह-तरह की तकलीफों का शिकार रहेगा। कांटा जब निकाल लोगे तो फिर वह अपनी सामान्य हालत में आ जाएगा।

सिरदर्द नाशक अमल

यदि किसी के पूरे या आधे सिर में दर्द हो रहा हो और वह दर्द से परेशान हो रहा हो तथा दर्द किसी भी दवा से अच्छा न हो रहा हो तो ऐसी हालत में इस अमल से लाभ उठाना चाहिए। यह वह अमल है, जो पहले केवल एक खानदान के सीने तक ही सुरक्षित था लेकिन यहाँ बड़ी दरियादिली से काम लेकर इस अमल को कंजूसी की दलदल से निकालकर इस किताब में दिया है, ताकि लोग इस अमल से स्वयं भी लाभ उठाएँ

और दूसरों को भी फायदा उठाने का अवसर दें। अमल यह है—

काला कलवा कलसरा कजली बन जाए उठो अहमद बालक के सर का दर्द दूर कर दे।

तरीकाः शहादत की उंगली और अंगूठे से पेशानी को थामो और दूर से दोनों उंगलियों को धीरे-धीरे दबाते हुए इतना निकट लाओ कि वह माथे के बीच में आकर मिल जाए। इस प्रकार यह अमल सात बार करो। अमल खत्म होते ही तीन बार हाथ सर पर मार दो। दर्द तुरंत जाता रहेगा।

भयनाशक अमल

यदि किसी जालिम से यातना पहुँचने का डर हो तो यह क़लिमा पढ़ने चाहिए। किसी प्रकार की तकलीफ नहीं पहुंचेगी—

'हसबियल्लाहु व नेमल वकील.'

दुख-दर्द निवारक अमल

जो आदमी बहुत अधिक दुख-दर्द का शिकार हो या उसका किसी ऐसी मुहिम से सामना हो जिसका सुधार उसकी ताकत से बाहर हो तो उसे

चाहिए कि सुबह की नमाज पढ़कर एक सौ बार यह पढ़े—

ला हवला वलाक़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम० या हय्यु या क़य्यूमु या फ़रदु या ख़ातिरू या अ-ह-दु- या स-म-दु।

इंशा अल्लाह हर प्रकार के दुखों से नजात पा जाएगा।

धनवान बनने का अमल

दौलतमंद बनने के लिए सुबह की फर्ज नमाज के बाद रोजाना 25 बार सूरः नसर दिल की गहराई के साथ कुछ दिन तक पढ़ें। इसके पढ़ने से गरीबी दूर हो जाएगी और वह माला-माल हो जाएगा।

गरीबी दूर करने का अमल

जो आदमी अपनी गरीबी से तंग आ गया हो, उसे चाहिए कि अधिकांश समय में यह दुआ पढ़ता रहे। खुदा के हुक्म से उसकी तंगी आसानी से खत्म हो जाएगी और उसकी गरीबी मालदारी में बदल जाएगी।

व मा क़ाइमिल इज्ज़ वलमुल्का पल बक़ाई या जुल जलाली वल जवदि वल फ़ज़ली वल

अताया व जुल आर्शिल हीदु या फ़जालु ललिमा युरीद.

सूरः ताहा का अमल

हजरत हाजी इमाददुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह. इर्शाद फरमाते हैं कि सूरः ताहा का पढ़ने वाला कभी किसी का मोहताज नहीं रहता। इस अमल में सूरः ताहा एक खास तरीके से पढ़ी जाती है वह तरीका यह है कि नौचंदी जुमेरात से इसे पढ़ना शुरू करें समय चाश्त का हो अर्थात दिन के 11 बजे खड़े होकर पढ़ें और लगातार चौदह दिन तक पढ़ते रहें। पढ़ने से पहले चौदह बार शुरू में तथा चौदह बार आखिर में दुरूद शरीफ पढ़ें।

पढ़ने के दौरान किसी से बात न करें। पढ़ने की नागा भी न करें, वरना अमल बेकार हो जाएगा। चौदहवें दिन जब पढ़ चुकें तो दो रकाअत नफ़्ल नमाज पढ़ें जिसमें पहली रकाअत के बाद सूरः फातिहा के बाद सूरः वत्तीन (पारा 30) और दूसरी रकाअत में सूरः कदर (पारा 30) पढ़ें, फिर सज्दे में जाकर 12 बार ताहा पढ़ें और अल्लाह से दुआ माँगें और फिर नमाज खत्म करें। जिस मकसद के लिए इस अमल को करेंगे, वह पूरा

होगा। इंशा अल्लाह अमल के दौरान ही मुराद पूरी हो जाएगी।

तिलिस्मी अँगूठी बनाना

जुमेरात के दिन पहली या दूसरी घड़ी में शीशे का एक टुकड़ा लेकर उसमें एक आदमी का चित्र बनवा लें, जो कि किसी कुर्सी पर बैठा हुआ हो और हाथ में पेड की शाखा लिये हुए हो, फिर इस सूरत के नीचे ये अक्षर लिखें–

ब स अ अ ल

फिर इस शीशे के टुकड़े को अंगूठी में नग की जगह लगा लें और इसके नीचे काफूर रखकर जुमेरात के दिन निकलने से पहले उंगली में पहन लें। इसे पहनकर जो भी दुआ मांगी जाएगी, कुबूल होगी।

तिलिस्मी ताबीज बनाना

जिस समय जोहर बुरूज सौर में और कमर बुरूज सरतान में हो तो चांदी और सोने की एक परत लेकर गला दें और उसका ताबीज बनवा लें। उस पर गाय की सूरत खुदवा दें और मुँह पर नीचे लिखे अक्षर लिख दें–

11 य त व र अ व अ

और सोने पर इन अक्षरों को लिखें—

अ मा 75 अ

जब जोहरा के साथ मिलना चाहता हो तो हल्के रंग का रेशम उसमें डालकर बाजू या गर्दन में डालें। इस तावीज के प्रभाव से हमेशा खुशी प्राप्त होती रहेगी।

सुलेमानी अँगूठी बनाना

जब कमर जद्दी या देव में कमर जोहरा में हो और नजर भी सामद हो। संग रासिख के नगीने पर पीर के दिन किसी आदमी की सूरत बना दी जाए। यह सूरत इस प्रकार बना दी जाए कि दोनों हाथ उठाए हों और सीधे हाथ में मछली और दूसरे हाथ में गधे की तस्वीर हो।

यह अँगूठी जब तैयार हो जाए तो इसे हाथ की किसी उंगली में पहन लिया जाए। इस अँगूठी के पहनने से समाज मे इज्जत मिलेगी। बिगड़े काम बनेंगे और कोई परेशानी सामने नहीं आएगी।

इस अँगूठी के पहनने के बाद गोश्त न खाया जाए तथा लिबास सादा पहना जाए और साँप व ऊँट को न मारा जाए।

लाइलाज मामलों का हल

एक रिवायत में आया है कि यदि ला इलाज मामले पेश आएं तो यह क़लिमा पढ़ना चाहिए—

'हसबियाल्लाहु नेमल मवला नेमल वकील.'

क़र्ज़ की अदायगी

यदि कोई कर्ज से परेशान हो तो नीचे लिखी आयते पढ़ें, इंशा अल्लाह कर्ज से नजात पा जाएगा।

अल्लाहुम्मा इकफ़िनी बिहलालिका अन हरामिका व अग़निनी बिफ़ज़लिका अम्मन सिवाक० सवाका.

दुखों से निजात पाना

जो आदमी हर सुबह और शाम यह क़लिमा सात-सात बार पढ़ेगा, अल्लाह उसे दुनिया व आखिरत के दुखों से नजात देगा।

हसबियाल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अलयहि तवकल्लतु व हुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम.

छोटे बच्चों की सुरक्षा के लिए

बच्चों को हर बला व मुसीबत से सुरक्षित रखने के लिए तथा बुरी नजर से बचाने के लिए नीचे लिखा क़लिमा लिखकर बच्चे के गले में डाल दें।

आऊजु बिकलिमातिल्लाहि मिन शर्रि कुल्ली शयतानिन व हामनिन व मिन शर्रि कुल्लि आयुनिन लाम्मतिन.

निन्यानवें मर्ज़ों की दवा

नीचे का कलिमा 99 बीमारियों की एक दवा है और इनमें एक छोटी बीमारी दुख व गम है। वह कलिमा यह है—

ला हवला वलाक़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम.

लोकप्रियता प्राप्ति के लिए अमल

यदि किसी आदमी के दिल में यह तमन्ना हो कि वह किसी बड़े आदमी की नजर में लोकप्रिय हो जाए या उसे अफसर अधिक महत्त्व देने लगें या वह बड़े लोगों का खास आदमी बन जाए तो उसे चाहिए, वह हमारे इस अमल को पूरा करें।

दो इंच लंबा और दो इंच चौड़ा चांदी का पतरा लो ओर उस पर किसी कारीगर से नीचे लिखे शब्द लिखवा लो—

अश्शमसु वल क़मरू.

इसके बाद चांद ग्रहण होने का इंतजार करो।

चांद ग्रहण होने पर वुजू करके पाक साफ कमरे में दाखिल होकर लोबान की धूनी उस पतरे को दें और अपने पास रखकर चांद की ओर मुँह करके खड़े हो जाओ। अपनी जुबान से धीरे-धीरे अपने दिल की मुराद को भी अदा करते रहो। यह समझ लो कि तुम्हारा काम हो रहा है। अपना मकसद अब जोरदार आवाज में बयान कर चुकने के बाद इस चांदी के पतरे को अपने दाएं हाथ में पकड़कर चांद की ओर नजर करते हुए दस बार इस इस्म को पढ़ो—

अश्शमसु वल क़मरू.

इस वजीफे को 11 दिन तक पढ़ते रहो। अल्लाह ने चाहा तो समय से पहले ही साहब की निगाह में आ जाओगे।

भूला हुआ रास्ता मालूम करने का अमल

यदि कोई मुसाफिर दूर के सफर का रास्ता तय कर रहा हो, लेकिन किसी कारण वह अपना रास्ता भूल गया हो तो उसे चाहिए कि वह नीचे के अमल से काम लेकर अपना भूला हुआ रास्ता तलाश करे। इंशा अल्लाह उसे अवश्य ही रास्ता मिल जाएगा और वह इस पाक अमल के द्वारा

अपनी मंजिल तक अवश्य पहुँच जाएगा। अमल यह है—

दूहदिना हसिरा इह दिना या इहदिना या अल्लाहु.

एक ऊँची जगह पर खड़े होकर अपने दोनों हाथों को आसमान की ओर ऊँचा करे और इस अमल को चालीस हजार बार ऊँची आवाज से पढ़ें। इसके बाद उसका दिल जिस ओर जाने की हिदायत करे, वह उसी ओर चला जाए। इंशाअल्लाह बहुत जल्द वह अपनी मंजिल पा जाएगा।

इस्लामी तन्त्र और घरेलू टोटके

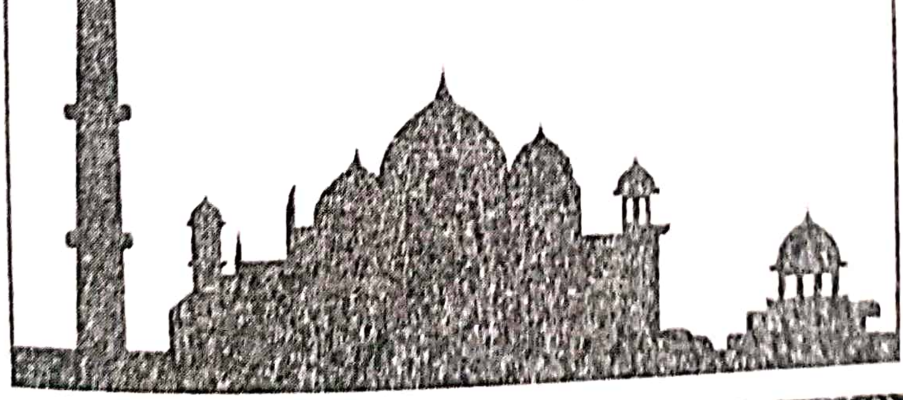

अल्लाह की बरसती रहे रहमत...

पवित्र रमजान के 30 रोजों के बाद सभी के घर में अल्लाह की रहमत बरसती रहे तो ईद की शाम को इस सरल टोटके को जरूर करना चाहिए।

बाजार से कुछ कौड़ियाँ खरीद कर लायें, अब एक हरे कपड़े में 1 चाँदी के सिक्के के साथ 5 या 7 कौड़ियाँ अपनी तिजोरी में शाम के समय रख दें। रखने से पूर्व उन्हें किसी मस्जिद की चौखट से छुआकर लायें। ऐसा करने से तिजोरी सदा भरी रहती है। ईद के दिन अपनी हैसियत के हिसाब से जरूरतमंदों को दान दें। इससे अल्लाह की रहमत बरसती है।

ग्रह, भूत-प्रेतादि नाशक (टोटका)

१. सफेद अपराजिता वृक्ष के पत्ते के रस में जावित्री पीसकर नस लेने (नाक के अन्दर सूँघने) से भूत, प्रेतादि, चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी, दानव आदि की बाधा दूर होती है।

२. अश्विनी नक्षत्र जब रविवार या मंगलवार को पड़े तो उस दिन घोड़े के खुर का नाखून लेकर रख लें, आवश्यकता के समय उस नाखून को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेतादि बाधा दूर होती है। यह परीक्षित मन्त्र है।

३. चन्दन, वच, कूट, सेंधानमक, घी, तेल और चर्बी को मिलाकर धूप (धूनी) देने से बालकों के आधि-व्याधि, टोना-प्रेतादि बाधाएँ दूर होती हैं।

४. काशीफल के फूलों के रस में हल्दी पीस कर पत्थर के खरल में खूब घोटें, अंजन की भाति बना लें फिर उसे अंजन की भाँति आँखों में आँजने से प्रेतादि बाधाएँ दूर होती है।

५. काली मिर्च तथा काली सरसों को महीन पीसकर आँखों में अंजन की भाँति लगाने से भूत-प्रेतादि बाधाएँ दूर होती हैं।

मिरगी का टोटका

१. जायफल को रेशमी धागे में गूँथकर दाहिनी भुजा या गले में धारण करने से मृगी रोग

दूर होता है।

२. एक तोला असली हींग कपड़े में सीकर यन्त्र (ताबीज) जैसा बना लें और इसे गले में पहनने से भी रोग नष्ट हो जाता है।

३. जंगली सूअर के नाखून को अँगूठी की तरह बनवाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से मिर्गी का दौरा पड़ना बन्द हो जाता है।

४. गाय के सींग की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में पहनने से मिर्गी का दौरा पड़ना बन्द हो जाता है।

५. भेड़ के जूँ (जुवें), चीलड़ों को कम्बल के रोवों में लपेट करके ताँबे के यन्त्र में भरकर जिन स्त्रियों या बच्चों को हिस्टीरिया रोग हो उनके गले में बाँध दें, तो हिस्टीरिया रोग नष्ट हो जाता है।

पथरी रोग नाश तन्त्र

दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में भैंसे के पैर की नाल अँगूठी (छल्ला) बनवाकर मंगल या रविवार को धारण करने से पथरी रोग दूर हो जाता है।

वायु गोलानाशक तन्त्र

नदी आदि में चलने वाली नाव की कील (काँटा) ले आयें, फिर घोड़े के खूर की नाल का लोहा इन दोनों को मिलाकर एक कड़ा बनवा ले, उस कड़े का पूजन करने से वायुगोला का दर्द नहीं रहता है। उस कड़े को पानी में डालकर उस पानी को पिलाने से भी भूत, प्रेत, चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधा तथा हूक रोग दूर हो जाता है।

तिल्ली, जिगर, प्लीहा नाश तन्त्र

१. नागफनी के जड़ की माला बनाकर पहनने से तिल्ली-जिगर रोग दूर हो जाता है।

२. बाँझ ककोड़े के वृक्ष की जड़ को रविवार (इतवार) के दिन लाकर रोगी के समीप जलते हुए चूल्हे में बाँध दें, वह गाँठ जैसे-जैसे खुलती जायेगी वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जाएगी।

संग्रहणी व दस्तनाशक तन्त्र

१. सरदेई की जड़ को रविवार के दिन लाकर उस जड़ के सात टुकड़े बना लें और उन टुकड़ों को लाल रंग के डोरे में लपेटकर (बाँधकर) रोगी के कमर में बाँध देने से संग्रहणी-दस्त आना बन्द हो जाता है।

२. गेहुँअन साँप की केंचुल को कपड़े की थैली

में सीकर रोगी के पेट पर बाँधनें से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

आधाशीशी

रविवार या मंगलवार के दिन प्रातःकाल दक्षिण की ओर मुँह करके हाथ में एक गुड़ की ढेली लेकर उसे दाँत से काटकर चौराहे पर फेंक दें, उससे आधाशीशी का दर्द दूर हो जाता है।

दमा-श्वास रोगनाशक

सोख्ता (ब्लाटिंग पेपर) को सोडे में भिगोकर छाया में सुखा ले, फिर उस सोख्ता को जहाँ पर श्वास का रोगी सोता हो वहाँ जलावें, इससे श्वास रोग से आराम मिलता है।

बाल रोगनाशक टोटका

१. सीपियों की माला बनाकर रविवार-मंगलवार के दिन बालक के गले में बाँधने से उसके दाँत आसानी से निकल आते हैं।

२. सम्भालू वृक्ष की जड़ को मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बाँध देने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

३. बालक के हाथ व पैर में लोहे अथवा ताँबे का कड़ा बनवाकर पहनाने से उसे नजर-डीठ आदि का भय नहीं होता तथा दाँत आसानी से

निकल आते हैं।

४. रविवार या मंगलवार के दिन कटनाश (नीलकण्ठ) पक्षी के पंख लाकर जिस चारपाई पर बालक सोता हो उसमें बाँध दें या घुसेड़ दें, उससे बालक डरेगा नहीं और रोना बन्द हो जायेगा।

५. रीठ के फल को छेदकर और धागे में पिरोकर गले में बाँधने से उसे नजर–डीठ, टोना आदि नहीं लगता है तथा हिचकियाँ आना भी बन्द हो जाता है।

६. काले रंग के कुत्ते का १ बाल (रोवाँ) तथा अकरकरा का एक दाना कपड़े में सिलकर गले में बाँध देने से आमाशय सम्बन्धी रोग, ज्वर आदि दूर होता है तथा चैतन्यता आ जाती है।

७. अकरकरा की जड़ को सूत के डोरे से बाँधकर बालक के गले में बाँधने से बालक की मिर्गी दूर हो जाती है।

८. भेड़िया के दाँत को बालक के गले में बाँध देने से बाल अपस्मार रोग दूर हो जाता है।

९. बालक को यदि नजर–डीठ लग जाये तो विशेषकर रविवार–मंगलवार के दिन समूचे लाल मिर्चे को बच्चे के ऊपर से तीन बार उतार कर जलते हुए चूल्हे में छोंक दें, यदि किसी की नजर लगी होगी तो मिर्चों की धौंस नहीं उड़ेगी और

मिर्चों के जलने के पश्चात् ही नजर-डीठ दूर हो जायेगी।

धरन रोगनाशक टोटका

शनिवार की शाम को हल्दी व चावल लेकर जंगल आदि में जहाँ फूली हुई शंखाहुली (शंखपुष्पी, सकौली) को न्यौती दे आयें, फिर रविवार को प्रातःकाल उसी स्थान पर जाकर उस बूटी के पौधे की सात प्रदक्षिणा करें और हाथ जोड़कर प्रणाम करे, फिर सूर्यदेव की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डालें, तत्पश्चात् उसे खोदकर घर ले आयें और जिस व्यक्ति की धरन (नाप) हट गई हो उसके कमर मे बाँध दें, इस प्रयोग से वह तुरन्त ठिकाने पर आ जायेगी।

फील पाँव नाशक टोटका

जिसे पील पाँव हो उसके घर से उत्तर दिशा में उत्पन्न आक (अकोड़ा) वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन लावें, फिर उस जड़ को लाल डोरे में लपेटकर फीलपाँव वाली जगह बाँध दें, इससे रोग धीरे-धीरे ठीक हो जाता है।

मोटापा नाशक तन्त्र

राँगा धातु की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली (बीच वाली अंगुली) में पहनने से

मोटापा कम होता है।

पागलपन नाशक तन्त्र

बिच्छू का डंक व कुत्ते का नाखून तथा कछुवे का खून (रक्त) तीनों को ऊँट की खाल (चमड़े) में मढ़वाकर ताबीज बनवा लें और उस ताबीज को पागल मनुष्य के गले में बाँध देने से पागलपन दूर हो जाता है।

मासिकधर्म विकार नाशक टोटका

मासिक धर्म की खराबी से जिस स्त्री के पेडू में दर्द रहता हो, तो रविवार या मंगलवार की रात्रि को मूँज की रस्सी अपनी कमर में बाँधकर सो जाना चाहिये और प्रातः खोलकर किसी चौराहे पर फेंक देना चाहिये, उससे मासिकधर्म की खराबी के कारण होने वाला पेडू का दर्द ठीक हो जायेगा।

बाँझपन नाशक तन्त्र

१. जिस दिन श्रवण नक्षत्र हो, उस दिन काले एरण्ड वृक्ष (काले रंग) की जड़ लाकर धूप-दीप देकर वन्धया स्त्री के गले में बाँध देने से बाँझपन दोष दूर हो जाता है।

२. श्रावण के महीने के कृष्णपक्ष (श्रावणवदी) में जब रोहिणी नक्षत्र हो, उस दिन एक मिट्टी के कोरे घड़े को लेकर नदी तट पर जाए और

वहाँ कमर को थोड़ा-सा झुकाकर उस घड़े में नदी का जल भर ले, उस जल को बाँझ स्त्री को थोड़े दिन पिलावें तो उससे गर्भ ठहरेगा।

३. पलाश वृक्ष (छिपला वृक्ष) के १ पत्ते को किसी गर्भवती स्त्री के दूध में भिगोकर ऋतुस्नान के बाद सात दिन तक खाने से वन्ध्या रोग दूर हो जाता है।

४. कदम्ब वृक्ष का पत्ता, श्वेत बृहती (सफेद भटकटैया) की जड़ बराबर मात्रा में बकरी के दूध अथवा गौक्षर (गोखड़) के बीज, सम्भालु वृक्ष के पत्तों के रस में पीसकर ५ दिन तक खाने से पुत्र प्राप्त होता है।

गर्भ पीड़ानाशक टोटका

१. कुँवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत को लेकर, गर्भवती स्त्री के सिर से पैर तक नापकर उसके बराबर २१ बार टुकड़े कर (उतने बड़े २१ टुकड़े) धागे लेकर उनमें काले धतूरे के वृक्ष की जड़ से प्रत्येक धागे में एक-एक टुकड़ा बाँधें, फिर उन सभी को इकट्ठा करके गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध दें, इससे गर्भस्राव या गर्भपातादि नहीं होता है।

२. खरेटी वृक्ष की जड़ को कुँवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत में लपेट कर गर्भवती स्त्री

की कमर में बाँध देने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

३. कुम्हार के हाथ में लगी मिट्टी, जो कुम्हार के चाक के ऊपरी हिस्से की हो, उसे बकरी के दूध में मिलाकर गर्भवती स्त्री को पिला देने से उसका गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

४. गर्भवती स्त्री को शिवलिंगी के बीज का एक दाना जिस दिन रजोधर्म प्रारम्भ हो, उसी दिन से एक दाना जल के साथ निगल जाना चाहिये, यह क्रिया सात दिन तक करनी चाहिये।

५. फिटकरी और बाँस की छाल को कूटकर जल में खूब औटा कर निरन्तर सात दिन एक छटाँक (50 से 60 ग्राम) पीना चाहिये, ऐसा करने से गर्भ नष्ट नहीं होता।

सुख प्रसव कारक टोटका

१. सरफोंका की जड़ को गर्भवती स्त्री के कमर मे मंगलवार को बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२. अपामार्ग (लटजीरा) की जड़, गुरु पुष्य-नक्षत्र अथवा रवि पुष्य में लाया हुआ, उसकी जड़ आदि को गर्भवती के गले या बालों की लट में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

३. भिण्डी के पेड़ को जड़ सहित उखाड़ लें और उस जड़ के छिलके को पीसकर मिश्री व काली मिर्च मिलाकर पिला देने से शीघ्र प्रसव होता है।

४. जिस इमली के पेड़ में फूल न लगें हों, ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ गर्भवती स्त्री के सामने शिर के बालों में बाँध देने से शीघ्र सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नोट – प्रसव के पश्चात् जितने बालों में जड़ बाँधी गयी है, उतने बालों सहित काटकर फेंक देना चाहिये।

५. चकमक पत्थर को कपड़े में लपेटकर गर्भवती स्त्री की जाँघ में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

६. चकमक को स्त्री के नितम्ब पर साँप की केंचुल के साथ बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

७. बारहसिंगे के सींग को गर्भवती स्त्री के स्तन के समीप बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

८. लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बाँधकर गर्भवती स्त्री के बायें हाथ पर बाँध देने सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गर्भ न ठहरने का टोटका

१. हाथी की लीद स्त्री की योनि में रख देने से गर्भ नहीं ठहरता।

२. जिस छोटे बालक का सर्वप्रथम जो दाँत गिरने वाला हो, उसे गिरते समय पृथ्वी पर न गिरने दें, हाथ में ले लें, फिर उसे चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर जो स्त्री अपनी बाँयी भुजा में धारण करेंगी तो उसे गर्भ नहीं ठहरेगा।

बवासीर नाशक टोटका

१. कार्तिक के महीने में जंगल से सूरन (जमीकन्द) को खोद लेवें। फिर उसकी चकत्तियाँ बनाकर छाया में सुखा लें और आवश्यकता के समय उन चकत्तियों को काले रंग के डोरे में गूँथकर कमर में धारण करने से बवासीर के मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

२. बवासीर के मस्सों के नीचे साँप की केंचुल रखने से बवासीर का कष्ट दूर होता है।

ज्वरादि नाशक टोटका

१. रविवार के दिन ज्वर के रोगी से पतवार (मूंज के पौधे में) सूर्योदय से पहले गाँठ लगवा दें। इससे ज्वर दूर होता है।

२. मकड़ी के जाले को रोगी के गले में बाँधकर

लटकाने से ज्वर दूर हो जाता है।

महाज्वर नाशक मन्त्र

१. लोगलीमूल (नारियल वृक्ष की जड़) को रोगी के गले में बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

२. बृहस्पति मूल (कटोरी की जड़) को रोगी के मस्तक पर बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

शीत ज्वर (जुड़ी) नाशक तन्त्र

१. शनिवार के दिन बबूल वृक्ष की जड़ को सफेद डोरे में रोगी की भुजा में बाँध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

२. सफेद कनेर की जड़ को रोगी की दाहिनी भुजा में बाँधने से शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

३. एक मक्खी, थोड़ी सी हींग तथा आधी काली मिर्च इन सबको पीसकर रोगी की आँख में अंजन की भाँति लगा देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

४. रविवार या मंगलवार के दिन लहसुन के सात नग (सतजवा) पीसकर काले कपड़े में रखकर रोगी के पाँव के अँगूठे में बाँध दें और तीन घण्टे के बाद उसे खोलकर किसी चौराहे पर फेंक दें, इससे शीत ज्वर की पारी रुक जाती

है।

५. आठ पाँव वाले मकड़े के जाले को लाल रंग के कपड़े में लपेटकर बत्ती बना लें, फिर मिट्टी के दीपक में सरसों का तेल भरकर उसमें बत्ती को डालकर जलायें और काजल निकालकर उसको रविवार या मंगलवार के दिन दोनों आँखों में सात-सात बार लगाने (आंजने से) पारी जवर तथा शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

विषम ज्वरनाशक टोटका

१. चौराई की जड़ को रोगी के सिर में बाँध देने से विषम ज्वर दूर होता है।

२. रविवार के दिन अपामार्ग (चिरचिटा, लटजीरा) की जड़ को उखाड़ लायें और उस जड़ को सूत के डोरे में लपेट कर पुरुष रोगी की दाहिनी भुजा में और स्त्री रोगी की बाँयी भुजा में बाँध दें, इससे विषम ज्वर-शान्त होता है।

३. सफेद फूल वाले कनेर वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन उखाड़ कर रोगी के दाहिने कान अथवा भुजा में बाँध देने से विषम ज्वर दूर होता है।

पारी बुखार तथा मलेरिया नाशक तन्त्र

१. रविवार के दिन आक (मदार, अकौड़ा) की जड़ को उखाड़ लाये और रोगी के कान में बाँध

देने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते है।

२. रविवार के दिन प्रातः समय सइदेई तथा निर्गुण्डी की जड़ को लाकर और दोनों को रोगी की कमर में बाँध दें, इससे हर प्रकार के पारी ज्वर तथा कम्प ज्वर भी शान्त हो जाते है।

३. रविवार के दिन संध्या समय कोरे मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसमें एक सोने की अँगूठी डाल दें, एक दो घण्टे बाद मलेरिया, पानी ज्वर के रोगी को किसी चौराहे पर ले जाकर उस घड़े के जल से स्नान करा दें, स्नान के बाद घड़े से अँगूठी निकाल लें, इससे भी पारी का ज्वर शान्त हो जाता है।

४. रविवार के दिन सफेद फूल वाले धतूरे वृक्ष की जड़ को उखाड़ कर रोगी की दाहिनी भुजा में धारण कराने से पारी ज्वर शान्त हो जाता है।

५. कुत्ते के मूत्र में मिट्टी सानकर गोली बना लें और धूप में सुखा लें और उस गोली को रोगी के गले में बाँध दें, इससे पारी ज्वर शान्त होकर दुबारा नहीं आता है।

६. शनिवार के दिन ताड़ के सूखे वृक्ष की जड़ की मिट्टी लाकर रविवार को प्रातःकाल उसे घिसकर चन्दन की तरह रोगी के मस्तक में

अच्छी तरह से लगा देने से पारी ज्वर शान्त होता है।

७. शनिवार के दिन मोरपंखी वृक्ष को शाम को न्यौता कर आयें और रविवार को प्रातः उखाड़ कर ले आयें और लाल डोरे में लपेटकर रोगी के गले अथवा हाथ में बाँध देने से इकतरा ज्वर शान्त होता है।

८. काले सर्प की केंचुल को रोगी के कमर में बाँध देने से पारी-पारी से आने वाला ज्वर शान्त हो जाता है।

९. भृंगराज वृक्ष (भंगरे) की जड़ को सूत में लपेट कर रोगी के सिर में बाँधने से चौथिया ज्वर शान्त हो जाता है।

१०. उल्लू पक्षी के पंख तथा स्याह गूगल इन दोनों को कपड़े में लपेटकर बत्ती बना ले, कज्जल (काजल) पार लें, इस काजल को आँखों में लगाने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते है।

११. मंगलवार के दिन छिपकली (बिछतुइया) की पूँछ काटकर उसे काले रंग के कपड़े में सिलकर यन्त्र की भाँति रोगी की भुजा में धारण करने से मलेरिया व पारी का ज्वर दूर होता है।

१२. रविवार के दिन गिरगिट की पूँछ काटकर उसे रोगी की भुजा अथवा चोटी में बाँध देने से

चौथिया ज्वर शीघ्र दूर होता है।

जीर्ण-ज्वर तथा रात्रि-ज्वर नाशक टोटका

१. मकोय की जड़ रविवार के दिन रोगी के कान में बाँधने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

२. भृंगराज (भंगरे की जड़) को डोरे में बाँधकर रोगी के कान में बाँध देने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

३. जीर्ण ज्वर के रोगी के शरीर में बकरी का रक्त (खून) प्रवेश करा देने से रोगी स्वस्थ और ठीक हो जाता है।

भूत ज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक टोटका

१. आपमार्ग (चिरचिटा-आँगा) की जड़ रविवार या मंगलवार को दाहिनी भुजा में बाँधने से भूत ज्वर उतर जाता है।

२. लाल फूल वाले पलाश वृक्ष की जड़ मंगलवार को लाल डोरे में दाहिनी भुजा में बाँधने से भूत ज्वर उतर जाता है।

३. नीम-बकुची तथा अंजन को रोगी की आँखों में काजल की भाँति लगाने से भूत ज्वर उतर जाता है।

४. हुलहुल वृक्ष की जड़ का अर्क रोगी के कान

में डालने से भूत ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

५. मुर्गे की बीट (मुर्गे की टट्टी), काले सर्प की केंचुल, बन्दर के बाल, लहसुन, घी, गूगल तथा कबूतर की बीट इन सबको एकत्रित करके रोगी को इनकी धूप देने से भूत ज्वर तथा सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते है।

६. अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा उसके फूलों को पीसकर गोली बनाकर रोगी के भुजा में बाँधने से सन्निपात ज्वरादि ठीक होते है।

सर्प-बिच्छू विष नाशक टोटका

१. गुरु-पुष्य नक्षत्र में या रवि-पुष्य नक्षत्र में ऑंगा (अपामार्ग-लटजीरा-अजाझार) की जड़ लाकर रख लें, जिस व्यक्ति को बिच्छू ने डंक मारा हो उसकी नाभि में वह जड़ लगा दें या कान में बाँध दें या जहाँ डंक मारा हो वहां लगा देने से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है। यह सैकड़ों रोगियों पर आजमाया हुआ परीक्षित उपाय है।

२. हुलहुल वृक्ष की जड़ को सात बार सुँघा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

३. सर्प जिस व्यक्ति को काटे उसी समय पीपल वृक्ष की कोमल दो टहनियाँ लेकर एक-एक बालिश्त की दो टहनियाँ सर्प काटे व्यक्ति के कान में (एक दाहिने कान में, दूसरे बाँये कान

में) लगायें और मजबूती से दोनों टहनियाँ पकड़े रहे अन्यथा वह कान के अन्दर घुस कर पर्दा फाड़ देगी, इस क्रिया से सर्प विष उतर जाता है।

४. मोर के पंखों को चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति चिलम पीने से सर्प का विष उतर जाता है।

५. आषाढ़ मास में शुक्लपक्ष में रविवार के दिन ईश्वरमूल वृक्ष की जड़ को लाकर डोरे में बाँध कर हाथ में बाँधने से साँप के काटने का भय नहीं रहता।

रोगादि दोष-निवारण का टोटका

मिट्टी के सात करवे तथा उनके ढक्कन लायें और सात प्रकार के रेशम लाकर उनके ऊपर सिन्दूर लगायें। फिर सातों करवों को क्रमशः लाल, पीला, हरा, काला, गुलाबी, भूरा तथा सफेद रंगों से एक-एक रंग का एक-एक करवा रंगे। फिर अगर कपूर, छाड़छबीला, कपूर कचरी इन सबको मिलाकर सात पुड़िया बना लें। फिर उन रंगे हुए करवों में कड़ुवा तेल (सरसों का तेल) डालकर उनका मुँह ढक्कन से बन्द कर दें और सात पुड़ियाँ में से एक-एक पुड़िया सातों पर रख दें और संध्या समय इन उतारों को रोगी के समक्ष रख

दें और रोगी के ऊपर उतारा कर सबको किसी नदी-तालाब-पोखरा आदि जलाशय में विसर्जित कर दें। इससे सभी प्रकार की आधि-व्याधि रोग दूर होते हैं।

वीर्य स्तम्भन टोटका

१. सूअर के दाहिने दाँत को कमर में बाँधकर मैथुन करने से काफी समय तक वीर्य स्तम्भन होता है।

२. कमलगट्टे को शहद में पीसकर नाभि के ऊपर लेप करके मैथुन करने से काफी स्तम्भन होता है।

३. काले साँप की हड्डी को कमर में बाँधकर मैथुन करने से विलम्ब से वीर्य स्खलन होता है।

४. ऊँट की हड्डी में छेद करके पलंग के सिरहाने बाँध दें और उसी पलंग पर मैथुन करे, तो इससे स्तम्भन होता है।

स्त्री वशीकरण टोटका

१. खस, चन्दन, शहद इन तीनों चीजों को एक में मिलाकर तिलक लगाकर जिस स्त्री के गले में हाथ डाले, वह स्त्री वश में हो जायेगी यह साधन सब प्रकार की नारियों के लिए है।

२. चिता की भस्म, वच, कूट, केशर और गोरोचन

इन सबको बराबर-बराबर मात्रा में लेकर एक मे पीसकर चूर्ण बना करके जिस स्त्री के सिर पर वह चूर्ण छोड़े, वह स्त्री वश में हो जायेगी।

३. चिता की भस्म, कूट, तगर, वच और कुंकुम यह सब पीसकर स्त्री के शिर और मनुष्य के पाँव तले डाले तो, जब तक वह जीते रहेंगे, तब तक दोनों एक दूसरे के दास बने रहेंगे।

४. खोपड़ी लाकर उसमें धतूरे का बीज रक्खें, फिर उसमें शहद और कपूर मिलाकर पीसें और अपने माथे पर तिलक करें तो देखने वाले चाहे वह स्त्री हो या पुरुष सभी उसके वशीभूत हो जाते हैं। यह वशिष्ठ जी का बताया हुआ उत्तम कापालिक योग हैं। अब खोपड़ी का प्रयोग गैरकानूनी है।

५. जब रवि-पुष्य नक्षत्र हो तब नदी किनारे झाऊ की जड़ मँगा लें और उसमें कुड़े की छाल मिलाकर उसके बराबर चिता की भस्म मिला दें। जो बकुनी तैयार होगी, वह जिस स्त्री के सिर पर डाल दी जायेगी, वह वश में हो जायेगी।

६. काले कमल, भौंरा के दोनों पंख, तगरधूल, सफेद कौवा ठोठी, (कौवा ठोठी एक फल होता है।) इन सबका चूर्ण बनाकर जिस किसी स्त्री

के सिर के ऊपर डाल दिया जाता है तो, वह स्त्री शीघ्र दासी हो जायेगी।

७. माघ महीने में, दिन बुधवार, तिथि अष्टमी और स्वाती नक्षत्र हो, उसी दिन आँक(मदार) के वृक्ष को एक पैसा और सुपारी (कसैली) से न्यौत आये और दूसरे दिन उसकी नवीन कोपल तोड़ लाये, फिर जिस स्त्री के हाथ पर डालें, वह वश में हो जायेगी।

८. रविवार या मंगलवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन धोबी के पैर की धूलि लाकर रविवार के दिन जिस स्त्री के सिर पर वह डाल दी जायेगी, वह वश में हो जाती है।

९. रात्रि के पश्चात् जो पुरुष अपने बाँयें हाथ में अपना वीर्य लेकर जिस स्त्री के बाँयें चरण के तलुवे में मल दें, वह स्त्री सदा के लिये उसकी दासी हो जाती है।

१०. रविवार के दिन काले धतूरे का पंचाग (फल, फूल, पत्ता, जड़, शाखा) यानि पाँचों अंग लेकर केसर, गोरोचन, रोरी के साथ पीसकर तिलक करे और फिर जिस स्त्री को देखे, वह अवश्य ही वश में हो जाये, चाहे वह इन्द्रासन की परी क्यों न हो। यह परीक्षित प्रयोग है। इसे बनाने में पुष्य नक्षत्र, दिन रविवार या मंगल

हो, उसी दिन सब सामान लाकर बनाना चाहिये, अन्यथा लाभ नहीं होगा।

पति वशीकरण टोटका

१. गोरोचन और योनि का रक्त केले के रस में मिलाकर इसका तिलक लगावे और पति के सम्मुख जावे, तो उसका पति वशीभूत हो जाता है।

२. सफेद सरसों और अनार का पंचाग (फल, फूल, पत्ती, जड़, शाखा) को एक में पीसकर अपनी योनि पर लेप करने से यदि स्त्री दुर्भगा भी हो तो अपने पति को दास समान अपने वश में कर लेती है।

३. नीम की लकड़ी की धूप बनाकर उसी नीम की लकड़ी की धूप से योनि को धूपित करके जो स्त्री अपने पति से विषय करती है, वह उसे अपना दास बना लेती है।

विदावणी-सिद्धिः मन्त्र

हँ यँ रँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साध्य साध्य कुलेश्वरि स्वाहा।

युद्ध में मरे हुए मनुष्य की अस्थि (हड्डी) गले में बाँध कर एकान्त में, रात्रि समय में बैठकर उक्त मन्त्र का जप करना चाहिये। जिस दिन बारह

लक्ष का जप समाप्त होता है, उसी दिन सिद्धि होती है।

बैताल सिद्धि

मंगलवार के अर्द्धरात्रि के समय साधक नीम की लकड़ी को श्मशान में गाड़कर उस स्थान में बैठ दश हजार महिषमर्दिनी का मन्त्र जप करे। मन्त्र – 'महिषमर्दिन्यै स्वाहा' और शमशान में रहकर एक सहस्त्र होम करे, तदनन्तर वह निम्बकाष्ठ निकाल उसमें दण्ड और पादुका अंकित करनी चाहिये, फिर दुर्गाष्टमी की रात्रि में यह निम्ब काष्ठ (नीम की लकड़ी) शमशान में लाकर उसके ऊपर शव रख यथाविधि पूजा करनी चाहिये। फिर उस शमशान पर बैठकर ऊपर लिखित अष्टाधिक सहस्त्र जप करके मातृगणों के उद्देश्य बलि दे, 'स्फें स्फें' इत्यादि मन्त्र से काष्ठ का आमन्त्रण करे, इसके उपरान्त जिस-जिस स्थान में बैताल को नियुक्त करे, यह दण्ड उसी-उसी वृत्ति को चूर्ण कर फिर साधक के निकट आता है। जिस किसी कार्य में उस दण्ड को नियुक्त करे, वही बैताल सिद्ध होगा।

योगिनी साधना

प्रातःकाल समय से उठकर स्नानादि नित्य क्रिया करके 'हौं' इस मन्त्र से आचमन कर 'ओं हौं फट्' इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे, फिर मूलमन्त्र

से प्राणायाम कर 'ह्राँ अगुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि क्रम से कराङ्ग-न्यास करे और पीठ देवता का आवाहन करके सुर-सुन्दरी का ध्यान करे। 'पूर्णचन्द्रनिभाम्' पूर्ण चन्द्र के समान कान्ति वाली गौरी, विचित्र वस्त्र धारण किये, पीन और ऊँचे कुचों से युक्त, सबको अभय प्रदान करने वाली इत्यादि ऊपर लिखित नियम से ध्यान करे। ध्यान के अन्त में मूल मन्त्र से देवी की पूजा करे, मूल मन्त्र उच्चारण पूर्वक पाद्यादि देकर धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, ताम्बूल निवेदन करे, 'ओं ह्रीं आगच्छ भुवनेशि सुरसुन्दरी स्वाहा' इस मन्त्र से पूजा करनी चाहिये। साधक प्रतिदिन (त्रिकालसंध्या), तीनों संध्याओं में ध्यान करके एक-एक हजार मन्त्र जप करे इस प्रकार एक-एक मास जप करके महीने के अन्तिम दिन में विविध उपहार से देवी की पूजा करे, पूजा के अन्त में पूर्वोक्त मन्त्र जपते रहे। इस प्रकार करने से अर्द्धरात्रि के समय देवी साधक के निकट आती है, देवी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञ जानकर ही उसके गृह में आती है। साधक देवी को अपने सम्मुख प्रसन्न और हास्यमुखी देखकर फिर पाद्यादि द्वारा पूजा करे और उत्तम चन्दन तथा सुशोभन पुष्प प्रदान करके अभिलाषित वर की प्रार्थना करे, साधक देवी के निकट जो-जो प्रार्थना करेगा, देवी नित्य उपस्थित होकर वही पदार्थ प्रदान करेंगी।

डाकिनी-सिद्धिः मन्त्र

डँ डाँ ङि ढीं द्रीं धूँ धूँ चालिनि मालिनि डाकिनि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा।

लगातार छः वर्ष तक रात्रि के समय सेमल के वृक्ष पर चढ़कर ऊर्ध्वबाहु हो उक्त मन्त्र का जप करे, रात्रि में ही जप करना चाहिये। एकादिक्रम से छह वर्ष में डाकिनी सिद्धि होती है। डाकिनी सिद्धि होने पर अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होता है।

भूत और प्रेत-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रौं क्रों क्रुं फट् फट् फट् त्रुट त्रुट ह्लीं ह्लीं भूत भूतिनि प्रतिनि आगच्छ आगच्छ ह्लीं ह्लीं ठः ठः।

इस मन्त्र से भूत-भूतिनी, प्रेत-प्रेतिनी सिंद्ध होती है। रात्रिकाल के समय निर्जन वन में, वट के वृक्ष (बरगद के पेड़) की जड़ में बैठकर उक्त मन्त्र का आठ हजार बार जप करे, इसके दूसरे दिन धूप और गुग्गुल द्वारा पूजा करके फिर रात्रि में पूजा करे। अर्द्धरात्रि व्यतीत होने पर भूत-प्रेत,भूतिनी-प्रेतिनी साधक के सामने उपस्थित होंगी, तब उनकी गन्धादि और अर्घ्यादि द्वारा पूजा करने पर भूतादि प्रसन्न होकर साधक को वर प्रदान करते हैं और चिरकाल तक साधक के वशीभूत रहते हैं।

पिशाच-पिशाची-सिद्धि मन्त्र

१. ॐ प्रथ प्रथ फट् फट् हुँ हुँ तर्ज तर्ज विजय विजय जय जय प्रतिहत कुअ कुट विसुर विसुर स्फुर स्फुर पिशाच साधकस्य में वशं आनय आनय पच पच चेल चल स्वाहा।

२. ॐ फट् फट् हुँ हुँ अः भोः भोः पिशाचि भिन्द गिन्द छिन्द छिन्द लह दह दह पच पच मर्दय पेषय पेषय धून धून महासुर पूजिते हुँ हुँ स्वाहा।

प्रथम मन्त्र से पिशाच और दूसरे मन्त्र से पिशाची का ध्यान करना चाहिये। रात्रिकाल के समय श्मशान में बैठकर जप करें। दश लक्ष जपने से सिद्धि होती है। जपकाल के समय अन्य किसी के देखने पर अथवा साधक के अन्य किसी को देखने से जप निष्फल होता है। यानी कोई देखे नहीं, यह विशेष नियम है।

गुटिका सिद्धि

जिस प्रकार गुटिका सिद्धि होती है, वह विधि निम्न प्रकार है-

साधक चील के वासस्थान में (जिस पेड़ पर चील का घोंसला हो) उसको देवता समान पूजा करके, उसे प्रतिदिन खाने को थोड़ा-थोड़ा कच्चा मांस प्रदान करे। प्रसवकाल तक इस प्रकार उसे

आहार देता रहे। प्रसव के उपरान्त दो नल प्रस्तुत कर उनके ऊपर और नीचे के दोनों छिद्र मोम से बन्ध कर दे। फिर उनमें साढ़े तीन तोला प्रमाण में पारा डालकर इन दोनों नलों को दोनों अण्डों के ऊपर स्थापन करे और लौहशलाका नल के ऊपर मुख से प्रवेशित कर अत्यन्त सावधानी से दोनों अण्डों को छेदकर शलाका निकाले, इस प्रकार सतर्कतापूर्वक और कोमल हस्त से अण्डे बेधने चाहिये, क्योंकि इन छिद्रों द्वारा अण्डों के छिद्र उसी चील की विष्ठा से बन्द कर वृक्ष के नीचे अण्डे फूटने तक प्रतिदिन बलि और विविध उपहारों से पूजा करता रहे। जब तक यह अण्डे स्वयं न फूटे, तब तक नित्य इस वृक्ष के ऊपर चढ़कर देखें। इन अण्डों के फूटने पर दिखाई देगा कि उनमें दो गुटिका हुई है, तब इन दोनों गुटिकाओं को लाकर एक दूसरे को दें और अन्य को स्वयं मुख में धारण करे। इस प्रकार क्रिया करने से साधक शतयोजन जाकर, फिर उसी स्थान में तत्काल लौटकर आ सकता है। 'ॐ हुँ हुँ फट् चिल्लचक्रेश्वरि परात्परेश्वरिं पादुकामासनं देहि मे देहि स्वाहा' इस मन्त्र से पूजा और जप करे।

मोर, पारावत और खञ्जन पक्षी, इनकी विष्ठा लेकर गुटिका के स्पर्श करने से तत्काल सम्पूर्ण वाद्य यन्त्र (बाजे) टूट जाते हैं। गुटिका प्रयोग करने

से पहले पूर्वोक्त मन्त्र से पूजा कर एक लक्ष जप करे।

सर्वदोष निवारण मन्त्र

शनि दिन के समय, घर कुम्हार के जाय।
चाक पे चौसठ दीप को, उल्टी चाक फिराय।

प्रयोग विधि - समस्त दीपकों को, घी की बाती में जलाकर रोगी के मुख पर सन्ध्या समय उतारे तथा दूध, भात-शक्कर रोगी को स्पर्श कराकर चौराहे पर रखने से सर्वदोष नष्ट होते हैं।

भूत आदि हटाने का बाण मन्त्र

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अङ्ग से भू मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज़ात कामरू कामाख्या हड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूतभय दूर होता हैं।

धन वृद्धि करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवती पदम पदमावी ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आप पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्ध करने की विधि - विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर ले, तत्पश्चात् प्रातः शय्या त्यागने से पूर्व १०८ बार मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँके तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्त हो।

चुड़ैल भगाने का मन्त्र

'बैर बर चुड़ैल पिशाचिनी वैर निवासी।
कुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी।

भूत भय-नाशक मन्त्र

ॐ नमो श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोगविधि - दीपावली की रात्रि को १००८ बार मन्त्र जप करके सिद्ध कर ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता-बिल्ली और घुग्घु का मल (विष्ठा), ऊँट के बाल, सफेद घुँघुची, गन्धक, गोबर, कडुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फूल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने से भूत, प्रेत, बेताल, राक्षस, डाकिनी-शाकिनी, प्रेतनी आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

वर बैल करे तु कितना गुमान काहे नहीं छोड़त

यह जान स्थान यदि चाहे तूं रखना आपन मान पल में भाग कैलाश ले अपनो प्रान आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

सिद्धि करने की विधि

इस मन्त्र को विजया दशमी की रात्रि को १०८ बार जप कर सिद्ध करें, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूँक मारे तो डायन, चुड़ैल, पिशाचनी आदि से छुटकारा मिल जाता है।

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करूँ स्थिर चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बालकगण पहिरे हाड़ गला हार राग लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ गई पराय सब डायनी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के देहाई।

विधि - उपरोक्त मन्त्र विधि के अनुसार सिद्ध कर झाड़ने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

अकाल मृत्यु भय-निवारक मन्त्र

ॐ अघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः स्वाहा।

सिद्ध करने की विधि- इस मन्त्र को किसी भी शुभ-नक्षत्र और शुभ वार में दस सहस्र बार जप कर सिद्ध कर ले और जब प्रयोग करना हो तो जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन प्रातःकाल गुरमा नामक वृक्ष की जड़ लाकर गर्म जल में मसले और फिर १०८ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर आठ माशा नित्य पान करने से अकाल मृत्यु निवारण होता है।

अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

विधि - सर्वप्रथम इस मन्त्र को दस सहस्र बार जपकर सिद्ध करे, फिर जब प्रयोग करना हो तो पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो, उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

आत्म-रक्षा मन्त्र

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्।

उपरोक्त मन्त्र का नित्य ५०० बार जप करने से

साधक को समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं और आत्मभय दूर होकर व्यक्ति निर्भय हो जाता है।

अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र

ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा।

विधि - शुभ दिवस तथा शुभ नक्षत्र में दस सहस्र बार जप कर सिद्ध करें, सिद्ध हो जाने पर जब प्रयोग करना हो, तब जिस स्थान में धन गड़े होने की सम्भावना हो, उस स्थान पर धतूरे के बीज, हलाहल सफेद घुँघुँची, गन्धक, मैनसिल, उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर-बराबर ले, सरसों के तेल में पकाये तथा इसी से धूप देकर दस सहस्र बार मन्त्र का जप करने से भूत-प्रेत तथा पितृ आदि का साया उस स्थान से हट जाता है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

विपत्ति-निवारण मन्त्र

शेष फरिद की कामरी निसि अँधियारी तानौ को टालिये अनिल ओला जल विष।

उक्त मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद पढ़कर ताली बजावें तो आग, पानी, विष, ओला का भय दूर होता है।

सर्वांग वेदना-हरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर २१ बार झाड़ने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

ॐ नमो कीतकी ज्वालामुखी काली दोयर रंग पीड़ा दूर सात समुद्र पार कर आदेश कामरू देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

उदर वेदना-निवारण मन्त्र

ॐ नून तूं सिन्धु नून सिन्धू वाया। नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।। महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊँ पीर भगाया।। आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

प्रयोगविधि - दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर अभिमन्त्रित करें, बाद में टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

वन-दुर्गा मन्त्र

ॐ ह्रीं उत्तिष्ठ पुरिपि किं स्वपिपि भयं से समुपस्थितम्।

यदि शक्यं शक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा

ह्रीं ओम्।

इस मन्त्र को नवरात्र के अवसर पर पवित्रतापूर्वक प्रतिदिन प्रातः देवी के मन्दिर में दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। इस मन्त्र को प्रतिदिन एक माला जप करने से मनुष्य अकाल मृत्यु, मार्ग दुर्घटना, भय आदि अनेक विपत्तियों से सुरक्षित रहता है।

तपेदिक (टीबी) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द भावह।
ज्वरं मृत्युं भयं घोरं विषं नाशय मे ज्वरम्।।

आम के १०८ ताजे पत्ते तोड़कर शुद्ध गाय के घी में डुबा दें, यदि घी कुछ कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो वहाँ आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ी की समिधा में अग्नि प्रज्वलित करके उपरोक्त मन्त्र से १०८ आहुति दें। यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा दें। यदि रोगी बैठने योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही लगवा दें और हवन के समीप रोगी का मुँह खुला रक्खे। इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन में ही दूर हो जाते है।

हवन सामग्री में निम्न वस्तुएँ बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये। मण्डूकपर्णी, गूगल, इंद्रायण की जड़, अश्वगंध, विधायरा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, बाँसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जटामांसी, जायफल, वंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षरकाकोली, पिस्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़, बड़ी लौंग, आँवला, अभिप्रवाल, जीवन्ता, पुनर्नवा, नगेन्द्र बामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा, उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय (गुर्च) चार भाग, कुरूठ चौथाई भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सके। समिधा ढाक, शुष्क बाँस या आम की ही होनी चाहिये। हवन काल में अन्य कोई औषधि नहीं देनी चाहिये।

अनाज की राशि उड़ाने का मन्त्र

ओम् नमो हकाँलौ चौंसठि योगिन हकालौ बावन वीर कार्तिक अर्जुन बीर बुलाऊँ आगे आगे चौसठ बीर जल बींध तीन देश की दिशा बींध उत्तर जो अर्जुन राजा दक्षिण तो कार्तिक बिराजे आसमान लौ बीर गालैं नीचे चौसठि योगिनी बिराजे बीर तो पास चलि आवै छप्पन बैरो राशि उ़वै एक बंध आसमान में लगाया दूजै बाँधि घर में लाया शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

दीपावली की अर्द्धरात्रि को जंगल में जाकर नग्न होकर दस हजार बार उपरोक्त मन्त्र जप कर सिद्ध कर ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रात्रि में मसा की मींगनी रखकर चला आये तो उसके पीछे ही समस्त अन्न राशि उड़कर चली आती है।

कार्य-साधन मन्त्र

ॐ बिस्मिल्ला रहमानिर्रहीम गजनी सो चला गुहम्मदा पीर चला चला सवा सेर का तोसा खाय अस्सी कोस का धावा जाय श्वेत घोड़ा श्वेत पालन जापै चढ़ा मुहम्मदा ज्वान नौ सौ कुत्तक आगे चलै नौ सौ कुत्तक पीछे चलै काँधा पीछे भात डाला ध्याया चलै चालि चालि रे मुहम्मदा पीर तेरे सम नहिं कोई वीर हमारे चोर को ल्याव काजी की कुरान सों ल्याव अठारह पुराण सों ल्याव जाव जाव जहाँ होय तहाँ सों ल्याव मुहल्ला गली सों ल्याव कुचा सों चौहटा सों ल्याव सेत खाना सों ल्याव आभूषण सोलह सिंगार सों ल्याव काजल कजराटों सों ल्याव मढ़ की मौंठ सों रोली मीली सौं हाट बाजार सौ ल्याव खाट सों पाया सों नौ नाड़ी बहत्तर कोण क़ी घूमती बलाय को ल्याव हाजिर करो हाड़ हाड़ चाम नख शिख रोम-रोम सों ल्याव रे ताइया सिलार जिन्द पीर मारतौ पीटतौ

तोड़तौ पछाड़तौ हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तौक उलटा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सोम खिलाय कैसे हूँ लाव बिन लिये मत आव ओम् नमो आदेश इस्माईल जोगी गुरु को।

इस मन्त्र को किसी भी दिन शुभ–मुहुर्त में गौ का गोबर का चौका लगाकर धूप, दीप, लोहबान की धूनी देकर १०८ बार मन्त्र जप कर कर सवा सेर लड्डू का भोग लगाये तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाये। प्रयोग के समय सात दाना उर्द को लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर छोड़ दे, तो कार्य सफल होता है। यह इस्माईल जोगी का टोटका है।

सर्प–विष मन्त्र

दुरहादह खुदादह दुरहादह रसूलदह दुरहादह खुदादह खुदाशेख मोहम्मद अर्बीदह।

मन्त्रसिद्धि करने की विधि - सवा लाख बार इस जप को चालीस दिन में करे। कम दिनों में जप पूरे हो जाये, तो ठीक हैं, परन्तु अधिक दिन भी नहीं लगने पाये। इसको सिद्धि करने की बहुत सरल विधि होती है, कोई भी आदमी आसानी से इसे सिद्ध कर सकता है। इसके जप करने के दिनों में शरीर को शुद्ध रखकर स्त्री प्रसंग, मांस, मदिरा आदि चीजों का त्याग कर व्रत का पालन

करना होता है। इसके द्वारा जो भी चिकित्सा करता हो, उसे सदा कर्त्तव्य पालन करना चाहिये। जैसे कि मन्त्र सिद्धि साधित करने वाले आदमी के पास जो भी रोगी या रोगी का सम्बन्धित आदमी खबर लाये कि अमुक जगह अमुक आदमी को साँप ने काट लिया है तो आपको वहाँ चलना होगा और चिकित्सा करनी होगी तो उस आदमी को तुरन्त ही उसी समय स्वयं का कितना ही काम महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, उसे छोड़कर जाना चाहिये और चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसा भला कार्य करने से मन्त्र में बल आता है और शीघ्र ही रोगी ठीक होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान करके पवित्र वस्त्र पहनकर व मन को शुद्ध रखकर पहले कोई भी दरूद ११ दफे पढ़े, फिर बिस्मिल्ला ईरहमानई रहीम कहकर अन्दाजन तीन हजार दो सौ बार के करीब ऊपर के मन्त्र को पढ़कर अपने सीधे हाथ पर एक फूल मारकर उठ बैठे- रोगी दस-बीस दिन जप करने के उपरान्त ही यदि साँप काटे का रोगी मिल जाये तो उस पर भी झाड़ दें, ईश्वर की कृपा से उसको आराम होगा।

झाड़ने की विधि

स्वयं रोगी को अथवा सूचना लाने वाले को उत्तर दिशा की तरफ पीठ करके बिठा लें फिर

उसके सामने खुद बैठे और स्वयं अपना मुख उत्तर दिशा की तरफ रखें व सात बार ऊपर बताये गये मन्त्र को पढ़कर अपने हाथ पर फूँक मारकर जोर से तमाचा रोगी व रोगी की सूचना लाने वाले व्यक्ति को मारें क्योंकि जितनी जोर से तमाचा मारा जायेगा उतने ही मारने की शक्ति के बराबर रोगी के ऊपर शीघ्र असर होगा। इसलिये तमाचा कभी भी धीरे नहीं मारना चाहिये। यदि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रोगी हो, तो थप्पड़ मारने की सूचना पहले दे देनी चाहिये कि रोग को थप्पड़ मारकर अच्छा किया जायेगा। यदि वह व्यक्ति थप्पड़ खाने को तैयार हो तो चिकित्सा करनी चाहिये।

विशेष - मन्त्र को नौचन्दी जुमेरात के दिन जपना प्रारम्भ करना चाहिये। इस मन्त्र को प्रारम्भ करते समय चाहे कोई भी महीना हो जप कर सकते हैं, परन्तु शुक्लपक्ष में जो भी गुरुवार सबसे पहले आता है, उससे प्रारम्भ करना अच्छा रहता है। यदि जप के दिनों में किसी दिन ग्रहण पड़ता हो तो उससे जप करने में कोई फर्क नहीं पड़ता अर्थात् कोई बुरा फल नहीं होता है। रोगी को झाड़ने के बाद बतला देना चाहिये कि अब कोई पथ्य व दूसरा इलाज नहीं कराये। यदि पथ्य आदि कुछ ग्रहण करना हो तो झाड़ने के पूर्व ही कर लेना अच्छा होता है।

पागल कुत्ते के काटने का मन्त्र

काला एक समंदर पाला जिसमें निकला विष का पावा आलम चैत परखियाँ-मन भाये फुन्नाय बेटे मोहम्मद मुस्तफा, निर्विष करे खुदा मेरी भगत गुरु की शकत फलोमन्त्र ईश्वरी वाचा।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि - इस मन्त्र को सिद्ध करने का बहुत आसान तरीका है। ग्रहण के दिन जितनी देर तक ग्रहण पड़ता हो, उतने समय में सौ-दो-सौ बार इस मन्त्र को मन में पढ़ो। सौ-दो-सौ बार इस मन्त्र को मन में पढ़ने से अवश्य ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यदि किसी को सिखाना हो तो ग्रहण के समय ही सिखाना चाहिये, ग्रहण के अतिरिक्त अन्य समय में सिखाया गया मन्त्र प्रभावी नहीं होता है।

विष उतारने की विधि - जिस मनुष्य को जिस स्थान पर कुत्ते ने काटा हो, उस स्थान के घाव पर जिस रंग के कुत्ते ने काटा है, उसी प्रकार के बाल निकलते है। मंत्रसाधित मनुष्य को उस रोगी के घर जाकर, रोगी के सम्बन्धित आदमी से बाँबी की मिट्टी मँगाये, मिट्टी को मँगाकर उसको बारीक करके, छानकर और एक लोटे में से दाहिने हाथ से चुल्लू भर जल लेकर उस बारीक छनी हुई मिट्टी पर सात बार उस मन्त्र को पढ़कर उस

मिट्टी की (गूँथकर) सात छोटी-छोटी गोलियाँ बनाये और बाद में उन्हीं में से एक-एक गोली को कुत्ते के काटे घाव के ऊपर फेरते रहें और मन्त्र को सात बार पढ़ते रहें। ऐसा करने से घाव पर रखी उस गोली में से कुछ बाल उसी रंग के निकलते दिखाई देंगे जिस रंग के कुत्ते ने काटा था। इस प्रकार मन्त्र को सात बार पढ़ने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है और रोगी अच्छा हो जाता है। इसे हमने कई रोगियों पर आजमाया है।

अंगुलबेल, अंगुलबाड़ा छिल्लोरी मन्त्र

तारमरे विष तनना मारूँ तारनहारा महाबली सवा मनको बजर मोंगरा ऐसी मारूगो मस्तक तेरे ते छै पड़ेगी। अचल चले चाँद चले सूरज चले रांडरी कौ रहटा चले। दाना खा, घास खा पानी पी घूरे लौट चली चल गंगा की दहरैदह।

झाड़ने की विधि - रोगी को अपने सम्मुख बैठाकर उसके रोग वाले हाथ को पृथ्वी पर रखवाकर तलवा नीचे की ओर हो, ऐसा रखें। रोगी के सामने किंचित दूरी पर अपनी तरफ चार वस्तुएँ पास-पास एक रेखा में रखें। वे चार वस्तुएँ दाना (किसी भी अन्न का), घास, जल, राख। ये वस्तुएँ बहुत थोड़ी नाम-मात्र के लिये लें। एक नीम की

डाली बिना पत्ते की अपने दाहिने हाथ में लेकर उसे वस्तुएँ दिखायें, उसकी अंगुली प्रथम दाने की ओर जायेगी। इसके बाद घास की ओर पुनः जल की ओर फिर राख के पास जायेगी, फिर उस रोगी से कह दो कि जा अच्छा हो गया। आप थोड़े दिन में देखेंगे कि क्रमशः उसकी सूजन और दर्द कम होता चला जायेगा और कुछ दिन बाद पूरा रोग समाप्त हो जायेगा। मन्त्र को पाँच से सात बार पढ़ा जा सकता है और इतने ही बार झाड़ना होता है। मन्त्र को सिद्ध करने की विधि सामान्य ही है।

ज्वर, मियादी, विषम ज्वर का मन्त्र

याह फीजन, याह फीजन, याह फीजन।

नीम के ढाई पत्ते लेकर उस पर ऊपर लिखा मन्त्र सात बार पढ़कर और फूँककर उन ढाई पत्तों को मसल व कुचलकर खाने के बँगला या कपूरी पान में रखकर रोगी को ज्वर आने के रोज नियत समय के आधा या एक घण्टा पूर्व बताये गये पान को खिला दे। यदि जीर्ण ज्वर का रोगी हो तो मन्त्र पढ़ने चाहिये। इस तरह इस मन्त्र का २४ घण्टे में ज्वर पर प्रभाव पड़ता है। इसके खिलाने से ज्वर क्रमशः घटता जाता है और अन्त में उतर जाता है एवं रोगी को आराम हो जाता है।

निमोनिया का मन्त्र

नौ अंगुल का सरकंडा काटूँ दस अंगुल हो जाय। फलाने का डब्बा झाड़ पानीपत हो जाय। दुहाई हजरत नरकुतुब आलम की।

नोट - मन्त्र में फलाने के स्थान पर रोगी का नाम लेकर मन्त्र पढ़ा जाता है।

झाड़ने की विधि - हरा सरकंडा नौ अंगुल नाप का काट लें फिर चाकू की नोंक बराबर करके दोनों को मिलाकर उनसे झाड़े और मन्त्र पढ़कर फूँकते रहे तो सरकंडा एक अंगुल बढ़ जायेगा। उसको काटकर फिर नौ अंगुल का कर लें, पुनः उसी तरह झाड़े। इस प्रकार तब तक करते रहे जब तक सरकण्डा बढ़ता रहे, पुनः जब घटने लगे तब उसको बीच से चीर कर ऐसे स्थान पर जहाँ किसी का पाँव न पड़े वहाँ फेंक दे। पुनः बच्चे की बढ़ी हुई पसली पर हींग अफीम का लेप दोनों पसलियों पर लगाये और मकड़ी का सफेद वाला भाग मलाई में पिरोकर दीपक पर जला कर दूध में पिलाये। इस तरह इसको झाड़ने की विधि है।

स्तन-प्रदाह का मन्त्र

कामरू देश को उड़ा रह उद्दा को जद्दा खाय।
फलानी का मैं थनैला झाड़ँ छाती भस्म हो जाय।।

नोट - मन्त्र में फलानी के स्थान पर रोगिणी स्त्री का नाम लेकर मन्त्र पढ़ना चाहिए।

फूँकने की विधि - स्त्री से उसका नाम पूछकर उसके जिस तरफ की छाती में रोग हो, उसके विपरीत वाले भाग पर स्वयं मन्त्र पढ़ने वाला अपने उस विपरीत छाती पर मन्त्र पढ़कर हाथ फेरे। इस तरह मन्त्र को ३१ बार पढ़कर इतनी ही संख्या में छाती पर हाथ फेरे। २१ बार मन्त्र पढ़ने से रोग कट जाता है।

प्लीह वृद्धि मन्त्र

ओ तिल्ली ललि, और तिल्ली काटूँ। गौ गौ के पेट में बच्छा बच्छा के पेट में।

फूँकने की विधि - इस मन्त्र को बढ़े हुए तिल्ली के रोगी पर सात दिन तक फूँकना पड़ता है। शनिवार के दिन शुरू करके शुक्रवार के दिन मन्त्र को पढ़ना समाप्त किया जाता है। रोगी के पेट पर शुद्ध मिट्टी से रोटी के आकार की एक मिट्टी की रोटी बनाकर रखे। उस रोटी पर आड़ी-तिरछी सात लकीरें उस मिट्टी की रोटी पर काटें और पास से सात बार मन्त्र को पढें, इस तरह शनिवार से लेकर शुक्रवार के दिन तक प्रतिदिन आड़ी-तिरछी लकीरें सात-सात बार काटने और पाँच से सात बार तक मन्त्र पढ़ने से बढ़ी

हुई तिल्ली दिन-प्रतिदिन घटती है और रोगी को आराम हो जाता है।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

आकबनू सुन्दर कहाँ से आया गिर मेरू पर्वत से आया, अंजनी का सूत हनूमंत लाया, प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस कासा मांदाय, कल्ली कल्ली स्वाहा।

फूँकने की विधि - इस मन्त्र को सात बार पानी या कंकड़ पर पढ़कर रोगी को पिलाया जाता है या कंकड़ मारे जाते हैं। जब भूत-प्रेत से अक्रांत हुआ रोगी का कोई सम्बन्धी वैद्य को बुलाने आये तो वैद्य उसके साथ जाते समय रास्ते पर पड़े हुए सात छोटे-छोटे कंकड़ उठाकर पास में रख लेवें और रोगी के पास पहुँचकर एक-एक कंकड़ पर एक-एक बार मन्त्र पढ़कर एक-एक करके वे कंकड़ रोगी को मारता जाये। इसी प्रकार सात बार कंकड़ मारने से रोग सुधर जाता है या फिर कटोरी या गिलास में कुछ मात्रा में जल लेकर पानी पर सात बार मन्त्र पढ़कर उस पानी को पिलाकर भी रोगी को आराम पहुँचाया जाता है।

चाँदनी बाँधने का मन्त्र

आसपास के सुदास, उठाने वाला कर पर दास बेगी दौडौ नौन्हाचमार यह पिर कब्बर चाँद का बली बिसम्मल तेरी दुहाई से।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि - रक्त स्राव के मन्त्र के समान ही है।

चाँदनी बाँधने की विधि - चाँदनी को रात्रि में चाँदनियाँ निकलने पर बाँधा जाता है। चाँदनी बाँधने के लिए मोर का पंख, लाल रंग का मोटा धागा और ताँबे का एक नया पैसा या ताँबे की अँगूठी की आवश्यकता पड़ती है। उपरोक्त वस्तुओं को एकत्र करके मन्त्र पढ़ते जाइये। उस लाल रंग के धागे को गाँठ बाँधते जाइये, इस तरह एक बार मन्त्र पढ़कर पाँच गाठें बाँधिये और पाँचों गाँठों में पाँच मोर के पंखों के छोटे टुकड़े भी बाँधें एवं पाँचवीं गाँठ में उसमें ताँबे का पैसा या अँगूठी को बाँध दीजिये और उस धागे को तेल या गुड़ की धूप देवें और अपने इष्टदेवों का मन में स्मरण कर उस धागे को, यदि हाथ में घाव हो तो कलाई के ऊपर बाँध दें या पैर पर घाव हो तो पैर में बाँधें। यदि शरीर के किसी अन्य भाग में घाव हो तो गले में बाँध कर लटका दीजिये। ऐसा करने से थोड़े दिनों में घाव सूखने लगता है और जब घाव अच्छी तरह ठीक हो जाता है तो उस बाँधे हुए धागे को निकालकर नदी में छोड़ दीजिये। ये मन्त्र देहातों में प्रचलित है। इस मन्त्र का उपयोग धनुर्वात होने के पहले प्रयोग किया जाता है।

गर्भस्राव, गर्भपात, अकालस्राव का मन्त्र

श्याम सुभ राज करे, उठो हनुमान के चेले राज कड़ग का जगाई पर लंका बांधी, अरब गरब बांध चल बँधे तो नहीं बँधे तो हनुमान तेरी दुहाई से बँध जाय।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि - इस मन्त्र को सिद्ध करने की विधि सामान्य विधि के समान ही है।

गर्भपात को रोकने की विधि - इस मन्त्र का प्रयोग गर्भपात या गर्भस्राव मे किया जाता है। एक मोया की रस्सी बनाकर, उस रस्सी पर मन्त्र को फूँकना होता है। जिस माह में गर्भपात या स्राव हो रहा हो उसके आगे के महीने को गिनकर अन्यत्र नौ माह नौ दिन तक गिनने से जितने माह प्रसव के शेष हैं, उतनी गाँठें उस रस्सी में बाँधें और उतने ही बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारें और बाद में उस रस्सी को गर्भिणी के कमर में बाँध दें। ये रस्सी नौ माह नौ दिन तक जब गर्भ के दिन पूरे होवे उस दिन तक बँधी रहने दें। इस मन्त्र को विशेष रूप से तीन माह के गर्भ को रोकने के लिए ही बाँधें। इस विधि में १-२ माह के गर्भ में रस्सी नहीं बाँधते हैं। ये मन्त्र हमें लोहरी ग्राम के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से प्राप्त हुआ जिन्होंने आठ-दस गर्भिणी स्त्रियों पर आजमाया है, जिनमें

से छह-सात स्त्रियों का गर्भपात बन्द हुआ। इसे आम के वृक्ष पर एक रस्सी से बाँधा जाता है, जिससे फूल गिरना बन्द होकर खूब फल लगने लगते है।

रक्तस्राव, शरीर के किसी भाग से खून बहना, हेमरेज का मन्त्र

आसपास के सुदाम, उठाने वाला कर पर दास बैगी दौड़े, नौन्हा चमार, यह फिर कब्बर चाँद की बली बिस्मल्ल, तेरी दुहाई से चाँदनी बँध जाय।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि - जब गंगा स्नान को जाये, होली-दीपावली को धूप दे अथवा ग्रहण पड़ने पर उस समय मन्त्र का जप कुछ बार कर लिया जाये, तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रक्त बाँधने की विधि

१. चाँदनी बाँधने के समान ही रक्तस्राव को बन्द करने के लिए भी उसी मन्त्र का प्रयोग किया जाता है— ये मन्त्र दोनों कार्य एक साथ भी करते हैं। इसलिये इनका वर्णन अलग-अलग नहीं किया गया है।

२. दूध के मक्खन निकालने के लिये दूध मथने वाली स्त्री, "मक्खन मक्खन जल्दी मैया माँगन आये कृष्ण कन्हैया" इस मन्त्र को पढ़ती जाये,

तो शीघ्र ही मक्खन निकलने लगता है।

३. शरीर में किसी भी स्थान में मस्सा हो तो मस्से को सेम का फली से खुजलाकर फली को फेंक दें, तो कुछ दिन में अर्थात् जब फली गल जायेगी तो मस्से को भी लाभ होगा अर्थात् मस्सा खत्म हो जायेगा।

४. प्रातः काल भोजन करने से पहले थोड़ी-सी राख चुटकी में लेकर निम्निलिखित मन्त्र पढ़कर दाद पर लगायें तो कुछ दिन में दाद अच्छा हो जायेगा।

दाद दाद तू बढियो मत।
दिन पर दिन घटियो अलबत्त।

५. जिस स्त्री ने बच्चे का दूध पीना छुड़ाया हो, वह थोड़ा-सा दूध जलते हुए कोयले पर डाले तो उसके स्तनों का दूध सूख जायेगा।

तन्त्र विद्या के कुछ प्रयोग

१. किसी देवता की मूर्ति के सिर पर कोई घास जमी हो तो उसे सिर पर रखने से सिर का दर्द बन्द हो जाता है।

२. चूहे और बिच्छू में विरोध स्वरूप बिच्छू के काँटे पर चूहा फेर दो, दर्द जाता रहेगा।

३. पन्ना (रत्न) को चोट से अत्यन्त घृणा होती है।

यदि कोई व्यक्ति गिर पड़ा हो तो उसकी चोट पर पन्ना को बार-बार फेरो। चोट को लाभ होगा। यदि लाभ न होगा तो पन्ना के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।

४. रिकेट मछली की त्वचा से ढोल बना हो तो उसका शब्द जहाँ तक जायेगा, इससे रेंगने वाले जीव-प्राणी के पास न आयेंगे।

५. मोर, सर्प को निगल जाता है, जहाँ सर्प अधिक हो वहाँ मोर का पंख जला दें, साँप भाग जायेगा।

६. जब अंगूर फले तो एक बोतल पेड़ पर लटका कर उसमें एक डाली भीतर को कर दें और तेल भर दें। जब उस डाली के अंगूर पक जाये तो उस तेल को लाकर रात को जलाओ, उसके प्रकाश से अंगूर दृष्टिगत होंगे।

७. मकनातीस का हटाने वाला भाग लगाने से दर्द-जलन आदि में आराम करता है, खींचने वाला भाग प्रसूता की जाँघ के पास लगाने से वह बच्चा को बाहर निकालता है और स्तन पर लगाने से गर्भपात रोकता है।

८. शेर को मुर्गे से घृणा होती है। शेर के घाव पर मुर्गे की चर्बी लगाओ, शेर उस वस्तु को कदापि न छुवेगा जिस पर मुर्गे की चर्बी लगी

हो।

९. ऐसी तलवार जिससे कोई व्यक्ति मारा गया हो, उसके लोहे का दहाना बनाकर लगाओ तो कैसा भी बदमाश घोड़ा हो, काबू में आ जायेगा। उसी तलवार को मदिरा में डुबोकर चौथिया ज्वर वाले को पिलाओ तो अवश्य आरोग्य हो जायेगा। यह प्रयोग हमने प्रत्यक्ष देखा है, पूर्ण सत्य साबित होता है।

१०. जैतून वृक्ष को वेश्या से इतनी घृणा है कि यदि वेश्या यह पेड़ लगाये तो वह न तो बढ़ेगा न फूलेगा। जैतून का तेल उपस्थेन्द्रिय की दीर्घता व पुष्टता की प्रसिद्ध औषधि है।

११. मूली खाकर उसके पत्ते को टोपी में रख लो, दुर्गन्ध की डकार नहीं आयेगी।

मश्क, मस्सा

१. शरीर के ऊपर जितने मस्से हों उतनी ही गाँठें एक पतली सूतली में लगाकर सरसों से छुवा कर उसको मरतूब स्थान में गाड़ दो, यह कहकर कि 'तू इ बला से छुड़ा दे', तो जब तक सूतली गलेगी मस्से अच्छे हो जायेंगे, परन्तु फिर मस्सों का विचार बिल्कुल न रक्खें, न उनकी तरफ बिल्कुल देखें।

२. शरीर में जितने मस्से हो उतनी ही काली मिर्च

गिनकर उन्हें शनिवार की संध्या को कहीं रख आवें, फिर रविवार को प्रातःकाल ही उन्हें लाकर कपड़े की पोटली बाँधकर कुछ देर गले में पहने रहें। बाद में निकाल कर राह में छोड़ आयें, शनैः शनैः मस्से सूखते जायेंगे।

सूर्यवर्त, आधाशीशी, माइग्रेन

१. भेड़ की सींग का कंघा आधासीसी को आराम करता है, जिस तरफ दर्द हो उसी ओर के भेड़ की सींग का कंघा करना चाहिये।

२. प्रातःकाल दक्षिण दिशा की तरफ मुँह करके दाहिने हाथ में एक छोटी-सी गुड़ का ढेली लेकर दाँतों से काटकर चौराहे पर ऐसे समय फेंकना चाहिये, जब कोई भी देख नहीं रहा हो, ऐसा करने से आधासीसी (आधे सिर में दर्द होना) कुछ ही घण्टों में बन्द हो जाता है। यह लेखक का कई बार का अनुभव है।

३. रविवार या मंगलवार के दिन अधकपारी नाम की एक छोटी-सी लकड़ी को ताजी तोड़कर और सफेद या काले डोर से बाँध कर रोगी को बाँयें कान में पहनाने से आधासीसी कुछ ही समय में जादू-सा गायब हो जाता है। सिर का दर्द खत्म हो जाने पर डोरे को कान से निकाल कर किसी चौराहे या किसी सुनसान

गली में फेंक देना चाहिये।

गठिया, वातरक्त, गाउट

जेब में कच्चा आलू रखने से प्रत्येक प्रकार की गठिया में आराम होता है।

सिरदर्द व शिरःशूल

१. गूमी की जड़ सिर में बाँधने से सिर का दर्द जाता है।

२. जो काकजंघा की जड़ को मस्तिष्क पर धारण करके सोता है, उसके सिर का दर्द वन्द होकर खूब नींद आती है।

साँप के विष का उपाय

१. आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष में रविवार के दिन घौलबरुआ, जिसे ईश्वरमूल भी कहते हैं, इसकी जड़ को डोर से बाँधने से साँप काटने का डर नहीं रहता है।

२. जिस आदमी के देह में बारहसींगा लटकता रहता है, उसे साँप काटने का भय नहीं रहता है।

३. जिस घर में निर्गुण्डी की जड़ रखी होगी उस घर में सर्प का भय नहीं रहेगा, ऐसा कुछ लोगों का मत है; परन्तु लेखक ने इस बात का अनुभव अभी नहीं किया है।

बिच्छू का विष, वृश्चिक विष

१. जिस स्थान पर बिच्छू डंक मारे वहाँ पर चिड़चिड़े की जड़ स्पर्श करा दें अथवा रोगी को दो-चार बार दिखायें इससे जहर उतर जायेगा। जड़ दिखाकर फिर छिपा लेनी चाहिये।

२. बिच्छू के डंक मारने पर अष्टधातु की अँगूठी को जरा-सा गरम कर डंक मारे हुए स्थान पर सटा देने से बिच्छू का विष मिट जाता है।

३. हुलहुल की जड़ सात बार बिच्छू के काटे हुए रोगी को सुँघा देने से बिच्छू का काटा दर्द कुछ मिनटों में गायब हो जाता है।

४. बिच्छू काटे हुए आदमी के निकट जिस बिच्छू ने रोगी को काटा हो, उसे पकड़ कर जलाने से रोगी का विष उतर जाता है। यदि बिच्छू नहीं मिले तो दूसरा भी पकड़कर जलाया जा सकता है। ऐसा ही सिद्धान्त भी है कि जहर से जहर कटता है।

ज्वर, बुखार का ईलाज

१. सन्निपात ज्वर का नाश करने के लिए अश्विनी नक्षत्र में बकरे के बाल निकाल रखे हों, उन बालों के साथ निर्गुण्डी की छाल व पुष्प की गोली-जैसा बनाकर सन्निपात ज्वर के रोगी के

हाथ की कलाई पर या फिर भुजा पर बाँधने से सन्निपात ज्वर दूर हो जाता है।

२. मलेरिया ज्वर शान्त करने के लिए रविवार या सोमवार के दिन घर के नजदीक के ताड़वृक्ष से रोगी का वृक्ष (सीना) वृक्ष से सटाये और रोगी अपने मन में इस वाक्य को दुहराते जायें कि 'जब मेरा ज्वर उतर जायेगा तब मछली चढ़ाऊँगा' इस तरह इस वाक्य को मन में तीन बार दोहराना चाहिये। जब ज्वर पूर्णतः शरीर से छूट जाता है तब एक छोटी लकड़ी में दो मछली बाँधकर उस ताड़ के वृक्ष की जड़ में रविवार या सोमवार के दिन रख आना चाहिये और वृक्ष के समीप खड़े होकर मन में कहना चाहिये "मेरा ज्वर छूट गया है।"

३. रविवार के दिन मिट्टी के घड़े में जल भर कर रखें, उस घड़े में एक सोने की अँगूठी डाल दें और एक घण्टे बाद चौराहे पर या रोगी के घर के सामने मलेरिया ज्वर के रोगी को लाकर उसी जल से स्नान करा दें। स्नान कराने के बाद घड़े से अँगूठी निकाल लें। यदि क्रिया रविवार की संध्या को की जाती है, इससे जल्दी बुखार छूट जाता है।

४. मंगल या रवि के दिन रात सात नग लहसुन पीसकर और काले कपड़े पर रख, दाहिने पैर

के अंगूठे में बाँध दें, जब तीन घण्टे व्यतीत हो जायें, उसे अंगूठे से खोलकर चौराहे पर फेंक दें, तो शीतज्वर की पारी आना रुक जाती है।

५. सात लर लाल धागे में अपामार्ग की जड़ लाकर कमर में बाँधने से बारी-बारी से आने वाले ज्वर में आराम होता है। अपामार्ग की जड़ ठीक रविवार के दिन ही उखाड़नी चाहिये।

६. काकमाँची की जड़ लाल धागे में बाँधकर रोगी के दाहिने कान पर रखने से रात्रि में आने वाला ज्वर छूट जाता है।

७. बबूल की जड़ को श्वेत धागे में लपेट कर शनिवार के दिन हाँथ में बाँध दें, तो शीत ज्वर दूर हो जायेगा। ज्वर उतरने पर सुनसान जगह देखकर जड़ी को रोगी के हाथ से निकाल कर किसी गली में फेंक दें। ध्यान रखें कि जड़ी को फेंकते समय किसी अन्य व्यक्ति ने देखा न हो।

८. श्वेत जयन्ती की जड़ रोगी के माथे में बाँधने से कैसा भी पुराना ज्वर हो छूट जाता है।

९. शनिवार की संध्या को छोटी दुधी के पौधे की जड़ में पीले चावलों को रखकर निमन्त्रण दे आये और रविवार को सूर्योदय से पूर्व

ही वहाँ जाकर निर्वस्त्र होकर गूगल की धूनी देकर उसकी जड़ उखाड़ लें, फिर उसे पुरुष रोगी के दाँयें और स्त्री रोगिणी के बाँयें हाथ में बाँधें, जिससे तृतीयक ज्वर निश्चित ही दूर होगा। यह रामबाण टोटका है।

१०. जिसे रोग इकाई ज्वर की बारी हो उस दिन प्रातःकाल दिन निकलने के पहले केकड़ा के बिल की मिट्टी का टीका लगाने से इकाई ज्वर नहीं आता है।

११. रविवार के दिन प्रातःकाल निर्गुण्डी और सहदेई की जड़ को उखाड़ लाये और उन्हें कमर में बाँधें तो सभी तरह के ज्वर का नाश होता है।

१२. उल्लू के दाहिने डैने का परवना सफ़ेद धागे में लगाकर बाँयें कान में बाँधने से इकाई ज्वर में आराम होता है।

१३. शनिवार के दिन मयूरशिखा के पौधों को निमन्त्रण दे आवें और रविवार को उखाड़ लावें फिर उसे लाल डोरे में लपेटकर हाथ और कमर में बाँधने से एकलिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

१४. भूत ज्वर को भगाने के लिए रोगी के हाथ में छिड़छिड़े की जड़ बाँधना चाहिये।

१५. लाल पलाश की जड़ हाथ में बाँधने से वे सभी

ज्वर नष्ट हो जाते है जो कि भूत-प्रेतादि के कारण होते है।

अतिसार-डायरिया

१. सहदेई की जड़ लाकर उसके सात टुकड़े करे और लाल डोरे में लपेट कर रोगी के कमर में बाँध दें, बार-बार पतले दस्त होना रुक जायेगा।

संग्रहणी

गेहुँआ सर्प की केंचुली को कपड़े की थैली में सीकर रोगी के पेड़ू पर बाँध दे। यह टोटका संग्रहणी के लिए अच्छी-अच्छी दवाओं से भी बढ़-चढ़ कर है।

यकृत प्लीहा वृद्धि

१. बाँझ ककाड़े की गाँठ रविवार के दिन लाकर रोगी के पास जलते हुए चूल्हे पर बाँध दों। ज्यों-ज्यों ककाड़े की गाँठ सूखती जायेगी त्यों-त्यों ही तिल्ली घटती जायेगी। इस टोटके के साथ मन्त्र का भी प्रयोग करना चाहिये।

२. प्याज की माला गले में धारण करने से यकृत और प्लीहा वृद्धि का रोग जाता रहता है।

३. नागफनी की जड़ की माला धारण करने से भी जिगर और तिल्ली के रोग मिट जाते हैं।

पथरी

लोहे की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली में पहनने से पथरी रोग की पीड़ा में अतिशीघ्र लाभ होता है।

श्लीपद हाथीपाँव

१. उत्तर दिशा में उगने वाले आँक की जड़ रविवार के दिन उखाड़ लाये और लाल डोरे में लपेट कर फीलपाँव की सूजन की जगह बाँध दे, कुछ समय में फीलपाँव में अतिशीघ्र लाभ होता है।

२. सोलह दाँत वाली गाँठ पीली कौड़ी में छेदकर और उसे काले डोरे में गुहकर श्लीपद वाले स्थान पर धारण करने से श्लीपद की बाढ़ रुकती है।

दन्तशूल (दाँतों में दर्द)

छोटे बालक के गिरे हुए दूध को जन्तर में मढ़वा कर पास रखने से दाँतों का दर्द जाता रहता है।

घाव, क्षत, व्रण, जख्म

यदि किसी अंग में घाव हो जाये और वह जल्दी सूखता न हो तो समझना चाहिये कि इसमें दृष्टिदोष हो गया है। एक बर्तन में जल भरकर

और उसमें सोने की अँगूठी डालें, उस अँगूठी को उसमें कुछ देर पड़ा रहने दें, फिर उसी जल से घाव को धोवें। घाव धोने के बाद उस जल को चौराहे पर डाल दें। यह क्रिया शनिवार के दिन करनी चाहिये।

बवासीर (अर्श)

१. अर्श रोगी के मस्से के नीचे साँप की केंचुली रखने से अर्श का कष्ट दूर होता है।

२. जंगली सूरण (जंगली जिमीकंद) को कार्तिक महीने में खोद लाये और उसकी चकतिया काटकर सुखा लें। फिर उसे काले डोरे में गूँथकर कमर में धारण करने से धीरे-धीरे अर्श के मस्से सूखने लगते हैं। मस्से जब तक सूखे नहीं तब तक उन चकतियों को कमर में बाँधे रखना चाहिये।

पागलपन, उन्माद

१. प्रेम के दीवाने मनुष्य के लिए यह टोटका विचित्र प्रभावक है। लोहे के एक टुकड़े को आग में गर्म करो और उसे पानी में बुझाओ। इसी प्रकार तीन बार गर्म करो और क्रमशः पानी में बुझाओ और प्रत्येक बार बुझाते समय यह कहते जाओ कि जिस प्रकार यह गर्म लोहा

पानी में शीतल होता है, उसी प्रकार अमुक लड़के का प्रेम अमुक लड़की से सहज हो, फिर उस पानी से प्रेम में पागल रोगी का मुँह धुलाओ और थोड़ा पानी उसके वक्षस्थल पर भी छिड़क दो। तीन दिन तक यह प्रक्रिया करने से वह अपनी प्रेमिका को भूल जायेगा।

२. बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून और कछुवे के खून को ऊँट के चमड़े में मढ़वाकर ताबीज की तरह बना लें, फिर इस ताबीज को किसी के प्रेम में पागल मनुष्य के कण्ठ में बाँध दो। इससे रोगी शीघ्र शांत होता है।

३. उन्माद के रोगी की चोटी में घबलरूआ के जड़ बाँधने से उसका प्रलाप रुक जाता है और उसे नींद भी आने लगती है।

मिर्गी अपस्मार

१. जिस स्थान पर जंगली सूअर का मूत्र गिरे वहाँ की मिट्टी मिर्गी वाले व्यक्ति के निकट रख दे। मिर्गी का दौरा उसी क्षण शांत हो जायेगा।

२. नदी के किनारे पर बालू के अन्दर मृगचना नाम के कीड़े होते है, उन कीड़ों में से दो ले आवें और उन्हे मिर्गी वाले की बाँह और गले में बाँध दें, इस उपाय से भयंकर से भयंकर मिर्गी का दौरा भी रुक जाता है।

३. जंगली सूअर के नख को अँगूठी की भाँति बनवाकर सोमवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी अँगुली में पहन लें, इससे अपस्मार का दौरा रुक जाता है।

४. गाय के बाँयें सींग की अँगूठी बनवाकर बाँयें हाथ की कनिष्ठिका अँगुली में पहनने से मिर्गी का दौरा नहीं आता है।

५. भेड़िये की विष्ठा और उसकी हड्डी मिर्गी वाले रोगी के पास रखने से दौरा रुक जाता है।

वन्ध्यत्व, बाँझपन

बालक के नाभिनाल का टुकड़ा, चस्फे की फल्ली का बीज, गाँव सूअर का जाल (सूअर से जब बच्चा पैदा होता है, उस समय बच्चे के साथ जाल निकलता है), नारियल का फूल, उन सभी वस्तुओं को एकत्रित कर ३ साल पुराने गुड़ में इनको डालकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें और बाँझ स्त्री को मासिक धर्म से निवृत्त होने के पश्चात् जिस दिन स्त्री नहाती है, उसी समय जिस जगह भी नहाने बैठे उसी जगह पर एक गोली खिलायें और एक गोली दोपहर को भोजन के पश्चात् तथा एक गोली शाम को सोते समय बिना पानी के निगलवायें। यदि गोली निगलवायी नहीं जा सकती है तो उस स्त्री का पति कुएँ से स्वयं ताजा

पानी लाकर गोली निगलवायें। दूसरे दिन हाथ का पानी गोली के साथ देना निषेध है। इसको केवल एक दिन ही तीन बार गोली दें, इससे अधिक नहीं दें। इसे सेवन कराने से बाँझ स्त्री को भी संतान उतपन्न होने लग जाती है। यह टोटका अभी केवल हमने दो स्त्रियों पर आजमाया है, जिनकी गोदें आज तक हरी-भरी हैं।

रक्त प्रदर

रक्त प्रदर से पीड़ित स्त्री को गुराड़ बेला के पत्तों का स्वरस कड़वी तुम्बी (लौकी) या टेभरून के पत्तों के दानों में से निकाल कर ५ से ७ मात्रा दिन में दो बार के हिसाब से पिलाने से रक्त प्रदर में फायदा होता है।

गर्भनिरोध का टोटका

१. यह टोटका भी बड़ा अद्भुत है। हाथी की लीद को स्त्री के योनि पर रखे, गर्भ न रहेगा।

२. पुष्य नक्षत्र में जब सूर्य हो तब विधानपूर्वक धतूरे की जड़ उखाड़कर रख छोड़े, उसे स्त्री की कमर में बाँध दें, इससे गर्भ कदापि नहीं रहेगा।

३. जिस स्त्री को पहली बार बच्चा पैदा हो रहा हो, उसके बच्चा पैदा होने के समय खून लेकर

यदि कोई स्त्री अपने समूचे शरीर में लगा ले तो उसे जिन्दगी भर गर्भ न रहे।

४. बच्चे का गिरने वाला पहला दाँत यदि भूमि पर न गिरने दिया जाये; वरन् पहिले ही हाथ में लेकर उसे चाँदी के जंतर में मढ़वाकर स्त्री की बाँह पर बाँध दें, तो उसे गर्भ हर्गिज न रहेगा।

५. यदि मैथुन के समय स्त्री मेंढक की हड्डी अपने पास रक्खे तो कदापि गर्भ न रहे। यह टोटका कइयों का परीक्षित है, ऐसा अन्य कई पुस्तकों में भी लिखा मिलता है।

६. मर्द के कान की मैल और वाकला का एक दाना, इन्हें अपने पसीने से बाँध स्त्री अपने गले में धारण कर ले, जब तक यह तावीज गले में रहेगा, गर्भ न रहेगा।

मासिक विकार

यदि माहवारी की बिगाड़ की वजह से स्त्री के पेड़ू कमर में दर्द हो तो कमर में मूँज की रस्सी बाँधकर सोये रहे और सवेरे उसे खोलकर चौराहे पर फेंक दें, तो महावारी की खराबी और पेड़ू कमर का दर्द ठीक हो जाता है।

श्वेत प्रदर

उत्तर दिशा में किसी पवित्र स्थान में व्याघ्रनखी की जड़ उत्तरा-फाल्गुनी नखत्र में उखाड़ लायें और उसी दिन स्त्री की कमर में बाँध दें। इस टोटके से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

हिस्टीरिया

भेड़ की जूँ कम्बल के रोएँ में लपेटकर ताँबे के जन्तर में धारण करने से स्त्रियों का हिस्टीरिया रोग दूर हो जाता है।

सुख-प्रसवकारक टोटके

१. स्त्री के शरीर के बराबर किसी कन्या के हाथ का कता हुआ सूत लेकर उसमें चिड़चिड़े की जड़ लपेटें और प्रसव पीड़ित स्त्री के कमर में बाँध दें, बिना कष्ट के शिशु का जन्म हो जायेगा; तदनन्तर जड़ी खोलकर फेंक दें।

२. यदि शिशु जन्म के समय प्रसव पीड़ा से छटपटाती हुई स्त्री के कमर में नीम की जड़ बाँधे तो उसे प्रसव में कोई कष्ट नहीं होता है।

३. जिस स्त्री को प्रसव-वेदना हो रही हो उसका नाम लेकर ताड़ वृक्ष के उत्तर की तरफ का सिरा उखाड़ लायें और उसे लाल धागे में लपेट कर स्त्री की कमर में बाँधो, तो तत्क्षण प्रसव

हो जायेगा। प्रसवोपरान्त उसे खोलकर फेंक देना चाहिये।

४. चकमक पत्थर कपड़े में लपेटकर स्त्री की जाँघ पर बाँधने से बच्चा जल्दी और सरलतापूर्वक हो जाता है।

५. स्त्री के बाँयें हाथ पर चुम्बक रख देने से भी शिशु-जन्म बिना कष्ट के हो जाता है।

६. स्त्री के बाँयें हाथ में कलिहारी की जड़ रेशमी डोरे से बाँध दें। प्रसवकाल की वेदना दूर हो जाती है।

७. लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बाँधकर प्रसविनी के बाँयें हाथ की ओर लटका दे, बिना किसी कष्ट के बच्चा सहज ही उत्पन्न हो जाता है।

८. सूर्यमुखी और पाटला की जड़ गले में बाँध देने से बच्चा सुख से जन्मता है।

९. यदि शिशु जन्म के समय अत्यधिक कष्ट हो, तो गर्भिणी के नितम्बों पर सर्प की केंचुली बाँध दो, बिना किसी कष्ट के प्रसव हो जायेगा।

१०. स्त्री की कमर में सरफोंका की जड़ बाँध दें, तो तत्काल प्रसव हो जायेगा।

११. यदि प्रसविनी के स्तनों पर बारहसिंगे का सींग बाँध दिया जाये, तो प्रसव सुख से होता है।

१२. सर्प के दाँत प्रसविनी के गले में बाँध देने से प्रसव में बिल्कुल कष्ट नहीं होगा।

१३. गर्भिणी के नाप के बराबर (सिर से पैर तक) सूत मे उत्तर दिशा में उगी हुई ईख की जड़ लपेटकर उसकी कमर में बाँध दें, बच्चा सरलतापूर्वक उत्पन्न हो जायेगा।

१४. हुलहुल की जड़ प्रसविनी के हाथ अथवा सिर में बाँध दें, बच्चा तत्काल हो जाता है। यह परीक्षित टोटका है।

१५. धतूरे की जड़ जब सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो तब उखाड़कर रख लें, आवश्यकता के समय इस जड़ को प्रसव-वेदना में छटपटाती हुई गर्भिणी की कमर में बाँध दें, ईश्वर की कृपा से सूखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

१६. साँप की केंचुली एक तोला, घोड़ा व गदहा का नाखून चार तोला दोनों को कूटकर कपड़े की निर्धूम अग्नि पर डाल योनि में धूनि देने से तुरन्त बालक उत्पन्न होता है।

१७. प्रसव-वेदना उत्पन्न होने पर जिस घर में प्रसूता का निवास हो उसकी छत पर मृत गाय के सिर की सूखी हड्डी रख देने से बिना कष्ट के प्रसव होता है।

१८. मदार की जड़ को पाँच संख्या में मदार ही

के पत्तों से लपेटकर प्रसूता के सिर के बालों से बाँध दे, तो तत्क्षण बालक उत्पन्न होता है, किन्तु बालकोत्पत्ति के अनन्तर इसको खोलकर फेंक देना चाहिये।

१९. पंचांग सहित अपामार्ग उखाड़ लायें, प्रसूता के सामने दूसरी स्त्री इसे हाथ में लेकर दिखाती रहे तो प्रसव शीघ्र होता है।

२०. अपामार्ग की जड़ पानी में महीन पीसकर नाभि के नीचे जंघाओं पर लेप कर देने से तथा योनि के आसपास लेपने से शीघ्र प्रसव होता है।

२१. कलिहारी को पानी में महीन पीसकर हाथ-पाँव के तलुओं पर लेप करने से तुरन्त बालक उत्पन्न होता है। प्रसव हो जाने के बाद ही लेप भी छुड़ा देना चाहिये। अन्यथा गर्भाशय बाहर निकल जाने की आशंका रहती है।

गर्भपात

१. काली मूसली जिसे लाल मूली भी कहते हैं, उसकी जड़ हाथ या पैर में बाँधने से गर्भपात हो जाता है।

२. ब्राह्मी की जड़ शरीर में धारण करने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

गर्भपात, गर्भस्राव (निवारण)

१. कुँवारी कन्या द्वारा काता हुआ सूत लेकर उसमें गर्भिणी के नाप के बराबर २१ धागा लेकर प्रत्येक मे पृथक-पृथक काले धतूरे की जड़ बाँधकर सारे धागे गर्भिणी की कटि में बाँध दें, इससे कदापि गर्भपात न होगा ।

२. कुसुम के रंगे हुए लाल डोरे में एक करजुआ बाँधकर गर्भिणी के कमर में बाँध देने से गर्भ नहीं गिरता। यदि गर्भ रहते ही कमर में बाँध दिया जाये और नौ महीने तक बँधा रहने दिया जाये, तो गर्भ गिरने का भय ही न रहे।

३. कुंवारी कन्या द्वारा काते हुए सूत में खिरेटी की जड़ लपेटकर गर्भिणी की कमर में बाँध दें, गिरता हुआ गर्भपात रुक जायेगा।

लड़का या लड़की होगी (पूर्वानुमान)

१. यदि चिड़चिड़े की जड़ उखाड़ते समय टूट जाये, तो लड़की और यदि ठीक रूप से पूरी उखड़ आये तो समझना चाहिये, कि लड़का उत्पन्न होगा।

२. प्रसव पीड़ा के समय किसी भी अन्न के सात दाने लेकर गर्भिणी के शरीर पर से एक बार उतार कर तालमखाना के झाड़ पर फेंक देना चाहिये। दाने फेंकते समय इतना अवश्य ध्यान

रखना चाहिये कि उसके ऊपर अपनी छाया न पड़ने पावे। दानें फेंकने पर झाड़ को अपनी पूरी ताकत से उखाड़ना चाहिये। यदि झाड़ उखाड़ने पर दो जड़ निकलती है तो लड़की और एक ही जड़ पूरी निकलती है तो समझना चाहिये कि लड़का उत्पन्न होगा। इस टोटके को गर्भिणी के प्रसव-पीड़ा के समय ही तुरन्त उखाड़कर लाना चाहिये।

आँख आना

१. रास्ते का छोटा-सा कंकड़ उठाकर जिस तरफ की आँख आयी है, उसी तरफ के कान में उस कंकड़ को कान के ऊपरी भाग मे बैठा देना चाहिये, इससे आँखें दुखना बन्द होकर आँख की लाली खत्म हो जाती है। कंकड़ को कान में एक या दो दिन तक रखना चाहिये, इसके बाद निकालकर चौराहे पर फेंक देना चाहिये। कान के कंकड़ से आँख में आयी हुई लाली उस कंकड़ के दबाव से खत्म होती है और कंकड़ का तनाव आँखों की बारीक-बारीक नसों पर पड़ता है।

२. मेंहदी के ताजे पत्तों को तोड़कर उसको पत्थर पर पीसकर उसको मलद्वार पर बाँधने से आयी हुई आँखों की लाली खत्म होकर आँख ठीक

हो जाती है।

मोटापा

राँगें की अँगूठी बनवाकर दाँयें हाथ की कनिष्ठिका अंगुली मे पहिनाने से रोगी का मोटापा कम होता है।

सेहुआ

धोबी के घर से आये हुए धुले कपड़े आते ही उन कपड़ों को पहनने से सेहुआ रोग दूर हो जाता है।

भूत-प्रेत निवारण

१. नीम के पत्र, वच, हींग, साँप की केंचुली और सरसों, इनको पीसकर धूनी दें, तो सभी प्रकार के भूतादि दोष दूर हो जाते हैं।

२. काले धतूरे की जड़ रविवार को बाँह में बाँधें तो भूतबाधा जाये और फिर कभी न सताये।

३. मुण्डी, गोखरू और बिनौला समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर ब्रह्म-राक्षस से ग्रसित को सुँघायें तो निर्दोष हो।

४. रविवार को तुलसी पत्र, कालीमिर्च, प्रत्येक आठ-आठ तथा सहदेई की जड़ लाकर तीनों को ताँबे के यन्त्र में भरकर धारण करने से भूत-प्रेत दूर हो जाये।

बालापस्मार टोटका

१. भेड़ की जूँ, कम्बल के रोयें में लपेट कर ताँबे के जन्तर में धारण करने से बालापस्मार रोग दूर होता है। स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग के लिए भी यह टोटका सर्वोत्तम माना जाता है।

२. बालापस्मार के लिये भेड़िये का दाँत बच्चे के गले में बाँध देना चाहिये। बच्चा स्वस्थ हो जायेगा।

३. अकरकरे को सूत में बाँधकर गले में लटका देने से बच्चों की मिर्गी में आराम होता है।

४. चूहे का होंठ जन्तर में मढ़वाकर गले में धारण करने से बालापस्मार मिटता है।

बच्चों के दाँत निकलने का टोटका

१. एक ताँबे के ताबीज में पत्थरचूर की जड़ भर कर उसे लाल डोरे में बाँधकर बच्चे के गले में लटका दें। इससे बच्चे के दाँत निकलने में हरे पीले दस्तों आदि का कष्ट नहीं होगा।

२. सीपियों की माला बच्चे के गले में पहिनाने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

३. लोहे अथवा ताँबे का कड़ा बालक के हाथ या पैर में पहनाने से दाँत सरलता से निकल आते हैं और दृष्टिदोष या नजर नहीं लगने पाती है।

४. छछून्दर का होंठ बालक के गले में लटकाने से सुख से दाँत निकल आते हैं।

५. सम्भालू की जड़ गले में बाँध देने से भी दाँत निकलते समय कोई कष्ट नहीं होता।

६. सिरस के बीजों को धागे में पिरोकर माला बनायें और शिशु के गले में पहना दे, माला बच्चे की छाती को छूती हुई रहनी चाहिये। इस उपाय से बड़ी सुगमता से दाँत निकल आते हैं।

७. पूरब दिशा में उपजी हुई सफेद सम्भालू की जड़ बालक के गले में बाँधने से बालकों के दाँत उगने के समय की पीड़ादि रोग नाश होते है।

८. कपूर की चकतियों की माला पहिनने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

खाँसी निवारण

एक कपड़े की थैली में कौवे की बीट बाँधकर बालक के गले में लटका देने से बालक की खाँसी में आराम हो जाता है और रविवार के दिन बीट वाली थैली बालक के गले में लटकायी जाये, तो बालक का कौवा उठ जाता है।

हिचकियाँ (निवारण)

१. रीठे की फली धागे में पिरोकर गले में पहिनाने

से बच्चे की हिचकियाँ व दृष्टि-दोष दूर हो जाता है।

२. दूध पिलाने वाली माँ या धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा कपड़े का फाड़ कर पानी से भिगोंकर बालक के माथे पर रखने से बालक की हिचकियाँ तुरन्त बन्द हो जाती है।

बालक का रोना

रविवार या मंगलवार को नीलकण्ठ का पंख लाकर जिस चारपाई पर बालक सोता हो उसमें लगा दें, तो बालक का अधिक रोना, बार-बार रोना बन्द होता है।

जम्हुआ

सफेद कबूतर का जोड़ा घर में रखने से बच्चों के जम्हुआ (जपोगा) की बाधा नहीं होती है।

उदर व्याधि

एक रंग के काले कुत्ते का बाल और अकरकरा बच्चे के गले में बाँध देने से बालक के उदर रोग व ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

मसूड़े का दर्द व सूजन

दुखते हुए मसूड़े में काला धतूरे के पत्तों का रस निकालकर उस रस में नमक का थोड़ा-सा

अंश डालकर जिस तरफ की दाढ़ में दर्द हो उस तरफ के कान में उस नमक के रस को थोड़ा गरम करके डालने से दाढ़ का दर्द होना १ दिन में बिल्कुल ठीक होगा, सूजन भी कम होना शुरू हो जाती है।

कुकास, काली खाँसी

कुत्ते को फाँसी देकर जिस भी पेड़ की डाली में लटकाया हो, उसी पेड़ की छाल और कुतरकाटी के बीज, इन दोनों को छान कर इसकी शहद या पुराने गुड़ में १-१ रत्ती की गोली बनाकर रख लें। इसकी सात गोली पानी में देनी चाहिये। ७ गोली से अधिक गोली नहीं देना चाहिए। इसके सेवन कराने से काली खाँसी आना बन्द हो जाती है। यह टोटका अभी तक १२ रोगियों पर आजमाया गया है। जिसमें से २ रोगी को ही कोई फायदा नहीं हुआ, शेष सभी को आश्चर्यजनक फायदा हुआ है।

सूखा रोग

सांडे के तेल में बाजरा का आटा मिलाकर उसकी छोटी-छोटी गोली बना लें। इन गोलियों में से केवल एक दिन ही ३ बार सुबह-शाम-दोपहर ही १-१ गोली दूध के साथ बच्चे को दें। गोलियों को एक ही दिन सेवन कराना होता है। इसके

साथ ही भूमिगोदा के (राजगोदा काँटे वाला) पौधे की जड़ सहित उखाड़ कर नहाने के गरम पानी वाले बर्तन में उसे छोड़ दो, उस पानी से लगातार ५ दिन तक नहलाओ। उस बर्तन का पानी पूरा खत्म होने दो, थोड़ा शेष रहने पर वह पानी दूसरे दिन के लिए रहने दो। उस बर्तन मे पानी और गोदा लगातार ५ दिन तक रहने देना चाहिये। इस तरह ५ दिन तक उस पानी से नहलाते रहें तो बच्चे का सूखा रोग जाता रहता है।

मृतवत्सा

बच्चा पैदा होने के ५वें दिन (पाँचवी के दिन) प्रसूति के नहाते समय उस नहाने के पानी मे एक-दो बूँद शेर से निकाला हुआ तेल डाल दें और उस तेल मिले हुए पानी से प्रसूति को नहाने दो-तो जिसको बच्चे पैदा हो जाते है; परन्तु कुछ समय तक जीवित रहकर मर जाते है, उस स्त्री को ऐसे पानी से नहलाने से उसके बच्चे जीवित रहने लग जाते हैं।

इस मन्त्र को यन्त्र सहित भोजपत्र पर लिखकर ताँबे के ताबीज में भरकर पाँचवें माह में गर्भिणी की कमर में बाँधें। बालक के जन्म होने पर खोलकर बालक के गले में धारण करें।

दूसरे के चढ़ाये हुए विष की परीक्षा का मन्त्र

विष ऐलो उलटे पलटे नेड़ लेर चोटे मरे केड़टे गरूरं पाथ करीया प्रणाम, गेठेली विष करी खान आगे चले मनसा बूढ़ी विफू चले विष फुड फेर चोटे उड़िये दीनु गेठेलीर विष नाई विष अमुकेर अंगेर धिक धिक नाचिछे रंगेकार आज्ञा देव रे मन सार आज्ञा।

विधि - इस मन्त्र को दीपावली या होली में १००० बार पढ़कर धूप, दीप, नैवेद्य, मिठाई धरकर पूजा करें और तिल, चावल, शक्कर, घी, इन्हें बराबर-बराबर लेकर हवन करें और ब्राह्मण भोजन करायें तो मन्त्र सिद्ध होता है और अमावस को धूप देकर मन्त्र पढ़ लो तो ज्यादा तेजी से मन्त्र चलेंगे। इस मन्त्र को चार आदमियों के साथ सीखना चाहिये। क्योंकि सहायता की जरूरत रहती है।

भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

१. ॐ नमो ॐ ह्रॉं ह्रीं हूँ नमो भूतनायक समस्त भूवन भूतानि साधय हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा।

२. ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु-वक्षस्थल-

विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भव-समस्तदोषान् हन हन सर सर कम्प कम्प मथ मथ हूँ फट् फट् फट् ढः ढः ढः महारुद्रो जाययानि स्वाहा।

विधि - इन दोनों मन्त्र में से किसी एक मन्त्र से मोरपंख लेकर १०८ बार झाड़ दें, इससे भूत अवश्य भाग जायेगा।

सर्प-विष उतारने का मन्त्र

सात समुद्र तेरो नदी पारसोनार लंकाय जन्म तोर, रोले मरीचा भारत भुवने तोमार चिबाये खेलेम विष (अमुकेर) अंग करो निर्विष नाई विष (अमुकेर) जाय मेरे विष-हरीर आज्ञाय।

विधि - सात काली मिर्च में सात बार मन्त्र पढ़कर काली मिरचों पर फूँक मार कर रोगी को चबाने को दें, यदि विष होगा तो मीठा लगेगा और विष नहीं होगा तो मिरच तीखी या चटपटी लगेगी। अगर मिरच मीठी लगे तो दुबारा भी और पढ़कर चबवाये और खिलाये। इसी माफिक जब तक मीठी मालूम लगे तब तक मिर्चे मंत्रित करके चबाने को देते जायें, विष से बिल्कुल आराम हो जायेगा।

दसरथी राम, विष्णु अवतार, गरुड़ वाहने आकेशे संचार, नल दमयन्ती जाय पहाड़े मरे आगुन पूड़े, गंड़ी बेड़ी नागिनी बेड़ी पालाय विष ताड़ी ताड़ी, नाई विष (अमुकेर) आगे काट आज्ञा गरुड़ेर आज्ञा दुहाई गरुड़ दुहाई गरुड़।

विधि - यह मन्त्र पढ़ पढ़कर रोगी के चारों तरफ घूमे, पत्ती प्रदक्षिणा करे और मन्त्र समाप्त होने पर रोगी के मस्तक पर फूँक मारे। इसी प्रकार जब तक विष रहे बराबर झाड़ते रहे और जब तक विष झड़े नहीं तब तक झाड़ने वाला आदमी बैठे नहीं, बैठने से काई फल नहीं होगा। अमुक स्थान पर रोगी का नाम ले।

पचां पुकुरे कांदे ने तो भलोरे सांपा पूता, आघाड़ खाय कापडेर पाटे विष लाय अपनी उठे भई विष (अमुकेर) अंगे नाई आर, ने तो बोले दुहाई कामाख्यार।

विधि - जो अंग पक्ष अर्थात् जिस स्थान में सर्प ने काटा हो उसके दूसरे अंग के वही स्थान में मन्त्र पढ़-पढ़ कर थप्पड़ मारना। जैसे किसी आदमी के बायाँ पैर के जंघा में सर्प ने काटा है तो दाहिने पैर के जंघा पर उसी स्थान में पढ़-पढ़ कर थप्पड़ मारे, जैसे-जैसे विष उतरता जाये, अमुक स्थान पर रोगी का नाम लेता जाये।

अन्य रोग में विधि - इस मन्त्र को रविवार या मंगलवार को लिखकर दाहिने हाथ या गले अथवा चोटी में कच्चे धागे से बाँध दें। हर किस्म का ज्वर नष्ट होता है।

नजर उतारने का मन्त्र

बालसय सर्वे विघ्ना नश्यन्ति मंत्रे बसति जगत्पति।

विधि - लाल मिर्च ८ नग, थोड़ा नमक और थोड़ा बालक के माता के सिर का बाल। माता न हो तो किसी भी स्त्री के सिर के बाल लेकर सब एकत्र करके दाहिने हाथ में लेकर मन्त्र पढ़कर हाथ बालक के ऊपर घुमाता रहे और मन्त्र समाप्त होने पर एक फूँक बालक के शरीर पर मारा करें। इस प्रकार आठ बार करें। तत्पश्चात् सामग्री को जलते हुए चूल्हे में डाल दें। बाधा होगी तो न मिर्च की गंध आयेगी और न बालों की ही; किन्तु दो चार बार करने के पश्चात् गंध आने लगे तो समझना चाहिये कि बालक बाधा से मुक्त हो गया है। मन्त्र जिस बालक पर कहें उसके यहाँ दूध, खाना या पीना मना है। यहाँ तक कि जल भी न पीये, केवल पैसा-कौड़ी लें।

आमरक्त-नाशक मन्त्र

इस रोग में रोगी को आँव निकलने के साथ-

साथ रक्तस्राव भी होता है, जिसे आमरक्त कहा जाता है। इसके निवारण के उपाय नीचे लिखे हुए मन्त्र श्लोक में दिये गये हैं।

'सागरेर कूले उपजिल शूल आरे पीउ पीउ पानी अमुकेर घुचिलाम रक्तशूल छाडानि धर्मेर आज्ञा' इति पठित्वा जलं पेयम्।।

उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करने के पश्चात् रोगी को वह जल पी लेना चाहिये।

अतिसार-नाशक मन्त्र

किसी व्यक्ति को बार-बार पहले दस्त आने को ही अतिसार नाम दिया गया है। इसके उपचार के लिए नीचे लिखे मन्त्र को काम में लेना चाहिये।

श्री महादेव उवाचः गङ्गा यमुना तीर्थेर पानि, ये कहिलो काहिनी, से खाइलो पानि-आइजो होइते दूर होइलो अमुकेर बन्ध्या तूलानि, सिद्धि गुरु श्री रामेर आज्ञा।।

उक्त मन्त्रपूत (अभिमन्त्रित) जल रोगी को पिलाने से उसका अतिसार रोग ठीक हो जाता है।

विविध भाँति के रोगों का उपाय

१. किसी कुँवारी कन्या के द्वारा ज्वराक्रान्त व्यक्ति के हाथ में चिड़चिड़े की जड़ को धागे में

लपेटकर बँधवा देने से ज्वर उतर जाता है। इस प्रयोग का कथन शिवजी के द्वारा किया गया है। अतः इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं लाना चाहिये।

२. रविवार के दिन रक्तवाटचा की जड़ की कदली (केला) के रेशे में लपेट कर रोगी के बिस्तर के नीचे दबा देने से वह ज्वरमुक्त हो जाता है।

उदर विकार निवारण

मधु के साथ नागेश्वर (नागकेशर) की जड़ का पान करा देने से पेट के समस्त रोग दूर हो जाते है।

नेत्ररंजनकरण

१. किसी ताँबे के बर्तन में दीप जलाकर काजल एकत्रित कर लें। अब इस काजल को घी में फेटकर आँखों में अंजन लगाने से नेत्रों की ज्योति पूर्ववत् लौट आती है।

२. पुनर्नवा (गदहपूरना) बूँटी को कुचलकर उसका रस निकाल लेवें। अब इस रस में घी मिलाकर भक्षण करने से आँखों की रोशनी तेज हो जाती है।

सम्पूर्ण रोगों का निवारण

१. इस लिखित मन्त्र– 'ॐ क्रीं क्षं सं सं सः' – के

द्वारा गोघृत को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके उस घी को पीना चाहिये। प्रतिदिन एक महीने तक लगातार नियत मात्रा में पान करने से समस्त रोगों का विनाश हो जाता है।

२. उपर्युक्त मन्त्रपूत (अभिमन्त्रित) घृत को पीने के एक महीने तक दुग्धपान करने से नेत्र ज्योतिवर्धन होता है। इसे नियमितरूप से उक्त परिणाम में सेवन करने से कास (खाँसी) रोग से छुटकारा मिल जाता है। चावल के धोवन के साथ इस घृतपान से शूलरोग नष्ट होता है। पुनर्नवामूल के स्वरस के साथ इसके सेवन से वृद्धत्व का निवारण होता है। अर्थात् असमय में वृद्धावस्था के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होते। यदि इस घृत को गन्ने के रस के साथ पान किया जाता है, तो विविध व्याधियों से मुक्ति मिलती है।

कुत्ता-विष निर्विषीकरण

१. कुत्ते द्वारा काटे गये स्थान पर गुड़, तैल तथा मदार के दूध को एक साथ मिश्रित कर लेपन करने से विष का निवारण होता है।

२. किसी बावले (पागल) कुत्ते के काट लेने पर वहाँ घृतकुमारी (घीकुँआर का पौधा) का पत्ता और सेंधानमक पीसकर किंचित् आग पर गरम करके तीन दिनों तक दंशित स्थान पर बाँध

देने से वहाँ का विष उतर जाता है।

विविध भाँति के जहरीले जन्तुओं का विषनाशक

१. सिंधी नमक मछली द्वारा डंक मारने पर वहाँ गरम करके थोड़ा घी लगाकर सेंक देना चाहिये।

२. मकड़ी–विष के निवारणार्थ हल्दी, दारुहल्दी, मंजिष्ठा (मंजीठ) तथा नागकेशर को पीसकर लेप करने से विष का प्रभाव जाता रहता है।

३. सरसों तथा करंजबीज को तिल के साथ पोषण कर दंशित स्थान पर लेप करने से किसी भी प्रकार के कीड़े का विष दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त एरण्ड (रेड़ी का तेल) कीटदंशन के स्थान पर मालिश करने से भी विष का हरण हो जाता है।

सर्पविष नाशक औषधियों का वर्णन

१. श्वेत अपराजिता तथा देवदाली (तरोई) की जड़ को पानी के साथ पीसकर सर्पदंशित की नाक में नस्य देने से मरणासन्न रोगों में भी कभी-कभी प्राणों का संचार हो जाता है।

२. निम्नलिखित आठ वस्तुओं का योग तैयार कर रोगी को देने से क्रोधित हुए तक्षक और वासुकी नाग से दंशित व्यक्ति भी मरते–मरते बच जाता

है। वे वस्तुएँ इस प्रकार है- दही, शहद, मक्खन, छोटी पीपर, अदरक, मरिच, कूठ और सेंधा नमक।

३. कटुकी और मूसली की जड़ को पानी में पीसकर पीने से सर्पविष का निवारण होता है। इसके अतिरिक्त वृश्चिक नामक पौधे और वीरणा की जड़ पीसकर दंशित स्थान पर लगाने से भी विष उतर जाता है।

४. सोमराजी बीज के चूर्ण को गोमूत्र में भिगोकर सेवन कराने से स्थावर तथा जंगम विषों का नाश हो जाता है। इसे मृतसंजीवनी औषधि कहा गया है।

५. साँप काटने पर यदि किसी व्यक्ति के पूरे शरीर में फैल गया हो तो उसे गाय के दूध में हल्दी पकाकर उसका काढ़ा पिलाने से वह पुनः स्वस्थ हो जाता है।

६. हल्दी और कुष्ठ (कूठ) का काढ़ा बनाकर सर्पदंशित व्यक्ति को पिलाने से वह विषमुक्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त हल्दी, कुष्ठ, शहद और घी को एक साथ मिलाकर सेवन करने के फलस्वरूप सभी प्रकार के विषों का नाश हो जाता है।

७. कुंकुम, अलक्तक (आलता), लोध, मनःशिला

(मैनसिल) तथा गोरोचन को पीसकर वटी बना ले। शरीर के विष द्वारा प्रभावित होने पर इस गोली को पानी में घिसकर लेप करने से विष का प्रभाव जाता रहता है।

अपने स्वर को गानविद्या में सुरीला बनाना

जाती वृक्ष (जायफल) की पत्ती, जारा, (लावा), मातुलंग की पत्ती और शहद को एक साथ पीसकर एक पल (लगभग २५ ग्राम) चाटने से गायक का स्वर किन्नरगणों के समान मधुर और मनमोहक हो जाता है।

सांठ के चूर्ण में शहद और शर्करा मिलाकर गोली बना लेनी चाहिये इस गोली के सेवन से सुर-साधक का स्वर कोकिल के समान मनोहारी हो जाता है।

यदि कोई गायक निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण तिलतैल के साथ भक्षण करता है तो वह किन्नरों के साथ भी राग अलापने में सक्षम हो जाता है।

विभीतक (वहेड़ा), जीरा, सोंठ, सेंधा नमक और दालचीनी। इन सभी वस्तुओं को बराबर की मात्रा में लेकर पीस डाले और इसे गोमूत्र के साथ मिलाकर दो तोले (लगभग २५ ग्राम) की मात्रा में पान करता रहे तो वह स्वरसाधक किन्नरों के साथ

गायन करने की भी क्षमता पा लेता है।

नेत्ररोग निवारण तथा रक्षण

१. सफेद गदहपूरना की जड़ को घी में पीसकर नेत्रों में लगाने से आँखों में पानी आना रुक जाता है। इसके अतिरिक्त इसकी जड़ को दारुहरिद्रा (दारुहल्दी) के साथ पीसकर अंजन की तरह नेत्रों में लगाने पर नेत्रों में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है।

२. घोंघे और कौड़ी को पहले पानी से धोकर उसे शुष्क बना लें। तत्पश्चात् उसका भस्म बनाकर मक्खन में फेटकर नेत्रों में अंजन करने से आँखों की फूली कट जाती है।

३. काकमाची (मकोय) की जड़ को वर्षाकाल में उखाड़कर इसे तेल में पकाकर छान लें उस तेल को एक महीने पर्यन्त नेत्रों में लगाने से गिद्ध के समान आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण हो जाती है।

४. हरीतकी (हरड़), वच, कुष्ठ (कूठ), काली मरिच, बहेड़े का गूदा, शंखनाभि तथा मनःशिला (मैनसिल) इन सब पदार्थों को बराबर मात्रा में लेकर बकरी के दूध में पीसकर उसकी वटी बनाकर उसका चूर्ण आँखों में लगाने से तिमिर, कुंडू, अर्बुद, रतौंधी (रात्रि में दिखलाई न पड़ना), मांसवृद्धि–

जैसे घातक रोगों का का भी उपशम हो जाता है। यदि इसका अंजन एक महीने तक निरन्तर लगाया जाये, तो दो वर्षो की पुरानी फूली भी नष्ट हो जाती है। शास्त्रों में इसे चन्द्रोदय वटी के नाम से भी जाना जाता है।

५. जो मानव समुचित आहार-विहार का पालने करते हुए त्रिफला का चूर्ण घृत और मधु (घी तथा शहद का प्रयोग समभाग में कदापि नहीं करे, नहीं तो वह विषतुल्य हो जाता है।) के साथ नित्य प्रति सेवन करता है। उसके समस्त नेत्ररोग उससे उसी प्रकार दूर हो जाते हैं, जिस प्रकार दरिद्र व्यक्ति के साथ सभी ऐश्वर्य उसे छोड़कर दूर हट जाते हैं।

६. दशमूल (बिल्व, गोखरू, दोनो बृहती, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, बिदारीगंधा, पोटला, काश्मर्य एवं अग्निमंथ- इन दश औषध समूहों को दशमूल के नाम से जाना जाता है) को आग पर पकाकर काढ़ा बनावें। जब उस काढ़े का चौथाई भाग शेष रह जाये, तो उसे छानकर उसका चतुर्थांश उसमें तिलतैल मिलाकर दशमूल के साथ साथ पुनः पका लेना चाहिये। इस तैल को कानों में डालने से बहरेपन का नाश हो जाता है।

७. मनःशिला (मैनसिल) तथा अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ का चूर्ण बनाकर उसमें शहद मिला लें।

अब अवलेह को लगभग २५ ग्राम की मात्रा में भक्षण करने से श्रवणशक्ति पुनरावर्तित हो जाती है।

८. लहसुन, आमला तथा हरताल को बराबर की मात्रा में लेकर उसे चौगुने तिलतैल में पीस डाले। अब उस तैल को चौगुनी मात्रा में दूध मिलाकर सबको एक साथ पका लें। जब दूध जलने के बाद मात्र तेल शेष रह जाये तब उसे छान कर रख लेना चाहिये। इस तैल को कानों में डालने से बहिरापन दूर हो जाता है।

९. तगर और पलाश वृक्ष की जड़ को दाँतों से चबाकर उसके रस को कानों में डाल देने पर गोमक्षिका नामक कीट का नाश हो जाता है।

१०. नीली नामक पौधे के मल का स्वरस काँजा (मट्ठा) में मिलाकर एक साथ आग पर पका लें। इस तैल की कुछ बूंदें तैल के गरम रहते ही कानों में टपका दें तो उससे कृमि आदि नष्ट हो जाते है।

११. शूकर का तैल कानों में डालने से सुनने की शक्ति बढ़ जाती है।

१२. अश्वगंधा (असगन्ध), वच, कुष्ठ (कूठ) तथा गजपिप्पली (गजपीपर) इन सबको बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण कर डालें और उसे भैंस

के मक्खन में मिलाकर कानों में लेप करें तो श्रवणशक्ति का वर्धन होता है।

१३. सफेद सरसों, बृहती तथा अपामार्ग (चिडचिड़ा) को बराबर भाग में ग्रहण कर बकरी के दूध में उसे पीस डालें। अब इस लेप को कानों में लेप करने से कर्णपाली (कान की लोर) बढ़ जाती है।

दाँतों को सुदृढ़ बनाना

१. किसी ताँबे के बर्तन में थोड़ी देर तक हरड़ के चूर्ण को मधु के साथ पका डालें। तदन्तर इसे गोली के रूप में बना लें। इस गोली को मुख में रखने से दाँतों के समस्त कीड़े मर जाते हैं।

२. दाँतों के नीचे स्नुही वृक्ष (थूहर, सेहड़) की जड़ को दबाकर रखने से दन्तकृमि नष्ट हो जाया करते हैं। घी में कसीस को पकाकर मुँह में धारण करने से दन्तपीड़ा का निवारण होता है।

३. प्रातःकाल जातीवृक्ष की अथवा अखरोट वृक्ष की पत्ती मुख में रखकर चर्वण करने से हिलते हुए दाँत भी मजबूत हो जाते हैं। उपर्युक्त वृक्ष की लकड़ी का दातुन बनाकर सुबह दातुन करने से भी हिलते हुए दाँत अपने स्थान पर स्थिर हो जाते हैं।

४. बकुल (मौलसिरी) के पुल चबाने से चलायमान दाँत पुनः स्थिर हो जाते हैं। मौलसिरी बीज को जल में पकाकर उसके गरम जल से कुल्ला करने से भी हिलते हुए दाँतों के लिए यह हितकारी होता है।

५. मौलसिरी की छाल को पकाकर उसके गरम जल से निरन्तर सात दिनों तक कुल्ला करने से ढीले दाँत भी स्थिर और दृढ़ हो जाते हैं।

रक्षा के उपाय

१. ॐ क्रां ह्रीं श्रीं इसके अतिरिक्त दूसरा रूप- 'ॐ क्रीं श्रीं क्षीं' भी होता है। इसे संयमन मन्त्र कहा गया है। इस मन्त्र को विधि-विधानपूर्वक केवल पचास बार जप कर लेने से ही समस्त अनिष्टों का निवारण हो जाता है। भगवान शिव ने स्वतः इस प्रयोग को सराहा है।

२. जो मनुष्य संयतमना होकर श्रद्धा-भाव से सर्वदा इस महामन्त्र- 'ॐ ह्रीं ख्रीं छ्रीं ठ्रीं थ्रीं क्रीं ह्रीं' का स्मरण करता रहता है, उसका सर्वविध मंगल होता है एवं उसके सभी अकल्याणकारी फल विनष्ट हो जाते हैं। जो मानव अपने हाथों से लाल फूलों की माला बनाकर उस निर्मित माल्य को इस मन्त्र से एक सौ बार अभिमन्त्रित कर देवी को समर्पित करता है, वह जीवनभर सुख

का भागी बना रहता है और दिनोदिन उसे सफलता मिलती रहती है। इस महामन्त्र को लिखकर जिस घर में स्थापित किया जाता है, वहाँ कभी भी किसी प्रकार का अनिष्ट नहीं होता है।

३. भगवान् शिवशंकर ने देवी पार्वती से कहा - 'हे देवी! क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्' - यही हमारा प्रत्यक्ष स्वरूप है, यही हमारा ध्यान तथा जपमन्त्र भी है। जो प्राणी इस मन्त्र को पाँच-सौ बार जप करता है, उसका कभी अहित नहीं होता। त्रैलोक्य में उसकी समता किसी के साथ नहीं हो सकती और वह प्रत्यक्ष रूप से शत्रुहीन होकर फलोपभोग करता है। इस लोक में ऐसा व्यक्ति सदैव ही स्त्री-पुत्र, बन्धु तथा कुटुम्बियों से आवेष्टित रहकर अन्तकाल मे परलोकगामी होता है।

४. सफेद मदार (श्वेतार्क) को रवि-पुष्य योग (रविवार के दिन पड़ने वाला पुष्य नक्षत्र) में खोदकर भुजा में धारण करने से समस्त अनिष्टकारी फलों का नाश हो जाता है। उस जड़ को आग में धूनी देने से भूत-प्रेतादि का निवारण होता है। ऐसे प्राणी को केवल देखकर ही भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी तथा दानवादि दूर भाग जाते हैं।

भाग्यविहीनीकरण

नीमवृक्ष के बाँदे (अन्य प्रजाति की नीचे लटकने वाली शाखा) को ज्येष्ठा नक्षत्र में जिस किसी को वह दिया जाये, तो वह व्यक्ति भाग्यहीन बन जाता है।

विवादकारक प्रयोग

वस्त्रविहीन और विमुख होकर विशाखा नक्षत्र में नीम के पेड़ की उस जड़ को मुख से काटकर लाये, जिसकी शाखायें उत्तर दिशा की ओर फैली हुई हों। इस जड़ को जिसके घर में फेंक दिया जाये, उसके परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती है। यदि उस जड़ को वहाँ से पुनः अन्यत्र फेंक दिया जाये, तो उस घर का विवाद समाप्त हो जाता है।

ब्रह्मदण्डी तथा काकमाची (मकोय) के पौधे को अड़हुल के फूल के रस में क्रमशः सात दिनों तक पीस लें। तदनन्तर शत्रुओं के बीच उसकी धूनी देने से उसकी गन्ध सूँघने मात्र से ही पारस्परिक विवाद पैदा हो जायेगा। इसके प्रयोग से अपने सगोत्रियों या माता-पिता के बीच भी विवाद खड़ा हो जाना सम्भाव्य हो जाता है।

उत्पीड़क जीवों का विनाशन

१. हरताल को तग्र (मट्ठे) के साथ पीसकर उसे

पुतली पर लेप कर दें। उक्त द्रव्य से लिपी हुई उस पुतली को देखकर ही घर की मक्खियाँ वहाँ से दूर चली जाती हैं।

२. काली उड़द और काला तिल के चूर्ण को सफेद मदार के दूध में मिला लें। अब उसका लेप मदार के पत्तों पर लगाकर घर में रख छोड़ने से घर के चूहे भाग जाते हैं।

३. हरिताल को प्याज के साथ पीस डालें। अब उसमें बकरे का मल-मूत्र मिलाकर किसी चूहे के शरीर पर उसे लेपित कर देने पर उसे देखते ही दूसरे चूहे भी घर छोड़कर भागने के लिए विवश हो जायेंगे।

४. गन्धक, हरिताल, ब्राह्मी बूँटी और त्रिकुट (काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ) को पहले की तरह बकरे के मूत्र में पीसकर किसी एक चूहे के शरीर पर लेपन कर उसे जीवित छोड़ देने से घर के अन्य सभी चूहे उसे देखकर ही घर से पलायन कर देंगे।

५. सफेद मदार की जड़ को मघा नक्षत्र में लाकर उसे मुलेठी के साथ पीस डालें। उस चूर्ण को घर या खेतादि स्थानों में डाल देने से वहाँ रहने वाले चूहे, मक्खियों आदि का मुखबन्धन हो जाता है। जिससे वे कृषि को क्षति नहीं

पहुँचा पाते।

६. बहेड़े की लकड़ी और फूल को पलीते में डालकर मशाल की तरह उसकी रोशनी करने से ही खटमलादि कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

७. सोमराजी वृक्ष के पल्लवों के अगले भाग से पलीता बनाकर उससे दीप जलाने पर खटमलादि जीव-जन्तु विनष्ट हो जाते हैं।

८. मदार की रूई लेकर उसकी वत्ती बना लें और मदार के कटुतैल में उसका दीया जलाया जाये, तो मच्छर, मक्खियों आदि का उपद्रव नहीं हो पाता।

९. अर्जुन वृक्ष के फल तथा फूल, लाक्षा (लौह, लाख), चन्दन, गुग्गुल, श्वेत अपराजिता की जड़, भल्लातक (भिलावाँ) की लकड़ी की जड़ एवं विडंग (भाभीरंग, वायविडंग) को एक साथ पीसकर चूर्ण बना लें और उस चूर्ण की घर में धूनी दें, तो उसकी गन्ध से ही घर में रहने वाले साँप, मच्छर-मक्खियाँ तथा चूहे आदि सभी जीव-जन्तु भाग खड़े होते हैं।

१०. गुड़, चन्दन, भल्लातक (भिलावाँ), विडंग (भाभीरंग), त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला), लाक्षारस तथा मदार का पुष्प। इन सब वस्तुओं को एक साथ मिलाकर धूनी देने से साँप, बिच्छू आदि

जहरीले जन्तुओं का विनाश हो जाता है।

११. नमक का घोल, वसा (चर्बी), अर्जुन वृक्ष की जड़, मरुवक (दौना नामक एक सुगन्धित पौधा), केतकी पुष्प की जड़ तथा नखी नामक द्रव्य। इन सबको एक साथ मिलाकर धूप देने से उस स्थान में कीड़े-मकोड़े, मक्खी, चूहे तथा सर्पादि जीवों का भय नहीं रह जाता है।

रोम-विनाशक योग

१. हरिताल का चूर्ण एक भाग, शंख भस्म पाँच भाग तथा पाकड़ वृक्ष की लकड़ी का भस्म पाँच भाग लेकर केले के पत्ते के रस में मिलाकर उसे सात दिनों तक रख छोड़ें। तदनन्तर इसे रोमपूर्ण स्थान में (योनि स्थान में) जो नारी लेपन करती है। उसके रोम नष्ट हो जाते हैं और फिर उस स्थान पर पुनः बाल नहीं उगते।

२. पलाश वृक्ष की लकड़ी का भस्म तथा हरिताल चूर्ण एक साथ मिलाकर केले के पत्ते के साथ पीस ले। ततपश्चात् इस लेप को बालों के स्थान पर लगाये तो समस्त बाल जड़ से उखड़कर गिर पड़ेंगे।

३. पहले शंख भस्म को कदली स्वरस में एक सप्ताह तक भिगो दें। तदनन्तर उसके साथ हरिताल को चूर्ण मिश्रित कर दें। अब इसको

पीस कर उसका लेप तैयार कर लें और रोमयुक्त स्थान पर प्रयोग करे तो सभी बाल झड़ जाते हैं।

४. हरिताल चूर्ण, मंजिठ, जों एक प्रकार की महीन लाल रंग की लकड़ी होती है। इसे रंगने के काम में भी लाया जाता है। भस्म और किंशुक (पलाश) की लकड़ी की भस्म बराबर मात्रा में ग्रहण कर बालों के स्थान पर लेप करें तो वहाँ के बालों का नाश हो जाता है।

५. शंख, हरिताल, यव (जौ) तथा घुंघुची (गुंजाफल) को समान मात्रा में लेकर बालों के स्थान में लेपन करने से वहाँ के बाल गिरकर वैसे ही साफ हो जाते है जैसे पेड़े की पकी पत्तियाँ अपने स्थान से अलग हो जाती है। इनके अतिरिक्त मनःशिला (मैनसिल नामक एक पीला पदार्थ) को सरसों के तेल में मिलाकर बालों के स्थान पर लगाने वह स्थान रोमरहित हो जाता है।

६. हरिताल तथा संखचूर्ण को खारे पानी (लवणयुक्त) में पीसकर किसी भी केश-समूह के स्थान पर धूप में बैठकर लगाने से वहाँ के बाल तत्काल गिरकर विनष्ट हो जाते है।

७. सुपारी के पत्ते के रस में गंधक को पीस डालें,

फिर उसे रोमयुक्त स्थान पर लगावें तो वहाँ के बाल गिर जाते हैं। इस लेप को लगाकर धूप में बैठना चाहिये।

नष्ट रजधर्म पुनः ठीक होना

१. ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के मुलायम पत्तों को आग में भून लेवें। तत्पश्चात् उस दग्ध पत्तों को अड़हुल के फूल के साथ पीसकर बासी जल अथवा कांजी (दही के पानी) में मिलाकर पीने से रजोरोधी नारी का रजोधर्म पुनः चालू हो जाता है।

२. दूब के अंकुरो और चावल को समान मात्रा में लेकर पीस डालें और उसे पीठी के समान बना ले। तत्पश्चात् इस पीठी को आग पर भूनकर जो स्त्री सेवन करती है, उसका रुका हुआ रजःस्राव पुनः खुल जाता है।

३. जो नारी कबूतर के बीट को शहद के साथ मिलाकर पान करती है उसका नष्ट रज पुनः प्रवर्तित हो जाता है। इस योग का कथन मूलदेव ने किया है।

४. त्रिकुट (सोंठ, मरिच, पिप्पली) का काढ़ा बनाकर उसमें गुड़ तथा काला तिल का चूर्ण मिलाकर पीने से नष्टपुष्पा नारी पुनः रजोधर्म वाली हो जाती है। इस काढ़े को पीने से रक्तगुल्म

नामक रोग में भी लाभ होता है।

मासिककाल में अत्याधिक रजःस्राव का ठीक करना

१. आँवला (धात्री) हरड़ और रसांजन (रसौत) को पीसकर चूर्ण बना ले और उसे जल के साथ सेवन करे तो अन्यत वेग से प्रवाहित होने वाला रजःस्त्राव भी उसी प्रकार रुक जाता है, जिस प्रकार बाँध बना देने पर जल प्रवाह रुक जाता है।

२. लिसोढ़े के पेड़ का छिल्लका और चावल को एकत्र पीसकर पीठी की भाँति बना ले। तदनन्तर उस पीठी की पोटली बनाकर योनि के अन्दर स्थापित करने से बहता हुआ रजःस्राव स्थिर हो जाता है।

३. पुरानी सुपारी के साथ अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ पीसकर जो नारी भक्षण करती है, उसके ऋतुकाल में होने वाला अत्याधिक रक्तस्राव भी बन्द हो जाता है और वह अपने को सुखी होने का अनुभव करने लगती है।

४. चन्दन, दुग्ध, घी, शर्करा एवं शहद को समान मात्रा में ग्रहण कर सेवन करने वाली नारी का अत्याधिक प्रवाहित होने वाला रजःस्राव अवश्य ही रुक जाता है।

जन्मजात बाँझ की चिकित्सा

१. रविवार के दिन जड़ और पत्तों सहित उखाड़कर सर्पाक्षी का पौधा लावे और उसे एक रंगवाली गाय के दूध के साथ किसी अविवाहिता कन्या के द्वारा पिसवा डालें। तत्पश्चात् मासिक धर्म होने पर पहले दिन से ही इसे आधा पल की मात्रा मे सात दिनों तक निरन्तर सेवन करे। औषध सेवन काल में दूध, शालि चावल तथा मूँगादि जैसे हल्के पदार्थों का आहार ले। अपने मन में किसी प्रकार के शोक, भयादि को स्थान न दें। साथ ही सप्ताहान्त तक व्यायाम, पुरुष-संसर्ग, दिवाशयन, परिश्रमपूर्ण कार्य, अत्यधिक शीतलता तथा उष्णता से भी बचने का प्रयास करें। उपर्युक्त नियमों का जो स्त्री पालन करती है, वह ऋतुकाल की समाप्ति के अनन्तर पति-सहवास के फलस्वरूप निश्चित रूप से गर्भवती होती है। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिये।

२. एक रुद्राक्ष का दाना तथा लगभग 50 ग्राम परिमाण में सर्पाक्षी पौधा लेकर पूर्ण योग की भँति गो-दुग्ध के साथ ऋतुमती होने पर जो नारी सेवन करती है। उसका वन्ध्यत्व नष्ट हो जाता है अर्थात् वह गर्भधारण में समर्थ हो जाती है। औषधि सेवन काल में निम्नलिखित

गणेश मन्त्र का भी जप करें।

३. यदि पलाश के एक पत्ते को दूध के साथ पीसकर कहे गये विधि के अनुसार कोई नारी गर्भावस्था में पीती रहे तो वह निश्चित ही पुत्रवती बन जाती है। इस विधि को अपनाने के लिए पूर्वोक्त नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

४. रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र पड़ने पर देवदाली (तरोई) की जड़ उखाड़ लायें और उसे लगभग २५ ग्राम मात्रा में दूध के साथ पीसकर पीने से जन्मवन्ध्या नारी भी पुत्र-लाभ को प्राप्त करती है। औषधि ग्रहणकाल में पथ्यापथ्य का ध्यान रखना अनिवार्य है।

५. यदि ऋतुस्नाता नारी घृत तथा जल के साथ अश्वगन्धा (असगन्ध) पकाकर घी और दूध के साथ पान कर उस दिन पति समागम करे तो उसे अवश्य ही पुत्र की उपलब्धि होती है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिये। परन्तु सोते समय घृतपान कर लेना चाहिये।

६. ऋतुस्नान के बाद जो स्त्री बकरी के दूध के साथ कृष्णापराजिता (काली अपराजिता) की जड़ को पीसकर पान करती है वह निश्चय ही पुत्रवती बनती है।

७. पिप्पली (छोटी पीपर), नागकेसर, अदरक, सोंठ और काली मिर्च को गाय के घृत में पीसकर पीने से जन्मवन्ध्या स्त्री अवश्य ही सन्तति प्राप्त करती है। यह अति-उत्तम योग मुनियों द्वारा बतलाया गया है।

काकवन्ध्या चिकित्सा

एक बार गर्भधारण के पश्चात् जो नारी पुनः गर्भधारण नहीं कर पाती उसे काकवन्ध्या की संज्ञा दी जाती है। यहाँ ऐसी ही स्त्रियों के हितार्थ उनकी चिकित्सा का कथन किया गया है।

विष्णुक्रान्ता की जड़ ऋतुकाल में भैंस दूध के साथ पीसकर सेवन करना चाहिये और ऊपर से भैंस का माखन भी ग्रहण करना आवश्यक है। उपर्युक्त कथित नियमों का पालन करते हुए जो नारी एक सप्ताह तक औषधि सेवन करती है, वह दोबारा गर्भधारण करने में समर्थ हो जाती है।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र आने पर असगंध की जड़ लाकर उसे भैंस के दूध में पीस डाले। तदनन्तर एक सप्ताह तक लगभग २५ ग्राम की मात्रा में नियमित सेवन करने से काकवन्ध्या नारी को भी पुनः गर्भधारण होता है। इस बात में किसी प्रकार संशय नहीं करना चाहिये।

जिस नारी को संतान होकर भी बार-बार उसकी

संतति नष्ट हो जाती हो, उसे ही मृतवत्सा के नाम से जाना जाता है। अब इस स्थान में उसी की चिकित्सा का वर्णन किया जा रहा है।

अनार वृक्ष के मूल को दूध में पकाकर छान लें और उसमें ऊपर से घी मिलाकर ऋतुकाल में पान करे। ऐसा करने से वह नारी निश्चय ही मृतवत्सा के दोषों से मुक्त हो जाती है। अर्थात् वह दीर्घजीवी संतान की माता बनती है।

सरलतापूर्वक प्रसवोत्पादन

१. सफेद गदहपूरना (श्वेत पुनर्नवा) की जड़ का चूर्ण योनि में स्थापित करने से प्रसव में कोई कठिनाई नहीं होती।

२. उत्तर दिशा में फैली हुई घुंघुची (श्वेत गुंजा) की जड़ को उत्तर की ओर मुँह करके उसे उखाड़ लें और उसे प्रसवकाल में गर्भिणी की कमर में बाँध देने से तुरन्त ही प्रसव हो जाता है।

३. वासक पौधे (अडूसा का पौधा) की उत्तरगामी जड़ को उखाड़कर सात धागों से लपेट लें और गर्भवती नारी की कमर में बाँध दें, तो सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

४. उत्तर दिशा में विस्तृत हुई सफेद घुंघुची के फल को गर्भिणी के केशों में बाँधने से तत्काल

ही प्रसवोत्पत्ति होती है अथवा उसी फल को पीसकर प्रसवद्वार में लेपन करने से भी प्रसव में देर नहीं लगती। सहदेई (भूमि पर फैलने वाली एक लता) की जड़ को यदि प्रसवासन्न नारी की कमर में बाँध दिया जाये, तो उसे प्रसव में कोई अवरोध नहीं होता है।

५. अपामार्ग (चिचिड़ा) की चार अंगुल जड़ को प्रसवद्वार में प्रवेश करा देने से बच्चा तत्काल ही बाहर आ जाता है।

६. लाँगली (कजिहारी) की जड़ को पानी में पीसकर प्रसवासन्न नारी की योनि तथा उसके नाभिस्थल पर लेप कर देने से कोई रुकावट नहीं होती है।

७. रवि-पुष्य के योग में अर्थात् जिस दिन पुष्य नक्षत्र रविवार को पड़े, उस दिन घुंघुची के पौधे की दो जड़ को लाकर नीले धागे में लपेट दें और उसी जड़ को एक गर्भिणी की कमर तथा दूसरी को शिर में बाँध दिया जाये, तो प्रसवकाल में उसे कोई असुविधा नहीं होती है।

८. मातुलुंग की जड़ तथा मुलेठी को एक साथ चूर्ण बनाकर यदि उसे घी और शहद के साथ गर्भवती स्त्री सेवन करे तो उसे प्रसव में अत्यन्त सुविधा मिलती है। अथवा मातुलुंग की

जड़ का काढ़ा बनाकर उसमें शहद तथा घी मिलाकर पीने से भी प्रसव में सहायता मिलती है। क्वाथ निर्माण के लिये मातुलुंग की केवल जड़ ही ग्रहण करे।

९. दशमूल को पकाकर उसमें यदि घी और सेंधा नमक मिलाकर पान करे तो भी प्रसव में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती और सुगमतापूर्वक प्रसव-क्रिया सम्पन्न हो जाती है।

१०. 'ॐ मन्मथवाहिनी लम्बोदरं मुञ्च मुञ्च स्वाहा' - मन्त्र बोलकर यदि गर्भवती गरम जल का पान करे तो भी उसे प्रसव में कठिनाई नहीं होती है।

११. 'अं ॐ हां नममित्रमूर्तये' - मन्त्र का जप यदि सूतिकागृह में बैठकर किया जाये, तो निश्चय ही गर्भिणी तत्काल प्रसव में सक्षम हो जाती है।

बलवर्धक योग

त्रैलोक्यविजयापत्र (भाँग की पत्ती) तथा सिद्ध बीज- इन दोनों को घी में पहले भून लें। तत्पश्चात् उसमें त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च एवं छोटी पीपर), त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), कुष्ठ (कूठ), भृंगराज (भँगरैया), सेंधा नमक, धनिया, शठी, तालाशपत्र, कट्‌पुल, नागकेसर, जीरा, अजमोदा, मेथी, यमानी, तेजपात तथा यष्टिमधु (मुलेठी) इन सभी चीजों को समान भाग में लेकर उसमें उसी भाग के बराबर

शक्कर मिला दें।

अब इस एकत्रित चूर्ण में घी और शहद मिला दें। तदनन्तर इसमें से ९-१० माशे का लड्डू बना लें। तत्पश्चात् घी में भुना हुआ तिल (काली तिल) का चूर्ण उस मोदक में मिश्रित कर दें। इसके बाद उसमें दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात का चूर्ण कपूर के साथ समस्त लड्डुओं में मिलाकर उन्हें सुगन्धित कर लें। इन मोदकों को अब किसी घृतपात्र (जिस पात्र की पेंदी में घी लगा हो) में रख छोड़ें। इन्ही लड्डुओं को मदनमोहक कहते हैं। इन मोदकों में से प्रतिदिन प्रातःकाल एक-एक लड्डू सेवन करना चाहिये। इस मोदक की गुणवत्ता अवर्णनीय है। इनके सेवन से वायु तथा कफ के रोगों का शमन होता है। इससे अग्निमांद्य (भूख की कमी) का निवारण होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है। क्षीणकाय मनुष्यों के शरीरांग हृष्ट-पुष्ट हो उठते हैं, रुखे चमड़ों पर चिकनाहट झलकने लगती है। इससे खंसी, शूल, आमवात् तथा संग्रहणी रोगों का नाश होता है। इस मोदक के नियमित सेवन करते रहने से वृद्ध व्यक्ति भी तरुणावस्था को प्राप्त कर लेता है। भगवान् वासुदेव और सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जैसे प्रमुख देवों ने भी इसका प्रयोग कर इसके गुणों के प्रचार हेतु इसे देवर्षि नारद को मानव कल्याण के निमित्त बतलाया था। इसे सुनकर नारद

ने इसका विश्वव्यापी प्रचार किया।

नींद लाना

१. सुपारी के कुछ अंश को खाकर शेष बचे भाग को रास्ते में कहीं पर एक गड्ढा खोदकर उसमें डालकर ऊपर से जल का छिड़काव कर दें। उस जलसिंचित भू-भाग से किसी के गमन करने पर उस व्यक्ति को नींद आने लगती है।

२. नीलकमल, काली मिर्च तथा नागकेसर की जड़ को एक साथ पीसकर नेत्रों मे अंजन लगाने से वह मनुष्य निद्रा के वशीभूत हो जाता है। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं करना चाहिये।

३. काकजंघा अथवा काकमाची (मकोय का पौधा) की जड़ को मस्तक पर धारण करने से उस व्यक्ति को शीघ्र नींद आने लगती है।

सौभाग्यशाली विधान

१. चन्द्रग्रहण के समय लाल मदार वृक्ष की जड़ को उखाड़कर पीस डालें और मधु के साथ मिश्रित कर उसकी वटी बना लें। उस वटी को पानी के साथ घिसकर मस्तक पर तिलक लगाने से महिलाओं का सौभाग्य बढ़ता है।

२. गोरोचन तथा कुंकुम को एक में मिलाकर भोजपत्र पर जिस किसी भी मनुष्य का नाम लिखकर

यदि उसे शहद में दबा दिया जाये, तो तुरन्त ही उस नामित व्यक्ति का सौभाग्यवर्धन होता है।

३. गोरोचन, कुंकुम तथा अलक्तक (आलता जो स्त्रियों के पैर रंगने के काम आता है, महावर) को साथ मिलाकर भोजपत्र पर जिस नारी का नाम लिखकर उसे मधु में डुबो दिया जाये, तो वह नारी महान सौभाग्यवती बन जाती है।

४. कुंकुम और महावर मिलाकर जिस नारी का नाम लिखकर मधु में रख छोड़ा जाये, तो वह नारी सात दिनों के अन्दर ही अपने सौभाग्य को प्राप्त कर लेती है।

शरीरांजन विधि

विलास–परायणजनों के लिए चाहे वह नर हो अथवा नारी, अपने शरीर में अंगराज लेपन करना परमावश्यक हो जाता है। यहाँ विलास–परायण लोगों के लिये कुछ गंधविधान के प्रयोग बतलाये जा रहे हैं–

१. कदम्ब मूल का पत्ता, लोध्र तथा अर्जुन वृक्ष का पुष्प। इन तीनों को एक साथ पीसकर उसका लेप शरीर पर करने से शारीरिक दुर्गन्धता दूर हो जाती है।

२. अनार के पेड़ की छाल, लोध्र, कमल–पुष्प तथा

नीम की पत्ती को मधु के साथ मिलाकर शरीर पर उबटन की तरह लेप करने से शरीर की दुर्गन्ध का निवारण होता है।

३. चन्दन, तेजपत्र, बला (इसके दो भेद हैं- बला तथा अतिबला), खस की जड़, अगरु, बेर के बीज एवं नागकेसर को एक साथ पीसकर शरीर पर उबटन की भाँति मलने से अंग की दुर्गन्ध का नाश निश्चित रूप से होता है।

४. सप्तवर्णी की छाल, लोध्र, नीम की पत्ती तथा हरड़(हरीतकी) को एक साथ मिलाकर पीस डालें। इस पीसे हुए लेप का शरीर पर मर्दन करने से देह से निकलने वाली दुर्गन्ध तुरन्त ही दूर हो जाती है।

मुख का सुवासीकरण

१. पिप्पली का चूर्ण, मधु और घृत- इन तीनों को एक में सम्मिलित कर प्रतिदिन प्रातःकाल भक्षण करने से मुख सुवासित हो जाता है।

२. मुरामांसी (जटामांसी), वच, कुष्ठ (कूठ) तथा नागकेसर का चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को नित्यप्रति प्रातः एवं सायं मुख में रखकर जो नारियाँ चूसती हैं, उनका मुख कर्पूर के समान सुगंधित हो जाता है।

३. आम की गुठली तथा कलम की जड़ को एक

साथ पीसकर उसमें मधु मिला दें और उसकी गोली बना लें। इस गोली को मुख में रखकर चूसने से मुख सुगन्धित हो उठता है।

मुखव्रणनाशक विधि

तिल और सफेद सरसों को एक साथ दूध में पीकर मुख पर मर्दन करने से मुख पर निकलने वाले मुहाँसे आदि सभी प्रकार के व्रण शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

केश को काला बनाने वाले योग

श्वेत बालों को काला बनाने के लिए उन्हे रंगने की क्रिया को केशकृष्णीकरण कहते हैं, क्योंकि श्वेत केशों वाला व्यक्ति समस्त भूषणों से भूषित होने पर भी सौन्दर्य को प्राप्त नहीं होता है।

१. त्रिफला (हरड़, बहेंड़ा तथा आँवला), लोहे के बुरादा (चूरा), गन्ने का रस तथा भंगरैया नामक पौधे का रस। इन चारों पदार्थो को बराबर की मात्रा में ग्रहण करे। तदन्तर इन सब वस्तुओं की परिमाण से आधी काली मिट्टी ले लेवें। अब इन सब चीजों को किसी पात्र में भरकर एक महीने तक रख छोड़ें। फिर उसे पात्र से निकालकर केशों पर लेप की तरह लगायें। इस लेप को चार महीने तक लगाते रहने के पश्चात् केश काले हो जाते हैं तथा उनकी श्वेता

रुक जाती है।

२. लोहे की मैल, अड़हुल का फूल एवं आँवला को समान भाग में लेकर तेल की सहायता से पीस लें। इस लेप को तीन दिनों तक लगातार बालों में लगाने से वे तीन मास में निश्चित रूप से कृष्णवर्ण के हो जाते हैं।

जूँ नाशक प्रयोग

विडंग (भाभीरंग, वायडिंग), गंधक तथा गोमूत्र को एक साथ मिलाकर सरसों के तेल में पकाये। इस तेल का लेप यदि केशों में किया जाये, तो बालों के जूँ, लिक्षा (लीख, केशों में रहने वाले अत्यन्त सूक्ष्म जीव) आदि का विनाश हो जाता है।

इन्द्रलुप्तनाशक प्रयोग

सिर के बालों का झड़ना या सिर के बालों का न उगना ही इन्द्रलुप्त कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे एक प्रकार का रोग माना गया है इसके लिए निम्नलिखित उपायों को काम में लाना चाहिये-

१. अड़हुल के फूल को काली गाय के मूत्र में पीसकर बालों पर लेप लगाने से केश की जड़ें मजबूत होती हैं तथा यह लेप बालों को गिरने से बचाती हैं।

२. कुंकुम और काली मिर्च को समान मात्रा में लेकर सरसों के तेल में डालकर पका लें। तदन्तर उसमें बिम्बपुष्प (कुंदरू का फूल) रस मिलाकर सिर में मालिश करें तो कुछ ही दिनों में सिर पर बाल उग आते हैं और सिर का गंजापन दूर हो जाता है।

३. जातीपुष्प (जायफल का फूल) तथा उसकी जड़ को लेकर उसके दुगुने परिमाण में पिप्पली (छोटी पीपर) मिला लें। फिर इन चीजों को काली गाय के मूत्र में पीसकर एक सप्ताह अथवा दो सप्ताह तक सिर पर लेप लगाये तो इन्द्रलुप्त रोग का अवश्य ही नाश हो जायेगा।

देहरंजन

१. हरड़, लौध, नीम की पत्ती, सप्तवर्णी (सनौता) और अनार का छिलका। इन सब वस्तुओं को पीसकर लेपन करने से शारीरिक दुर्गन्ध का निवारण होता है। इस प्रयोग को विद्वानों ने दुर्गन्धि दूर करने के लिए अनेक शास्त्रों में कहा हैं।

२. हरड़, नारियल की जड़, नागरमोथ, चिंचाफल, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा तथा आँवला), तथा पुतिकरंज के बीज। इनको जल में पीसकर लेप लगाने से ग्रीष्म ऋतु में होने वाली काँख की भीषण

दुर्गन्ध का निवारण होता है।

३. हरीतकी (हरड़), रक्त चन्दन, नागरमोथा, नागकेशर, उशीर (खस), लोध, कूठ तथा हल्दी। इनको समान भाग में लेकर जल में पीस डालें। पुनः उसे शरीर पर उबटन की भाँति लगाने से पसीने की दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है।

४. कदम्ब के पत्ते, लोध तथा अर्जुन वृक्ष के पुष्प को पीसकर लेपन करने से शारीरिक दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

५. श्वेत चन्दन, खस, करंज वृक्ष के पत्ते, कोल, बहेढ़े की मींगी, अगरु तथा नागकेशर। इन सब पदार्थो को पीसकर शरीर पर उबटन लगाने से दीर्घकाल की दुर्गन्धता भी नष्ट हो जाती है।

६. अनार की छाल, लोध, कमल और मधु। इन्हें समान परिमाण में ग्रहण कर लें। तदनन्तर इसमें नीम की पत्तियों को मिलाकर शरीर पर लगायें तो गरमी के दिनों में युवती, नारी को होने वाले पसीने की दुर्गन्ध नहीं रह जाती।

७. केशर, खस लोध, और शिरीष। इनका चूर्ण बनाकर शरीर पर मलने से गरमी के दिनों में होने वाले पसीने की मात्रा में कमी आती है। ऐसा कथन भोजराज ने किया है।

८. काला तिल, सरसों, दोनों हल्दी, (हल्दी एवं

दारुहल्दी), दूब, गोरोचन, कुष्ठ (कूठ) इन सब वस्तुओं को बकरे के मूत्र में पीसकर शरीर पर लेपन करने के परिणाम स्वरूप शारीरिक सौन्दर्य का अभिवर्धन होता है।

९. हरड़ और नागरमोथा को समान परिमाण में लेकर उसमें चतुर्थांश भाग में वनरुह मिलायें। तदनन्तर इन सबके अर्धभाग में तालमखाना मिलाकर लेपन करें तो जननेन्द्रियों की दुर्गन्ध भी नष्ट हो जाती है।

१०. इलायची, कपूर, पत्रक, चन्दन, नागरमोथा, हरें, सैंजना, कपूर और कूठ। इन्हें शरीर पर लगाने से समस्त प्रकार की दुर्गन्ध चली जाती है।

११. धतूरा, केशर, नागरमोथा, नेत्रवाला (बालछड़), लोह, कपूर तथा खस। इन सब पदार्थों को समान भाग में पीसकर शरीर पर लेपित करने से प्रियकारिता उत्पन्न होती है। पूर्व विद्वानों का कथन है कि यह योग मनुष्यों के सहित देवताओं को भी प्रिय है।

१२. उशीर (खस), काला अगरु, चन्दन, तेजपात और नेत्रवाला। इन सब वस्तुओं को समान भाग में पीसकर लेपन करने पर विलासिनी रमणियों के शरीरांग से चन्दन जैसी सुगन्ध निकलने लगती है।

मुखरञ्जन

१. आम और जामुन की गुठली तथा काकड़सिंघी को मधु में मिलाकर रात्रि के समय मुख में धारण करने से दुर्गन्धि का नाश होकर मुख सुवासित हो उठता है।

२. गुड़, दालचीनी, इलायची, नख (गंधद्रव्य विशेष), जायफल तथा नागकेशर के साथ सोने का वर्क मिलाकर छोटी गोली बनाकर ताम्बूल के साथ रात्रि में खाने से मनुष्यों का मुख सुगन्धित हो जाता है।

३. जटामांसी, केशर और कूट। इन तीनों का चूर्ण बनाकर जो नारी प्रातः-सायं पन्द्रह दिनों तक चाट लेती है, उसका मुख कपूर जैसा महकीला हो उठता है।

४. तालमखाने और कूठ के चूर्ण को घी तथा शहद में मिलाकर जो व्यक्ति एक माह तक निरन्तर भक्षण कर लेता है तो उसका मुख केतकी पुष्प के समान सुगन्धित हो जाता है।

५. गाय के मूत्र में हरड़ को पकाकर उसमें सौंफ, कूठ और पीपल को मिला दें। तत्पश्चात् उसका सेवन करे तो मुखदुर्गन्ध का विनाश होता है।

६. तिल, जायफल और सुपारी को एक साथ मिलाकर भक्षण करने के पश्चात् आधा पल (एक प्राचीन

माप) शीतल जलपान कर लेने से मुख की दुर्गन्ध का निवारण होता है।

७. घी के साथ कांजी मिलाकर कुल्ला करें। कुल्ला करने के प्रारम्भ और मध्य में कपूर का भक्षण करें तो मुख की दुर्गन्धता विनष्ट हो जाती है।

८. गोमूत्र में कूठ, सुगन्धवाला तथा हरड़ मिलाकर काढ़ा बना लें। पुनः सभी वस्तुओं को पीसकर वटी बनाकर मुख में धारण करने से मुख की दुर्गन्धि समाप्त हो जाती है।

९. कड़ुए, तिक्त या कसैली वस्तुओं के क्वाथ से कुल्ला करने, प्रतिदिन दातुन करने अथवा कुष्ठ (कूठ) का चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटने से मुख की दुर्गन्धि का नाश होता है। इसमें आश्चर्य की कोई गुंजाइश नहीं है।

१०. स्त्री-पुरुषों की यौवनावस्था में उत्पन्न मुख की दुर्गन्ध के निमित्त सेंधा नमक, सरसों, सारिवन (शालपर्णी) और दालचीनी का चूर्ण लेपित करने से दुर्गन्ध का नाश होता है।

११. कपूर और सरिवन को मसूर के साथ पीसकर जो स्त्रियाँ बार-बार अपने मुख पर पन्द्रह दिनों तक लेप लगाती हैं, उनके कील, मुँहासे (तरुणावस्था में मुख पर निकलने वाली फुंसियाँ) आदि नष्ट हो जाते हैं।

१२. शाल्मलि (सेमल) वृक्ष के काँटों को दूध में पीसकर आठ दिनों तक मुख पर मलने से स्त्री-पुरुष के छाई, मुँहासे आदि रोग तीन दिनों में ही नष्ट हो जाते हैं।

१३. धनिया, वच (कुलंजन), सारिवन; इन्हें बराबर की मात्रा में पीसकर मुख पर लगाने से निःसंदेह ही मुख के कील, मुँहासे आदि दूर हो जाते हैं।

१४. सरसों और तिल को जवाखार के साथ पीसकर लेप लगाने से मुख पर निकले हुए फुँसी-फोड़े और मुँहासे आदि दूर भाग जाते हैं। ऐसा कथन रन्तिदेव ने किया है।

१५. दोनों प्रकार की हल्दी, (हल्दी एवं दारुहल्दी), गेरू, सोनापाठा, केला, नेत्रवाला, एवं इन्द्रजौ। इन्हें मुख पर तीन बार लगाने से फुंसियाँ नष्ट होती है तथा मुखमण्डल चन्द्रवत् स्वच्छ हो जाता है।

१६. काली मिर्च और गोरोचन को पीसकर मुख पर लेप लगाने से युवावस्था में मुँहासे निर्मूल हो जाते हैं।

१७. अर्जुन वृक्ष की छाल तथा मंजीठ का महीन चूर्ण बनाकर शहद के साथ तीन दिनों तक मुख पर लेप लगाने से व्यंग रोग (एक प्रकार का

चर्मरोग जिसमें त्वचा के ऊपर नीले दाग पड़ जाते हैं) दूर होकर मुख की कान्ति चन्द्रमा के समान हो जाती है।

१८. बिजौर का मूल, घृत, मैनसिल तथा गाय के गोबर का रस। इन्हें एक साथ मिलाकर मुख पर लगाने से पिडिका तिल आदि नष्ट होंगे तथा मुख पर चमक आती है।

१९. लाल चन्दन, मंजीठ, कूठ, लोध्र, प्रियंगु, वटवृक्ष के अंकुर तथा मसूर। इनको पीसकर मुख पर लगाने से मुख की नीलिका, मसूरिकादि में लाभ होता है इससे मुख का क्रान्तिवर्धन भी होता है।

२०. मंजीठ, मुलेठी लाल (लाह), बिजौर की जड़। इन्हें एक वर्ष परिमाण में लेकर एक कुडव (एक प्राचीन तैल) तैल में पाचित कर लें। पुनः उन सबसे दुगुना बकरी का दूध मिलाकर मंद आँच पर पका लें।

२१. उक्त लेप को मुख पर लगाने से मुख की नीलिका, पिडिकायें, मुँहासे, कील, चेहरे का रूखापन आदि समस्त प्रकार के विकार दूर हो जाया करते हैं। इसका प्रयोग निरन्तर सात दिनों तक करते रहने से मुखमण्डल स्वर्ण के समान चमकीला हो उठता है। इस प्रयोग के

निमित्त शहद की मात्रा दो कर्ष की होनी चाहिये।

२२. मैनसिल, लोध, दोनों हल्दी, (हरिद्रा एवं दारुहरिद्रा) तथा सरसों- इन सब चीजों को बराबर परिमाण में लेकर पीस डालें और मुख पर उबटन की भाँति लगायें तो मुख का साँवलापन दूर होता है।

२३. लाल चन्दन तथा दोनों प्रकार की हल्दी को भैंस के दूध में पीसकर मुख पर मलने से मुख की छाई, श्यामलतादि का निवारण होता है।

२४. दोनों प्रकार की हल्दी, मंजीठ, गोघृत, पीली सरसों और गेरू। इनको पीसकर बकरी के दूध में पका डालें। इसे मुखपर लगाने से सूर्य के समान चमक आती है। वच, लोध, खस, घी, राल, दूध और बरगद के पीले पत्ते, इन्हें हल्दी के साथ पीसकर मुख पर लेपन करने से मुख कमलवत् दिखलाई पड़ने लगता है।

२५. मसूर के दानों को शहद के साथ पीसकर सात रात्रि तक प्रयोग करने पर मुख कमल के समान सुन्दर हो जाता है।

केशरंजन

१. श्वेत केश वाले व्यक्ति को माला, गंध, धूप, वस्त्र तथा भूषणादि पदार्थ सुन्दर नहीं दिखते।

अतः केशों की सुरक्षा के प्रयोग अवश्य ही अपनायें, जिससे वे अंजन और भौरें के समान काले दिखलाई पड़े।

२. आम की गुठली से निकला हुआ तैल, कांतपाषाण का चूर्ण, काकदनी (कौआंडोड़ी) का फल तथा लौहचूर्ण। इन सब वस्तुओं का चूर्ण बना लें।

तत्पश्चात् उक्त चूर्ण को धान्य की ढेरी या अंकोल के तैल में एक महीने तक रख छोड़ें। तदुपरान्त उस तैल को तीन दिनों तक बालों में लगाने से श्वेत केश काले हो जाते हैं। इन प्रयोग के द्वारा छह मास तक केश भौरें के सदृश काले ही बने रहते हैं।

३. त्रिफला (हरड़, बहेड़ा तथा आँवला), लोहचूर्ण (लोहे का बुरादा), नील के पत्ते, भंगरैया की जड़ उपर्युक्त वस्तुओं का चूर्ण एक दिन तक बकरी के मूत्र में भिगोकर बालों में लगाने से केश भ्रमर के समान काले बन जाते हैं।

४. घुँघुची के बीजों का चूर्ण, कूठ, एला एवं देवदारु। इन्हें समान भाग में लेकर चूर्णित कर लें तथा एक दिन तक भाँगरे के रस में भिगों दें। अब इस चूर्ण को चौगुना तैल डालकर उसे धीमी आग पर पका लें। पक जाने पर छानकर बालों में लगायें तो केश भ्रमरवत् काले

बन जाते हैं। हाथी दाँत जलाकर उसके बराबर रस लेकर बकरी के दूध में पीसकर बालों में लगाने से बाल काले होते हैं।

५. त्रिफला, लोहे का बुरादा, गन्ने का रस तथा भंगरैया नामक पौधे का रस। इन सबके परिमाण से आधी काली मिट्टी डालकर उसे किसी पात्र में भरकर एक महीने तक रख छोड़ें। फिर उसे पात्र से निकालकर केशों पर लगाने से बाल चार महीने तक लगातार काले ही बने रह जाते है।

६. लोहकिट्ठ (लोह की मैल), जपापुष्प (गुड़हुल का फूल) एवं आँवला को समान भाग में लेकर पीस डालें। इस लेप को तीन दिनों तक लगातार बालों में लगा लेने से वे एक महीने तक केश काले ही बन रह जाते हैं।

७. भाँगरे का रस एक सेर तथा इसके बराबर ही काला तिल लेवें। अब इसमें तैलयुक्त नीलों का रस डालकर एक प्रहर (३ घण्टा) तक लिप्त करें। इसे तीन दिनों तक लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

८. सज्जीखार, जवाखार, सरसों, कांजी तथा नागकेशर। इन सबको पीसकर बालों में लेप करने से बाल कृष्णवर्णीय हो जाते हैं।

९. काकमाची (मकोय) के बीज, इसी के बराबर काला तिल- इनको मशीन में डालकर तैल निकालें और बालों में लगायें तो बाल काले बन जाते हैं।

१०. गाय का घी, भँगरे का रस और मयूरशिखा। इन्हें मन्द आँच पर पकाकर बालों में लगाने से बाल काले हो जाते हैं। बालों को काला बनाने की यह उत्तम विधि है।

११. काकमाची (मकोय नामक पौधा) के बीजों के बराबर काला तिल ले लें। अब उसमें एक सेर शहद एवं जपापुष्प (गुड़हल) का रस मिलाकर सात दिनों तक केशों में लगायें तो बाल काले बनते हैं।

१२. त्रिफला और लोहे का चूरा समान भाग में लेकर जल में पीस डालें। अब इन दोनों के बराबर भाँगरे का रस और तिल मिलाकर मन्द आग पर पाचित कर लें। जब रस जलकर केवल तैलमात्र शेष रह जाये, तो उसे किसी चिकने पात्र में भरकर भूमि के अन्दर एक माह तक स्थापित कर दें। एक मास व्यतीत होने के पश्चात् उसे निकालकर केले के पत्ते पर चुपड़कर केशों में सात दिनों तक मालिश करें। इसके साथ ही वायु रहित स्थान में दुग्धाहार लें और त्रिफले के जल से केशों को धो डालें। इस

प्रयोग को सात दिन करने से सदैव ही काले केश उत्पन्न होते रहते हैं और उसी अवस्था में निरन्तर बने रहते हैं।

१३. वायविडंग (भाभीरंग) को छह महीने तक कीचड़ के अन्दर रख छोड़ें। तत्पश्चात् उसे निकालकर एक कर्ष चूर्ण तैयार कर लें। इसे सफेद बालों में लगाने से वे भ्रमर के सदृश काले बनकर आजन्म उसी अवस्था में विद्यमान रहते हैं। यह कपालरंजन योग के नाम से जाना जाता है।

१४. नील की जड़, सेंधा नमक, पिप्पली (छोटी पीपर) तथा घृत। इनको एकत्रित पीसकर शिर पर लेप लगाने से श्वेत केश क्रमशः कृष्णवर्ण में परिणित हो जाते हैं।

१५. पुष्पसहित आम के फूल, पिण्डार, धाय के घृत तथा नील। इन सब वस्तुओं को एक सेर तिलतैल में पाचित कर लें।

इसे पकाते समय राजहंस पक्षी के बाल डालकर उसका परीक्षण कर लेवें। यदि बाल डालने पर वे काले रंग के हो जायें तो उन्हें परिपक्व समझकर उपयोग करें। इसे भूतल पर नीलतेल के नाम से जाना जाता है। इसे केशों में तीन दिन लगाने पर बाल भौरें के समान काले बन जाते हैं। यह प्रयोग भलीभँति परीक्षित तथा अद्भुत

है।

१६. शतावरी, काला तिल, गोरोचन और काकमुखा। इनको पीसकर सफेद बालों पर लेपित करने से वे काले रंग के हो जाते हैं।

१७. नवमल्लिका नामक पुष्प का रस तिल तैल में मिलाकर बालों में लगाने से केशों की असामयिक सफेदी दूर हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त केशों के अन्य रोगों में भी यह लाभप्रद हैं

१८. मोथा, सरसों, खस, हरड़ और आँवला। इनका काढ़ा बनाकर केशों के मूल में लगाने से मेघ सदृश बाल काले हो जाते हैं।

स्नान द्रव्य

१. छोटी इलायची, मोथा, उशीर (खस), नखी (सुगन्ध पदार्थ), आम, नागकेशर, शेफलिका (पुष्प विशेष), तेजपात और ढाक (पलाश) इनका चूर्ण केशों में लगाकर नहाने से सुगन्धि आती है और कान्ति बढ़ती है।

२. हरड़ का छिलका, आँवला, मेढ़ासींगी, मोथे का रस, कूठ तथा जटामांसी को पीसकर लेप करने के पश्चात् स्नान करने से सुगन्धि मिलती है।

जूँ आदि नाशक योग

१. वायविडंग (भाभीरंग) गंधक तथा कमल को गोमूत्र

के साथ मिलाकर सरसों के तैल में पका लें। यदि इस तैल का लेप केशों में किया जाये, तो बालों के जूँ, लिक्षा (केशों में रहने वाले एक प्रकार के अत्यन्त सूक्ष्म कीट जिसे लीख कहा जाता है) आदि का विनाश हो जाता है।

२. सरिवन (शालपर्णी) की जड़ को गोमूत्र में पीसकर बालों में लेप लगाने से लीखों का निवारण होता है। काले धतूरे के रस में एक निष्क (एक प्राचीन तैल जो १०८ रत्ती की मानी जाती थी) पारद को घोंट लें। तत्पश्चात् उसे पान के रस में मिश्रित कर किसी वस्त्र पर लगा दें। अब उस वस्त्र को तीन प्रहर (९ घण्टा) तक शिर पर लपेट रखें तो केशों में रहने वाली समस्त लीखें नष्ट हो जाती है। इसमें किसी प्रकार के सन्देह की आवश्यकता नहीं रह जाती।

३. दोनो प्रकार की हल्दी का चूर्ण मक्खन के साथ मिलाकर शिर पर लगाने से शिर की खुजली आदि का विनाश होता है।

४. नीलकमल, काला तिल, मुलेठी, सरसों और नागकेशर को आँवले के साथ पीसकर केशों में लेपन करने से लिक्षा का नाश होता है।

५. हल्दी, गंधक, वायविडंग, गोमूत्र, सरसों का तेल - इन्हें पारे के साथ लेप करने से बालों में

से लीखों का अन्त हो जाता है।

६. लाख (लाक्षा द्रव्य), भिलावाँ, नागरमोथा, कूठ, गुग्गुलु, सरसों और वायडिंग इनका एक साथ लेप लगाने से लीखों का निवारण होता है। गोमूत्र में बेल की जड़ को पीसकर लेपन करने से लीखों का विनाश हो जाता है।

इन्द्रलुप्त के विशिष्ट प्रयोग

शिर के बालों का टूट-टूटकर गिरना या उन पर बालों का पुनः न उगना ही इन्द्रलुप्त कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे एक प्रकार का रोग माना गया है, जिसके फलस्वरूप मानव गंजा शिर वाला हो जाता है। इसके लिए अग्रलिखित प्रयोगों को अपनाना चाहिये। इन प्रयोगों के द्वारा इन्द्रलुप्त का निवारण होकर नये बालों की उत्पत्ति होती है।

१. हाथी दाँत की राख के बराबर रसौत लेकर बकरी के दूध में पीसकर लेपित करे तो इन्द्रलुप्त का नाश हो जाता है इसके प्रयोग के परिणाम स्वरूप हाथों की हथेली में भी बाल उग सकते हैं तो अन्य स्थानों की बात ही क्या है!

२. कुंकुम और काली मिर्च अथवा जम्बीरी के बीजों का रस। इन्हें तैल में मिलाकर लेपन करने से शीर्घ ही इन्द्रलुप्त नष्ट हो जाता है।

३. हाथी का जला हुआ दाँत, बकरी का दूध तथा रसौत को पीसकर लगाना भी इन्द्रलुप्त का विनाशक होता है।

४. चमेली का फूल, दल तथा उसका मूल। इन्हें कृष्णवर्णा गाय के मूत्र में पीसकर लेप लगाने पर सात दिनों में केशों का दृढ़ीकरण हो जाता है।

५. सिंघाड़ा, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), भँगरा, नीलकमल तथा लोहे का चूरा। इन सबके परिमाण से चौगुना तिल तैल डालकर आग पर पका लें। इनके लेप से केशों में कुटिलता एवं सरलता आती है।

६. यदि बालों को कीट द्वारा खा लिया गया हो तो उस कीटभक्षित स्थान में स्वर्ण से घर्षण करे। जब तक वह पूर्ण रूप से तप्त न हो जाये, तब तक बराबर उस पर लेप लगाते रहना चाहिये।

७. भिलावाँ, कटेरी (कंटकारी), चौंटली की जड़ और उसका फल। इन्हें मधु के साथ पीसकर लेपन करने से इन्द्रलुप्त का विनाश होता है।

८. भल्लातक (भिलावाँ), काला तिल तथा कटेरी का फल। इन्हें समान परिमाण में लेकर चावल के धोवन के साथ पीसकर लेप लगाने पर इन्द्रलुप्त

रोग दूर होता है।

९. जपापुष्प (गुड़हल) को काली गाय के मूत्र में पोषण कर उसका लेप लगाने पर इन्द्रलुप्त नहीं रह जाता है।

१०. तिल, पुष्प, गोखरू और नमक। इन्हें गोघृत में मिलाकर लेपित करने से बाल लम्बे और सघन होते हैं।

११. शाल्मलि (सेमल वृक्ष), तालमूली तथा कमल की जड़। इन तीनों की जड़ को बकरी के दुग्ध में पीसकर लेपन करने से मुड़ाये हुए शिर में भी तेजी से बाल आने लग जाते हैं। इसका लेप तीन दिनों तक बराबर लगाना अनिवार्य होता है।

वाजीकरण

सशक्त पुरुष के द्वारा ही नारी की संतुष्टि सम्भव होती है, अशक्त या निर्वीर्य व्यक्ति से नारी की तुष्टि कदापि सम्भव नहीं हो सकती। अतः यहाँ विलासीजनों के निमित्त वाजीकरण के प्रयोग लिखे जा रहे हैं।

१. वटवृक्ष के बाँदा को अश्विनी नक्षत्र में दूध के साथ पान करने से बलोत्पत्ति होती है। सफेद मदार की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उत्पाटित कर दूध के साथ सप्ताह भर पी लेने पर वृद्ध

मनुष्य भी यौवनावस्था को प्राप्त कर लेता है।

२. बिदारीकन्द के चूर्ण को उसी के स्वरस में भिगोकर धूप में सुखा लें। सूखने के पश्चात् उसमें घी और मधु मिलाकर रात्रि में सेवन करने वाला निर्भीकतापूर्वक दश स्त्रियों को तृप्ति प्रदान कर सकता है। (किसी भी औषधि के साथ घी और शहद की मात्रा बराबर नहीं होनी चाहिये। बराबर की मात्रा में ये दोनों विषतुल्य हो जाते हैं।)

३. आँवले के स्वरस में ही आँवले को भिगों दें। पुनः उसमें घी, मिश्री तथा शहद मिलाकर रात्रि में सेवन करें तो बूढ़ा व्यक्ति भी युवा के सदृश हो जाता है।

४. एक कर्ष परिमाण में मुलेठी का चूर्ण लेकर उसमें घी और शहद मिलाकर चाटें। तदनन्तर दुग्धपान कर लेने पर रति क्षमता में वृद्धि होती है। अर्थात् जब तक पूर्णरूप से इसका पालन न हो जाये तब तक वह निरन्तर रमण करने में समर्थ बना रहता है। क्रौंच के बीज, साँठी के चावल, मुलहठी। इनका चूर्ण बनाकर घृत और मधु के साथ सेवन करें तो इनके पाचन-काल तक संशक्ति स्थायी रहती है।

५. वृद्ध सेमल की जड़ का रस शक्कर में मिलाकर

सप्ताह-पर्यन्त सेवन करने वाला व्यक्ति वीर्यशाली बन जाता है। लघु सेमल की जड़ और तालमूली। इनका चूर्ण घृत के साथ चाटने से व्यक्ति रति-क्रीड़ा में गौरैया पक्षी के समान अर्थात् बारम्बार रति करने में सक्षम हो जाता है।

६. पुनः इसी को घृत में एक मास तक डुबोकर सुखा लें। इसके अनन्तर दूध में डालकर सेवन करे तो वह सैकड़ों रमणियों के साथ संभोग करने में समर्थ हो जाता है।

७. जो मनुष्य बत्तख, लवा तथा जंगली कबूतर के पकाये माँस में घी और सेंधा नमक डालकर भक्षण कर लेता है, वह महान शक्तिशाली बन जाता है।

८. बिदारीकन्द के कल्क में घी तथा दूध मिलाकर एक तोला (१२ माशे या ९६ रत्ती) में पान करने से वृद्ध मनुष्य भी युवाओं के समान जोशीला हो जाता है।

९. बकरे के दोनों अंडकोशों को जल में उबालकर घी में भून लें। अब इसमें सेंधा नमक और पीपल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने वाला सैकड़ों स्त्रियों में रमण करने पर भी नहीं थकता।

१०. बकरे के अंडकोश को दूध में उबालकर उसी दूध मे कई बार काले तिलों को भिगोंकर छाया

में सुखा लें। सूख जाने पर उसका चूर्ण बनाकर सेवन करें तो रतिकाल में शिथिलता नहीं आती और वह सैकड़ों नारियों के साथ संभोग कर सकता है।

११. गोखरु, तालमखाना, शतावर, क्रौंच के बीज, नागबला तथा खिरैटी। इनको चूर्णित कर रात्रि में सेवन करने वाला व्यक्ति एक सौ स्त्रियों की कामपिपासा को शान्त कर सकता है।

१२. पीपल के फल, जड़, छाल और कलिका। इन्हें परिमाणनुसार दूध में उबाल लें। ठण्डा होने पर इसमें मिश्री और शहद मिलाकर पीने वाला मनुष्य संभोगकाल में कलिंग (गौरैया पक्षी) के समान सन्तुष्ट होता है।

१३. घृत के साथ शतावरी का स्वरस मिलाकर दूध में परिपक्व कर लें। पुनः उसमें मिश्री, पीपल, शतावरी का कल्क डालकर भक्षण करें तो परिपुष्टता आती है।

हैज की दुरुस्तगी के लिए

जिन औरतों को महावारी के दिनों में खून कसरत से आता है, वे इस नुस्खे को इस्तेमाल करे उनकी यह शिकायत जाती रहेगी और खून मामूल के मुताबिक आता रहेगा।

संग जराहत दो माशा, गोंठा एक माशा, मायें खूना एक माशा तीनों चीजें बराबर-बराबर वजन में लेकर सफूफ बना लें। इस सफूफ को फाँक कर ऊपर से बकरी का दूध एक पाव पी लिया करें। हैज की मुद्दत कम हो जायेगी।

हर किस्म के दर्द के लिए

आक के पेड़ के फूल और पत्ते एक सेर लेकर एक पाव रोपान तिल को इतना जलायें कि सब खाक काली हो जायेंगी फिर इसी तेल में सब घोट लें, फिर इस तेल की मालिश करके ऊपर से पुरानी रुई या कोई कपड़ा लपेट दे यानि उसे हवा से बचायें। इस तेल की मालिश से गठियाँ का दर्द भी जाता रहता है। एक हफ्ते तक मालिश करें।

इस्लामिक अमल

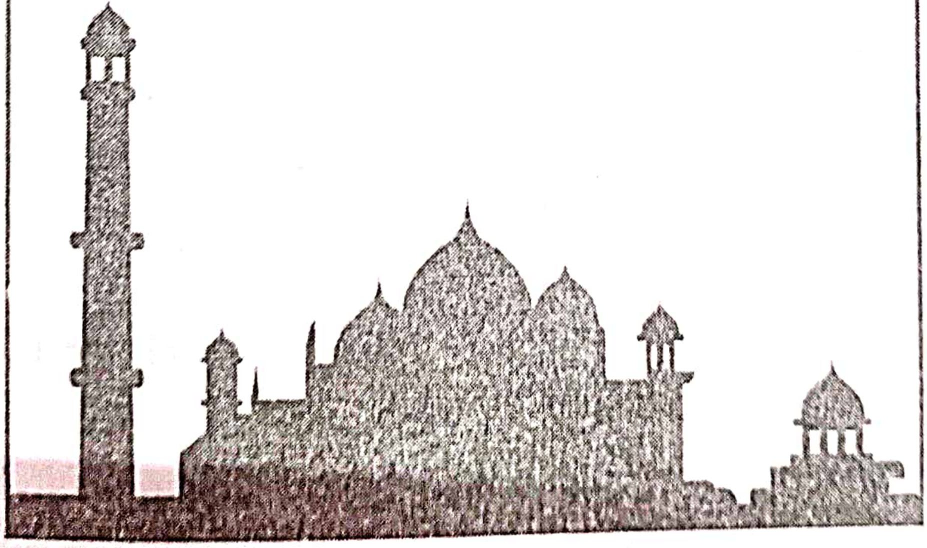

अमल पढ़ने से पूर्व आमिल की खसूसियात

अमल के सम्बन्ध में यह बता देना जरूरी है कि आमिल या प्रयोगकर्ता को अपनी योग्यता की परख कर लेना जरूरी है। यदि कोई कमी है तो उसे दूर कर लेने से दिल बेखौफ हो जाता है। इससे मकसद में कामयाबी हासिल होती है। अमलियात (प्रयोगों) के सिलसिले में उस्तादों ने अपने तजुर्बात से कुछ नियम निश्चित किये हैं, वह इस प्रकार है–

1. आमिल इस्लाम मजहब के हर नियम व उसूल का मानने वाला हो।
2. प्रयोगकर्ता नमाज और रोजे का पाबन्द हो।
3. व्याभिचार या बदकारी से दूर रहे।
4. हलाल तरीके से रोजी कमाने वाला हो।
5. झूठ बोलने से परहेज करे।
6. बदज़बानी और तमाम बुरी आदतों से तौबा करे।

दौलत कमाने के लिए

यदि कोई गरीब हो और वह यह चाहे कि मैं मालदार हो जाऊँ तो उसे साहस से काम लेना चाहिये। यह सच है कि तिजारत में लाभ-हानि इन दिनों नाममात्र ही को रह गया है लेकिन तिजारत के साथ इस वजीफे का पढ़ना शुरू कर दें, तो दिन-ब-दिन तरक्की होने लगेगी और लोग यही समझेंगे कि वह तिजारत के जरिये पैदा कर रहा है। लेकिन यह सब कुछ अमल के कारण है, उसी की बरकत से आमिल बहुत जल्द अमीर और दौलतमन्द हो जाता है। अमल यह है - 'अन्जर फी या रहीम या करीम गफूरु या सखी'

हर दिन तिजारत का काम शुरू करने से पहले ७७७ बार इस अमल को पढ़ लिया करे इसके बाद अपना काम शुरू कर दें इस अमल का कोई समय निर्धारित नहीं है जब तक इस अमल पर करबन्द रहेगा इन्शाअल्लाह अनगिनत समय तक लाभ उठायेगा और दिन ब दिन तरक्की करके दौलत जमा करेगा। यह बड़ा आसान है और इसमें असंख्य फायदे हैं।

काली बिल्ली के बालों द्वारा मुहब्बत में सफलता

काले रंग की एक बिल्ली तलाश करो कि जिसके

शरीर का एक बाल भी सफेद न हो। ऐसी बिल्ली की मूँछों के बाल काट लेना चाहिये। बालों को एक पाक रूई में लपेटकर एक बत्ती बनायें और इस फलीते को मिट्टी के चिराग में डालकर घी डाल दो। जब आप सारे कामों से निपट जायें तो आधी रात गुजरने पर चिराग का रुख अपने महबूब के मकान की ओर करके उसे रोशन कर दें और काजल हासिल करे जब तक यह चिराग जलता रहेगा उस समय तक इस मन्त्र को पढ़ो – 'काली काली महाकाली लेके आधी रात काली लावो महाकाली काली उसे मेरी मुहब्बत में दीवाना बना दें। काली उसे मेरी मुहब्बत में दीवाना बना दे।'

जब चिराग की बत्ती छोटी होने लगे तब भी पढ़ते रहें जब बत्ती तैयार हो जाये तो शीशी में महफूज रखो जब अपने महबूब के सामने जाओ तो आंखों में लगाकर जाओ वह देखते ही आशिक हो जायेगी।

सिर का दर्द दूर करने के लिए

यदि किसी के सारे या आधे सिर में दर्द हो रहा हो और दर्द के मारे वह बड़ा परेशान हो रहा हो किसी दवा से अच्छा न हो रहा हो तो ऐसी हालत में इस अमल से लाभ उठाना चाहिये।

यह वह अमल है जो इस रोग के लिये बड़ा कार आमद है। अमल का मन्त्र यह है – 'काला किलवा कलसरा कजली बन जाए उठो अहमद बाल कदो सर का दर्द दूर हो जाए।'

तरीका – शहादत की उंगली और अंगूठे से पेशानी को थामो और दूर से दोनों उंगलियों को धीरे-धीरे दबाते हुए इतना पास लाओ कि माथे के बीच आकर मिल जायें। इसी तरह सात बार करो अमल खत्म हो जाने के बाद तीन बार फूँक मार दो दर्द फौरन बन्द हो जायेगा।

लम्बे समय तक अपने महबूब को अपना कैदी बनाये रखना

जिस तरह भी सम्भव हो अपने महबूब के बाल हासिल कर लो जब बाल हासिल हो जायें तो नौचन्दी जुमेरात की रात को १२ बजे उसके सातों बालो को लाजवन्ती की शाख में बाँधकर अपने पास रखे। इसके बाद ४० दिन तक इसी पौधे को अपने सामने रखकर नीचे वाली इबारत ४० दिन तक ४० बार पढ़े। अमल यह है – "न चले दर्द सर बढ़े फूल बे ना सिंह बसे दुहाई हनुमान की और हर फूल की।"

इस मन्त्र को ४० बार पढ़ने के बाद खामोश हो जाये इस तरह इस अमल को पूरे ४० दिन में

खत्म कर दे। आपका महबूब बेकरार हो जायेगा। जब तक लाजवन्ती की शाख से आप अपने महबूब के बालों को न खोल देंगे आपकी महबूब आपसे जुदा न होगी।

मुहब्बत का अमल

नौचन्दी जुमेरात को ठीक रात के दो बजे अपने शहर की किसी शाही मस्जिद के अन्दर ऐसे कमरे में जहाँ सूरज की किरण दाखिल हों या किसी नदी के किनारे सुबह सवेरे बैठकर वुजू करे। इसके बाद मगरिब की ओर मुँह करके हकीक का पत्थर लगी तस्बीह हाजिर दाने की लो उससे अमल शुरू करने से पहले अपने महबूब व उसके माँ-बाप के नाम को १७ बार जबान को हिलाते हुऐ और दिल ही दिल में लेकर कहे – 'मैं तेरी मुहब्बत में दिवाना हूँ तू मेरी मुहब्बत में दीवाना बन जा क्योंकि मुहब्बत खुदा है (यह कहना कुफ्र है) यह कर कर तस्बीह पर दम करे और इस तस्बीह को आँखों में लगाकर बोसा दे इसके बाद अमल शुरू करे। अमल यह है–

'या अजीजु या अल्लाहु जाहिरुइल्ललल्लाहु'।

इसे २१ बार पढ़कर मेंहदी के फूलों पर दम करे। यह अमल पढ़कर २८ बार दम करे। इसके बाद फूलों को शहर में किसी कब्र पर चढ़ाये

यहाँ तक कि २२ दिन बीत जायें तो गुलाब की पत्तियों के अर्क और चमेली के फूलों की बन्द कलियों पर बुध के दिन से पाँच दिन तक हर रोज २१ बार वही अमल करे। तीन दिन के बाद कली खिल जाने के बाद गुलाब का अर्क फूलों पर छिड़क कर हार बना ले। हार बनाते समय महबूब का नाम लेते जाये। हार तैयार होने पर महबूबा के गले में डाले वह तुम्हारी मुहब्बत में बेकरार होकर तुम्हारे यहाँ चली आयेगी और फिर तुम्हारे घर से उम्र भर न जायेगी।

मुहब्बत का तिलस्म

नौचन्दी जुमेरात को जंगल में जाये और एक उल्लू पकड़ कर लाये। फिर उसकी चोटी के बाल काट ले और उन्हें असली घी मिठाई में मिलाकर महबूब को खिलायें। इससे सारी उम्र महबूब तुम्हारी सेवा में रहेगी।

बिगड़ी बात बनाने के लिये

यदि किसी व्यक्ति को कोई बात या काम बिगड़ जाये तो उसे साहस से काम लेना चाहिये। यदि साहस से काम न चले तो ऐसी सूरत में जरूरत से ज्यादा लाभ उठाना चाहिये यदि कोई जरूरी बात सर पर आ पड़ी हो तो चाहिये इस नक्श से तभी काम ले और आजमायें मामूली कामों में

इसे न आजमाना चाहिये। 'ला हवला व ला कुव्वा इल्ला बिल्लाहि०'

दुश्मनी के लिये

यदि आपकी किसी से बात बिगड़ गयी है अर्थात् दुश्मनी हो गयी हो वह भी ऐसी कि दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हों और आप बदला लेना चाहते हों। तो एक नीम्बू लें ओर सेही का काँटा ले। दोनों चीजों को ऐसे कुएँ पर ले जायें, जो शहर से बाहर हो। वहाँ जाकर अपने पाँव लटका कर बैठ जाओ साथ ही यह भी आसमान की ओर मुँह करके पढ़ते जाओ।

'दुहाई हिन्दू मत पीर की दुहाई राजा जयपाल की'।

जब कोई तारा आसमान की ओर से टूटे तो तुरन्त काँटे को नीम्बू में अपने दुश्मन का नाम लेते हुए दाखिल कर दो और फिर घर वापस आ जाओ। वापस आते समय कुएँ से आवाजे आयेंगी। आप मुड़कर न देखें वर्ना जान का खतरा रहेगा जब तक आप इस काँटे को नीम्बू से बाहर न निकालेंगे, उस समय तक आपका दुश्मन सख्त तकलीफ का शिकार रहेगा। काँटा निकालेंगे तो ठीक हो जायेगा।

हमजाद द्वारा मुहब्बत का अमल

यदि आपको किसी से मुहब्बत है और उसे अपने बस में करना चाहते हैं तो अपने हमजाद द्वारा बस में कर सकते हैं, जिसकी तरकीब यह है—

१. मकान जो पाक-साफ हो उसमें दाखिल होकर चारों ओर से दरवाजे बन्द कर लें। कमरे का सारा सामान बाहर निकाल लें। लोबान की धूनी आदि से कमरे को सुगन्धित कर लें इसके बाद कमरे के बीच में बैठकर घी डालकर एक चिराग जलायें यह चिराग सुबह तक जलता रहना चाहिये। चिराग इस तरह रखे कि आपके सर का साया सामने वाली दीवार पर पड़ता रहे।

२. आप अपने सर के साये की ओर टिकटिकी बाँधे देखते रहें और सात इलायची दाने छोटे सामने रखें और जबान से या रहमान या रहीम की तस्बीह उन दोनों पर एक हजार बार पढ़े यह अमल रोजाना जुमेरात से ही शुरू करके जुमेरात को ही खत्म होगा। अन्तिम जुमेरात के दिन आपका हमजाद दोस्त आपके सामने आ खड़ा होगा आपसे पूछेगा— 'सरकार का हुक्म।' आप पहले उससे वचन लें फिर जैसा चाहे हुक्म दें वह तुरन्त ही आपकी सेवा में हाजिर हो जायेगा। आप अपने महबूब को

इलायची दाने खिलायें वह दाने खाते ही बेकार हो जायेगा और हमेशा मुहब्बत करेगा।

बेशर्मी को दूर करने के लिए

यदि किसी की पत्नी बेशर्म हो अर्थात् उसमें लोक-लज्जा न हो और उसका पति चाहे कि उसकी पत्नी गैरतमन्द और शर्मदार बन जाये तो ऐसे लोगों के लिये यह नक्श बड़ा लाभकारी है। नक्श यह है-

'ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु
ला इलाहा इल्लल्लाहु

इस नक्श को काली स्याही से लिखें। इसका तावीज बनाकर २७ दिन तक बराबर एक हजार बार दरूद शरीफ पढ़े। इस नक्श को सुगन्धित करके ताँबे के तावीज में बन्द करके अपनी बीवी के गले में डाल दें। इन्शाअल्लाह गर्दन में तावीज पड़ते ही वह औरत शर्मदार बन जायेगी और अपने पति के अलावा किसी और तरफ न देखेगी।

खो गये रिश्तेदारों को मालूम करना

यदि तुम्हारा दोस्त गुम हो गया है और कोशिश

के बावजूद किसी तरह उसका पता न लग रहा हो तो आपको चाहिये कि इस नक्श को काम में लाये। खुदा ने चाहा तो आप अपने मकसद में कामयाब होंगे और खोये हुए लोगों का पता चल जायेगा। इस नक्श को लिखकर अपने सिरहाने रख लो और खो जाने वाले को निगाहों में लाकर इस अमल को पढ़ना शुरू कर दो।

'या हबीबु या अजीसु या अखिय्यु'

एक हजार बार इस अमल को पढ़ो एक हफ्ता लगातार पढ़ने से इन्शाअल्लाह उसी हफ्ते के दौरान आमिल का खोया हुआ सपने में नजर आयेगा और साथ ही वह स्थान भी जहाँ गुम हुआ है, आप स्वयं ही उसे जाकर ले आयें। ये नक्श बड़ा कामयाब है।

मुहब्बत के लिए

किसी न किसी तरीके से महबूब को सड़क पर ले जाओ। जहाँ पाँव के निशान अच्छी तरह बन जाये। किसी दोस्त या अपने साथी को पीछे कर देना चाहिये इस जगह उसको समझा देना चाहिये कि उसके दाँयें पाँव के निशान को काट कर उसकी खाक उठाकर घर ले जाओ और किसी कुँवारी लड़की के हाथ का काता हुआ सूत को जो ७ गज लम्बा हो और उसे मंगल के दिन

जलाकर खाक कर लो। उसकी खाक और महबूब के पाँव के नीचे की खाक दोनों को मिलाकर सात दिन तक उसकी धूप की बत्ती बनाकर बराबर धूनी देते रहो। आठवें दिन उसकी खाक की एक चुटकी अपनी महबूबा के सर पर डाल दो। खाक बालों में पड़ते ही वह आपकी मुहब्बत में दीवानी हो जायेगी।

अपने महबूब के दोनों हाथों की दसों उंगलियों के नाखून लेकर आठ दिन की अवधि तक एक डिबिया में बन्द करके मरघट में दफन कर दो। नवें दिन मरघट पर जाकर इस डिबिया पर यह पढ़ों–

'काली काली महा काली महाकाली'।

४१ दिन तक एक हजार बार रात के १२ बजे के बाद पढ़ो। जब यह अमल करने बैठो तो अपने आसपास चाक से एक दायरा भी जरूर बना लो। अमल के दौरान आपको डरावनी सूरतें नजर आयेंगी तो डरने और भयभीत होने की कोई जरुरत नहीं बल्कि निडर होकर अमल पढ़ने की जरूरत है। जब ४० दिन गुजर जायें, तो इन नाखूनों को जलाकर बहा दो, फिर देखो की वह आपके मुहब्बत में कैसे बेकरार होती है।

चूड़ियों द्वारा मुहब्बत

यदि आपको किसी से मुहब्बत है और आपको कामयाबी हासिल नहीं होती है तो आपको चाहिये कि जिस तरह भी संभव हो सके अपने महबूब के हाथों की एक चूड़ी हासिल कर लें। जब इस कोशिश में कामयाब हो जायें तो इन चूड़ियों को रात के १२ बजे दहकते हुए कोयलों पर रखकर रात के समय एक हजार एक सौ २१ बार यह पढ़ें— 'अल इश्क अल इश्क' २७ दिन तक इस अमल को बराबर पढ़ते रहो, अवधि खत्म होते ही इन दोनों चूड़ियों को रेशम के सुर्ख रंग के धागे में बाँधकर केले के पेड़ की जड़ में दफन कर दो लेकिन इस तरह करो कि कोई यह काम करते हुए न देखे और न कोई उसमें से इसे निकाले। फिर इन चूड़ियों को उस जगह से निकाल कर घर में ले आये तो महबूब फिर अपनी हालत पर आ जायेगी।

गुलाब के फूल का अमल

यदि तुम्हें गुलाब के फूल पर शब कद्र को दस हजार बार सूरःइख्लास (पारा - ३०) पढ़ें और पढ़ने के बाद फूल पर दम कर दें तो खुदा की कुदरत से उस फूल में यह असर होगा कि उस फूल की खुशबू जो एक बार सूँघेगा वह आमिल

की मुहब्बत में अवश्य गिरफ्तार हो जायेगा।

जब इस फूल की खुश्बू खत्म हो जाये तो फिर इस मुबारक रात का इन्तजार करो।

अजीबो गरीब अमल

यदि काली बिल्ली व सफेद कुत्ते की जबान काटकर इनमें सुराख करके दोनों को एक धागे में पिरो दे और फिर बुधवार के दिन इस पर सफेदा छिड़क कर किसी गाँव के धान के खेत में दफन कर दें, तो आपका दिल जिससे भी मुहब्बत करेगा, जब तक कुत्ते व बिल्ली की जबान उस खेत में दफन रहेगी, मुहब्बत खत्म न होगी।

यदि उन्हें वहाँ से निकाल कर फेंक दिया जाये तो ऐसी अवस्था में महबूब के दिल में मोहब्बत कम होती जायेगी और वह अपनी हालत पर वापस आ जायेगी। यदि दो व्यक्तियों के बीच दुश्मनी पैदा कराने का विचार हो तो दोनों जबानों के ४४ टुकड़े कर दिये जायें, फिर इन्हें एक जगह से निकालकर अलग-अलग एक-एक फीट की दूरी पर गाड़ दे, फिर तमाशा देखें। तब यह मुमकिन ही नहीं कि उन दोनों में झगड़ा न हो।

आँखों में चुम्बकीय चमक

यदि कोई हर रोज अपनी निगाह जमाने का अभ्यास शुरू कर दे तो उसकी आँखों में बहुत

जल्द चुम्बकीय चमक पैदा हो जायेगी और वह अपनी ताकत से जो भी काम लेना चाहे आसानी से ले सकेगा। उसके इशारे पर लोगों के सर झुक जायेंगे। आँखों में चुम्बकीय ताकत पैदा करने का तरीका इस प्रकार है।

हर रोज चिराग के सामने बैठकर उसकी रोशनी से अपनी पलक झपकायें बिना निगाह का मुकाबला करते रहो दूसरे दिन इससे भी अधिक बड़ी रोशनी अपने पास रखो और उसके द्वारा रोज एक मिनट एकाग्रता बढ़ाते जाओ। जब आप पूरे एक घण्टे तक अपनी पलक झपकायें बिना चिराग की ओर देखते रहने में कामयाब हो जाओगे तो समझ लो काम हो गया। शुरू-शुरू में आँखों में तकलीफ होगी बाद में वह जाती रहेगी।

इसके बाद आप अपनी आँखों से स्वयं देख लें आपको स्वयं मालूम हो जायेगा।

दोस्त बनाने के लिए

यदि आप किसी को अपना दोस्त बनाना चाहते है जो आपकी मुहब्बत में हमेशा दीवाना बना रहे तो आप यह नक्श बनाकर अपने पास रखें। नक्श यह है–

अ–०५ –७४७ – २७ हुब्ब १२०७

'फलां बिना फलां हुब्ब अला फलां बिन फलां'

तरीका - इसे लिखने की तरकीब यह है कि जुमे के दिन गुस्ल करके अच्छे कपड़े पहने और गुलाब का इत्र लगायें, फिर जुमे की नमाज अदा करके यह नक्श सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर हर समय अपने पास रखे। इन्शा अल्लाह जब आप अपने महबूब के सामने होंगे तो वह आपसे मुहब्बत की बातें करने लगेगा और आपका दोस्त बना रहेगा।

यदि रात में २१ बार मीठी चीज के ऊपर यह पढ़कर महबूब को खिला दें, तो दिल व जान से आशिक हो जाये। यदि शनिवार की रात फूल के ऊपर ५० बार पढ़कर महबूबा को सुँघा दें, तो वह बुलबुल की तरह चला आये। यदि रविवार की रात को सात दाने पीपल के दानों पर सात बार पढ़कर आग में डाले तो महबूब परवाने की तरह चला आये। यदि लौंग के ऊपर २५ बार पढ़कर दम करे और अपने महबूब को खिलाये तो वह गुलाम हो जाये।

यदि पानी पर ४० बार पढ़कर दम करे और अपना मुँह उस पानी से धोकर अपने महबूब के पास जाये तो उसे अपना आशिक बना ले। यदि सुरमें पर इसको छः बार पढ़कर दम करे और वह सुरमा आँखों में लगाकर महबूब के पास जाये तो वह देखते ही दीवाना हो जाये।

यदि मोम के ऊपर एक सौ ११ बार पढ़े और उस मोम को आग में डाले तो मोम की तरह नर्म महबूब का दिल हो जाये। यदि शक्कर या गुड़ पर सौ बार पढ़कर इस दुआ का दम करे और महबूबा को खिला दे तो उसे अपना गुलाम पायें। यदि कंघी के ऊपर एक हजार बार पढ़कर उस पर दम करे और यह कंघी महबूब अपने सर में फिराये तो तालिब का वह आशिक हो जायेगा।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्मा या
मुसख्खरनी मन फिस्समावाति वलर्जा
फलाना अल्लाहुम्मा सबत लहु
फजुल्लहुबी अल्लाहुम्मा इरहम वक बमहलती
अला अमान फी कलबी व ज-अ-लहु
अला रिजकुना मुहिब्बन अलल
महबूब छ्बा काना हब्बतन बिहक्क
या अल्लाहु या रहमान या रहीम
बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन'

जादुई अमल

मुहब्बत के लिए ४० बार मिठाई पर दम करे और मतलूब को खिला दे, वह दीवाना व गुलाम हो जायेगा।

'अजमत अलयकुम या माअ अर्वाह व साहिबुशर्रि वल वसवासिल खननास जुनूद इबलीस खातम सुलेमान बिन दाउद आलौहिस्सलाम व बिहक्क हारुत व मारुत हुवा इल्लाह जिकरुल लिल आजमीन० फलां अला हुब्ब फलां बिन फलां दाइमन अबदन।

मगर चाहिये कि पहले जकात इस तरह दें कि रविवार से शुरू करे और ११ बार लिखकर दरिया में डाले आटे में गोली बनाकर। इस तरह सात दिन तक करे यदि माशूक हजार कोस पर होगा तो हाजिर होगा।

जो किसी को आशिक बनाना चाहे तो जुम्मे के दिन इस अमल को शुरू करे ४० दिन तक ४०बार पढ़ें। पढ़ते समय महबूब का इस तरह ध्यान करें मानों वह सामने मौजूद है। यह अमल मुहब्बत के लिए काम का है। नीयत सही होना चाहिये। इन्शाअल्लाह जल्द कामयाबी होगी। गोश्त अण्डा मछली से बचे रहें।

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इालीह बिहुरमत मकीईल व जिबरील व इसराफील व तौराता मूसा व इंजील ईशा व फुरकान मुहम्मद सल्ल०

सूर इख्लास अर्थात् कुल शरीफ को ४१ बार

बिस्मिल्लाह के साथ शुरू व बाद में दरूद शरीफ पढ़कर मीठी चीज पर दम करके महबूब को खिलायें। पढ़ते समय मतलूब की कल्पना दिल में रखे। इन्शाअलह मतलूब दीवाना हो जोयगा।

जो चाहे कि फलाँ मेरा हो जाये तो सात लोहे की कीले लायें हर कील पर सूरः यासीन मुहब्बत की नीयत से पढ़ें और दम करे और कहें कि – शोखतम दिल व जान फलाँ नाम मतलूब का और बजाये बिन फलाँ के नाम उसकी माँ का ले और इन कीलों को चूल्हे में गाड़ दे ओर आग में जला दें। जब वे कीलें गर्म होंगी तो मतलूब दीवाना होकर आ जायेगा।

जो चाहे कि किसी को अपनी मुहब्बत का शिकार बनाये तो इस आयत को १४ बार जुम्मे की रात पढ़ें और मिठाई या मेवे पर पढ़ें। जो चीज मतलूब को पसन्द हो उस पर दम करके खिलाये। जो खायेगा वह आशिक हो जायेगा।

दूसरी तरकीब यह है कि हर दिन ४० बार पढ़कर दम करके खिला दे। वह आयत यह है–

'युहिब्बू नहुम कहुबिल्लाहि वल्लजीना आमनू **अशददा हुब्बल लिल्लाहि०**

जिन्न का अमल

जिन्न की तस्वीर के लिये ये आयतें बड़ी असर वाली है। इसके लिये चाहिये कि एक खाली मकान में हाजिर होकर अूद जलाये और अपने गिर्द एक रेखा खीचें और इन आयतों को सच्चे दिल से सात बार पढ़ें। इसके बाद इनको अल्लाह की सौगंध दे, जिन्न फौरन हाजिर होगा और ताबे अदारी करेगा। यह अमल हर रात लगातार करें। हर तरह का परहेज जमाली व जलाली करे और दिल मजबूत रखे और न डरे, इन्शाअल्लाह मतलब पूरा होगा।

'वयलुन वलिकुल्ली इफाकिन अलीम यसमअु आया तुल्लाहि तुतला अलैहि लहु लहुम मुशीर० काना इल्मुन मिन आयातिना शयानल हाजा हा हुजुवन लहुम यसमअुहा फबश्शिरहु बि अजाबिन अलीम ० व वा इलै हुन लहुम अजाबुन मुहीन ० मिन वराइहिम जहन्नम वला युन्सा अन्हुम मा लैसा शयअन वला सददू नहजा व मिन इनि अलैहि अवलियाई व लहुम अजाबुन अजीम०

जिन्न व आसेब को भगाना

जिस किसी को जिन्न व आसेब का असर हो या चुड़ैल व खबीस सवार हो उसके वास्ते

यह अजीमत तीन बार पढ़कर पानी के ऊपर दम करके उसे पिला दे। यदि वह न पिये तो उसके मुँह पर छींटे मारे यहाँ तक कि वह बोलेगा और जल जायेगा और यदि न मानता हो तो इस दुआ का फलीता करे और जलाये और उसके सामने रखें कि वह उसे देखे और यदि न भी देखे तो फलीता जलाकर हाथ में लेकर उसकी नाक में धूनी देवे तो यदि जिन्न या चुड़ैल का असर होगा तो वह जल जायेगा या भाग जायेगा। वह अजीमत यह है—

'अजमत अलैकुत बिरब्ब जिबरील व इसराफील व इजराईल असखनल्लजी ज-अ-लल अर्शि अजमतु अलैकुम बिल्लजी अजाई इजहब लहु ईसा बिन मरयम वस्सयदिना बिरुहिल कुदुस अजमतु अलैकुम सुलेमान बिन दाऊद अलैहि ० अल्लजी सख्खजी सख्ख-र-लहुर्रि याह वल जिननी वशैताना रुरीआ०

नोट - जिस रोगन में यह फलीता जलाया जाये, वह रोगन पाक और रोगन कड़वा हो। यदि वह जादू भी होगा तो इन्शाअल्लाह दफा होगा।

यदि किसी मर्द या बच्चे पर या औरत पर आसेब का असर हो जाये तो उसके कान में सात बार इस आयत पढ़कर छींक दें। इन्शाअल्लाह

आसेब का खतरा जाता रहेगा। आयत मुबारक यह है—

व ल-कद फतन्ना सुलैमानाव अलकैना अला कुर्सिय्यिहि ह-स-दन अस्सराताब०

दफअ आसेब का अमल

वास्ते दफअ आसेब व देवपरी के लिए आयत मुबारक को पढ़कर पानी पर दम करें और उस पानी को आसेब वाले पर छिड़क देने से फौरन असरात आसेब दफअ होंगे और मरीज अच्छा हो जायेगा। आयत यह है—

व इजा कर अनल कुरआन ज अलना बैनकुम व बैयनल्लजीना ला यूसिलूना बिलआखिरति हिजा बन सतूरा व ज अलना अला कुलूबिहिम इकबतन तन यफकहूहू फी इजा लहुम वकरन वइजा जकरता रब्बुका फिल कुरआन व जद्दहु व लव अला अदबारि हिम नुफूरा०

दफअ उम्मुसुबियान के लिए

इस आयत को मुश्क व जाफरान से सूरज निकलने से पहले लिखे और चाँदी के तावीज में बन्द करके बच्चे के गले में डाले। इससे वह बच्चा शैतान के शर देव परी आसेब से बचेगा।

अलिफलाममीम० अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल कय्युम नज्ज-ला अलैका बिलहक्कि

मुसददिकल लिमा बैना यदैहि व अन्जलातवराता वल इन्जीला मिन कब्ली हुदल लिन्नासि व उन्जिल्ल फुरकान०

नाफ की तकलीफ के दफन के लिए

अक्सर लोगों को नाफ टल जाती है। शुरू-शुरू में यह मर्ज कम होता है लेकिन अगर गौर न किया जाये तो फिर यह तकलीफ सारी उम्र के लिए हो जाती है और मरीज को बेहद तकलीफ होती है। खाने-पाने और चलने फिरने में भी परेशानी पैदा हो जाती है। यदि खुदा ना खास्ता यह तकलीफ किसी को हो जाये तो यह अमल करे। तरकीब इस अमल की यह है कि पहले इस अमल की जकात देना चाहिये। जकात का तरीका यह है कि सूर्यग्रहण के वक्त एक सौ २१ बार यह अमल पढ़ें फिर आप इसके आमिल हो जायेंगे, फिर आप जिस आदमी की नाफ हट गयी हो तो २१ बार यह अमल पढ़कर आमिल अपने पेट पर हाथ फेरे जिसकी नाफ हट गयी होगी उसे फौरन आराम होगा।

अपने पेट पर हाथ फेरते वक्त मरीज का नाम लेना चाहिये कि फलाँ की नाफ ठीक हो जाये। मरीज का सामने होना जरूरी नहीं सिर्फ उसके नाम की जरूरत है। अगर एक बार नाफ जगह पर

न आये तो थोड़ी देर के लिए खामोश हो जाओ। इसके बाद दोबारा २१ बार पढ़ो और मरीज का नाम लेकर अपने पेट पर हाथ फेरो। इन्शाअल्लाह उसी वक्त मरीज को आराम हो जायेगा। अमल शरीफ यह है—

ला इला कोट को खाई फलाने का नाफ गोला ठिकाना ला हजरत अली की चौकी मुहम्मद मुस्तुफा की दुहाई।

फलाने की जगह मरीज का नाम लो। इस अमल को हिन्दु-मुस्लिम सब पर कर सकते है और शबे बरात में भी इस अमल की जकात दी जा सकती है।

भूत आदि भगाना

यह मन्त्र कामिल बुजुर्ग का आतिया है बारहा आजमाइश में आया है, बे खता साबित हुआ है। इसकी तरकीब यह है कि बताशे के ऊपर तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर दम करें और जिसे आसेब का खतरा हो उसे खिलाये। इन्शाअल्लाह दुख दूर होगा। मन्त्र यह है—

सय्यद बरहना वाला भेला नंगी पीठ पे लाना थोड़ा जो सय्यद के बाद या हों तपे कोगरु के लाहों जो सय्यद का चापों कान कांगरु को

बुलाया करुं बयान संग की सवारी नाग का चाबुक मियां सय्यद बरहना कहां को जाते हम जाते कांगरु के बड़े वहाँ दंत जड़े सो साठ मारुं दंत करुं घमाम फरियाद पहुंचे, महता के पास महता पूछे कि वहाँ कितने कट आदर कितने सवार जिन्होंने मेरा आगरु घेरा आन कमर कुछ गले जंजीर अस्सी कोस का हिससा अदा करें सवा सेर का तोशा खायें तो खाये उसे दामाद के सर का राह का बाट का किया कराया अपना बगाना उपरी पराये जो कुछ हो उसके लिए निकाल के बाहर करो। तुम्हें अपनी आसा तर कमी की दूर दूहाई।

बिच्छू आदि भगाना

खुदा न खास्ता किसी को बिच्छू काट ले और जहर उसको बेताब करे तो यह अमल करे।

प्याले में पानी पाक व साफ लेकर तीन बार यह अमल पढ़कर दम करें और दम किये हुये पानी को दे। इन्शाअल्लाह दर्द फौरन जाता रहेगा और जहर उतर जायेगा।

जान की हिफाजत के लिए

यह अमल जान की हिफाजत पर जाने के समय

सात बार चारों ओर पढ़कर फूँके। अल्लाह आग व तलवार वगैरा से अपनी हिफाजत में रखेगा और तलवार किसी की उस पर काम न करेगी और जो चाहे तो आतिश घर में काम न करे। सफाल के टुकड़े पर सात बार इनको पढ़कर आग के बीच डाले कुछ असर न करे और जिस जगह जाये अपने ऊपर सात बार दम करके जाये। किसी तरह का कोई नुकसान न होगा वह इबारत यह है—

बन धार बन धार बांधू लोहा अगन सर ताब तजारी किया कराया भेजा या बाँधू दम दम जिन्दा शाह मदार

नोट – इसको जकात यह है कि चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय इसे एक सौ बार पढ़ लिया करे।

साँप के जहर की शान्ति

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम का लाहना निरमा बसे समुद्र तीर पन्ख पसारी बस हरे नरसल करे सर पर जो नकरे व दुहाई अहया मेनरी की बिहक्क अशहदु अन्लाइलाहा इल्लल्लाहु।

यह सात बार पढ़े और नमक पर दम करे और जिसको सांप ने काटा हो वह इस नमक

का खाए। इन्शाअल्लाह सेहत अच्छी होगी।

बिच्छू के वास्ते भी इसे सात बार पढ़कर दम करे, जिस जगह असर हो हाथ उस जगह पर रखकर नीचे को उतार दे और वहाँ से जब कि नीचे उतरे तो उस जगह पर हाथ रखकर नीचे को उतारे इन्शाअल्लाह साँप का जहर उतर जायेगा।

बिच्छू के काटे के लिए

यह अमल बिच्छू के जहर को दूर करने के लिए बड़ा मुजर्रब है इसके लिये चाहिये कि इस अफसू को पढ़ता जाये और हाथ या कपड़ा से उतारता जाये। जब तक दर्द बिल्कुल खत्म न हो जाये यह अमल जारी रखे अफसूं यह है—

खीर की पत्ती मूंझ के बान उतरने बिच्छू तूझे ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की आन।

तिब्बी अमल

(१) पाँच बिच्छू पकड़कर एक शीशी में डालकर ऊपर से एक छटांक तिल का तेल डालकर उसका मुँह काक से बन्द कर दें। रात को यह शीशी चूल्हे के पास रख दिया करे और दिन में धूप में रखे। ४० दिन यह शीशी गर्मी में रहे। यह तेल बवासीर के मस्सों और कंठमाला की गुलाटियों के वास्ते अक्सीर है। रूई की फुरैरी बनाकर

बवासीर के मस्सों और कण्ठ माला की गुलटियों पर लगाये। तेल को सावधानी से रखे यह एक तरह का जहर है। इसे बिल्कुल बन्द करना चाहिये वर्ना खाँसी हो जायेगी। इसे रोकना चाहिये इस वास्ते यह तिब्बी अमल अक्सीर है।

(२) कुछ बच्चों के मुँह से लुआब यानी थूक या राल ज्यादा बहती है।

गावजबाँ तीन माशा, छोटी इलायची व बड़ी इलायची ३-३ माशा, दारचीनी एक माशा, इन सबको कूट-छान कर एक-एक चुटकी सुबह व दोपहर-शाम से तीन बार बच्चे के मुँह में छिड़क दिया करे। मुँह से राल का बहना बन्द हो जायेगा।

आधाशीशी के दर्द के लिए

जिसके सिर में दर्द हो यानी आधाशीशी का दर्द तो कपूर, काली मिर्च, मिसरी एकसार वजन में लेकर और पानी में हल करके एक बूँद नाक में टपका दें मगर जिस तरफ दर्द हो उसके खिलाफ सिम्त के नथने में टपका दे। यदि दर्द न जाये तो दोबारा एक बूँद टपकायें खुदा ने चाहा तो दर्द जाता रहेगा। यदि कही मिसरी न मिले तो खांड मिलायें।

पुराना कब्ज के लिए

जिन लोगों को हमेशा कब्ज की शिकायत रहती हो तो रीवन्द, एलवा, मुसतगी ये तीनों चीजें बराबर वजन और हींग पाव हिस्सा मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। सुबह-शाम खाने के बाद एक गोली खा लिया करें। दोनों समय एक-एक गोली से सालहा-साल का कब्ज जाता रहेगा। यदि कब्ज सख्त हो तो दोनों वक्त खाने के बाद दो-दो गोलियाँ खा लिया करें।

दूध की कमी के लिए

जिस औरत को दूध कम होता हो और बच्चा भूखा रहता हो तो एक तोला सतावर कूट छान कर खा लें और ऊपर से एक पाव सौंफ की अर्क पी लिया करें। खुदा ने चाहा तो दूध ज्यादा तादाद में आने लगेगा। इसे एक हफ्ता रोजाना खायें।

मुँह से खून आने के लिए

अगर किसी के मुँह से खून आता हो तो कीकर यानी बबूल की तीन चार तोला पत्तियाँ खरल करके उसमें तकरीबन एक गिलास पानी डालकर और शक्कर में मीठा करके निहार मुँह खा लिया करें। खुदा ने चाहा तो बिमारी से निजात मिलेगी।

अफीम छोड़ने के लिए

जो आदमी अफीम का आदि हो और उसकी लत से परेशान हो और अफीम की आदत छोड़ना चाहता हो तो वह भलावा, गुड़ और काले चने बराबर-बराबर लेकर इतना कूटे कि वह मोम की तरह हो जाये। अब जिस मिकदार में अफीम खाना हो उतनी ही बड़ी गोलियाँ बनाकर रख लें; अफीम का इस्तेमाल रोज कम करते जायें और यह गोली के साथ खा लें कोई तकलीफ न होगी। इसके इस्तेमाल से अफीम की आदत खत्म हो जायेगी।

हिदायत

इस किताब के जिस अमल से भी जिस किसी को फायदा हो। वह बाकी परेशान लोगों को भी उसके बारे में बतायें तो खुदा की रहमत उस पर भी होगी। परन्तु इस किताब को काले कपड़े (रेशमी) में लपेटकर महफ़ूज़ रखें ताकि हर एक तरकीब और अमल भी बुरी नजर से बचा रहे। अपनी किताब और किसी को न दें और जो इन सबसे फायदा उठाना चाहे वह अपनी किताब अलग से खरीद कर रखे। इस इस्माईल जोगी के तिलिस्म की चर्चा अपने मित्रों या चाहने वालों से जरूर करें जिससे यह किताब हर घर-परिवार में पहुँचे ताकि जरूरतमन्द फायदा उठा सकें। खुदा हाफिज़!!

आखिरी पैगाम

—मौलवी लतीफ़ ख़ान

मैं तो काग़ज़ की एक कश्ती हूँ,
पहली बारिश ही आखिरी है मुझे।

इस मुकद्दस किताब के मुकम्मल होने पर मेरा पयाम इतना ही है कि इस पूरी किताब में अल्लाह के बंदे इस्माईल जोगी का जो नूर बिखरा हुआ है, उसकी रोशनी से आप सबकी जिंदगी गुलजार हो। इस किताब में दिये गये इल्म का लब्बोलुआब यही है कि अल्लाह को याद करते हुये या उसकी दुहाई पढ़ते हुए इंसानी जिंदगी को आसान किया जा सके।

आज के दौर के इंसान पर गफलत और काहिली इस कदर हावी है कि उसकी हालत कुछ ऐसी है—

बे इल्म भी हम लोग हैं, गफलत भी है तारी,
अफसोस की अंधे भी हैं और सो भी रहे हैं।

मुझे अपनी जिंदगी में खुदा के आब-ओ-ताब से ऐसे-ऐसे तजुर्बे हुये हैं, जिन्हें यहाँ लिखना मुनासिब नहीं है। आप भी उस परवरदिगार की रहमत का तजुर्बा इस किताब को पढ़ते हुए जरूर करेंगे, ऐसा मेरा मानना है। आखिर में उस एक करीम की शान में मशहूर शायर के दो शेर पेश करते हुये आप सबसे इजाजत लेता हूँ, दुआओं में याद रखना।

कभी ऐ हकीकत-ए-मुन्तज़र नज़र आ लिबास-ए-मजाज़ में,
के हजारों सजदे तड़प रहे हैं मेरी ज़बीं-ए-नियाज़ में।

ऐ खुदा, तू वो हकीक़त है, जिसके दीदार का हर किसी को बेताबी से इंतिज़ार है। (मूसा की तरह मैं भी तुझे तेरे असली रंग रूप में नहीं देख सकता, इसलिए) तू मुझे किसी और माद्दी या सांसारिक रूप में दिखाई दे, जिससे मैं तुझे पहचान सकूं क्योंकि (इस वक़्त) हजारों सजदे मेरी नियाज़मंद (तेरे आगे झुकी हुई) पेशानी में (अदा होने के लिए) तड़प रहे हैं।

यहाँ शायर परम सत्य, परब्रह्म, ईश्वर को ही संबोधित करते हुये कह रहा है कि हे प्रतीक्षित महान सत्य, प्रभु आप स्वयं को किसी भौतिक स्वरूप में मेरे समक्ष प्रकट करें जिससे मैं स्वयं के भीतर उमड़ रही करुणा रूपी विनम्र प्रार्थना को आपके सम्मुख अपने कंपित मुख से व्यक्त कर सकूं।

जो मैं सर-ब-सज्दा हुआ कभी, तो जमीं से आने लगी सदा,

तेरा दिल तो है सनम आशना, तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में।

जब कभी मैंने उस अल्लाह के कदमों में सर झुकाया, तो जमीन से आवाज आई कि ऐ इंसान, जब तक तेरे दिल में हवस और दुनियावी ख़्वाहिशात के ढेरों बुत वाबस्ता हैं, तब तक तुझे इस नमाज़ से कुछ हासिल नहीं होगा।

यहाँ शायर आधुनिक मनुष्य की विवशता को व्यक्त करते हुये कह रहा है कि जैसे ही मैंने अपना शीश उस परम सत्ता के स्मरण में नतमस्तक किया वैसे ही धरती से एक पुकार उठी कि हे मानव! तेरा हृदय भौतिकता और विषय-वासना से ग्रस्त है, ऐसी अवस्था में तेरी प्रार्थना का कोई प्रतिफल नहीं मिल सकता।

अंजुमन-ए-पुर-असरार
मालदा (प०बं०)

اسماعیل جوگی کا اسرار،
نقش اور اسلامی عمل

इस्लामी [illegible] त्र

असली मीरास

इस्लामिक या मुस्लिम तन्त्र में रुहानी अमलियात का इल्म एक ऐसा इल्म है, जिससे हम अपने बहुत सारे मामलात, परेशानियों और मुश्किलात के हल आसानी से कर सकते हैं। पुराने नामवर योगी इस्माईल जोगी का इस्लामी शाबर तन्त्र एक शक्तिशाली तन्त्र का खजाना है। इस्माईल जोगी के सम्बन्ध में मशहूर है कि ये अगर मिट्टी के खिलौने को भी हाथ लगा दें तो वह खुद ब खुद चलने लग जाता था।

इस्माईल जोगी की अता से ही यह छुपा हुआ खजाना कई वर्षों की मेहनत से आप सबके सामने नुमायाँ हुआ है। इसमें पुराने सभी इस्लामी शाबर प्रयोग, इस्माईल जोगी के नक्श, इस्लामिक अमल व टोटके दिये गये हैं।

इस्माईल जोगी के नाम का तिलिस्म ऐसा है कि उनके नाम की दुहाई देते ही शाबर मन्त्र स्वयं जागृत हो उठते हैं। इस पुस्तक सैकड़ों मन्त्र व प्रयोग कई तान्त्रिकों व आमिल द्वारा आजमाये हुये हैं, अत: इनका इस्तेमाल पूरी आवाम की बेहतरी के लिये किया जाना चाहिये।

अंजुमन-ए-पुर-असरार
इस्लामिक हिंदवी इल्म-ए-नुजूम इदारा
मालदा (पं.बं.)